सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 161, नई दिल्ली, मंगलवार 19 अगस्त 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सफलता के लिए पांच आवश्यक उद्यमशीलता कौशल : एकाग्रता, भेदभाव, संगठन, नवाचार और संचार .

03 घनचक्कर बना भाजपा का प्रमुख कार्यकर्ता किसकी चौखट पर जाए
06 प्रकृति से खिलवाड़ के खतरनाक नतीजे
08 डिप्टी कमिश्नर द्वारा खानकोट इलाके का दौरा

निम्नलिखित चार पहिया वाहन सी/डब्ल्यू ईटानगर पुलिस स्टेशन केस संख्या 102/2025 यू/एस 1|1(2\(बी)(3)(4)(5)317(4) 336(2)/ 340(2)/ 61(2) बीएनएस' 2023 में जांच के दौरान बरामद किए गए हैं। कृपया सत्यापित करें कि आपके पुलिस स्टेशन में पंजीकृत किसी भी चोरी/गुम वाहन की रिपोर्ट नीचे सूचीबद्ध बरामद वाहनों से मेल खाती है।

WT MSG

TO :: ALL SHO POLICE STATIONS INDIA
INFO :: SP, ITANAGAR ICR (ARUNACHAL PRADESH)
FM :: OC PS ITANAGAR, DISTT.- PAPUMPARE CAPITAL, ARUNACHAL PRADESH

NO.ITA/PS/R-C/27/2020 DTD.14/08/2025 [-] THE FOLLG FOUR-WHEELER VEHICLES HAVE BEEN RECOVERED DURING THE INVESTIGATION IN C/W ITANAGAR POLICE STATION CASE NO. 102/2025 U/S 111(2)(b)(3)(4)(5)/ 317(4)/336(2)/340(2)/61(2) BNS' 2023 [-] KINDLY VERIFY ANY THEFT/ MISSING VEHICLE REPORT REGISTERED IN YR PS MATCHES WITH THE BELOW LISTED RECOVERED VEHICLES [-]

S. NO.	VEHICLE MAKE & MODEL	ORIGINAL RC	ORIGINAL CHASSIS NO.	ORIGINAL ENGINE NO.
1.	WHITE BREZZA	DL-9CAR-5226	MA3NYFB1SKB515107	D13A-5794992
2.	CRETA BLACK	DL-9CBA- 7237	MALPC812LNM432472	G4FLNV341849
3.	FORTUNER WHITE	DL-8CAX-8200	MBJAA3GS300539778~0119	1GDA279301
4.	BLACK SELTOS	DL-7CW-6018	MZBEU812LRN625250	G4FLRV740244
5.	SELTOS WHITE	DL-8CBG-9737	MZBET815VPN584169	G4LHPM676129
6.	TOYOTA FORTUNER	DL-3CCM-6346	MBJAA3GS000526941~0817	1GDA122052
7.	FORTUNER BLACK	UP15CW0088	MBJAA3GS500539426~0119	1GDA271158
8.	WHITE CRETA	DL4CBD1506	MALPC812TRM730810	G4FLPV689970
9.	CRETA WHITE	DL-8CBC-8080	MALPC812TMM194157	G4FLMV181311
10.	BLACK CRETA	HR13T4354	MALPC812TNM390326	G4FLNV337766
11.	WHITE CRETA REAR GLASS BROKEN	DL8CBJ-3395	MALPB812LRM094879	G4FLRV001209
12.	HYUNDAI CRETA WHITE	DL4CBA6904	MALPC812LMM214868	G4FLMB472618
13.	FORD ENDEAVOUR	UK01D0111	MAJAXXMRWAGG80238	GG80238
14.	BLACK CRETA	DL-8CBA-4387	MALPC812TLM059542	G4FLLV066652
15.	TATA SAFARI (GOLDEN)	DL-9CBA-3360	MAT631181NWK76135	46343841 4214835
16.	WHITE CRETA	DL5CS5748	MALPC813LMM132478	D4FAMM185231
17.	TATA HARRIER	CH01CF0622	MAT631563MPG74819	46343885-4123144
18.	TATA SAFARI WHITE	DL14CG5107	MAT631172NWG64080	46343841-4197549
19.	BLACK CRETA	HR26ER1443	MZBEU812TMN257048	G4FLMV186328
20.	KIA SONET WHITE	DL1CAF7673	MZBFF813LNN181909	D4FANM517006
21.	WHITE CRETA	HR72F1111	MALPC813LMM176762	D4FAMM271906
22.	KIA SONET BLACK	DL-14CF-5314	MZBFF811LMN124233	G3LCMV017738
23.	BLACK CRETA	BR01FY0320	MALPC811VNM411872	G4LDNB020353
24.	THAR GREY	DL12CT9695	MA1UJ4YF7M2F49383	YFM4F41496
25.	CRETA (WHITE & BLACK DUAL TONE)	DL12CY1728	MALPC8122RM775046	G4FLRV771871
26.	BLACK CRETA	HR30AB6971	MALPB812LRM745583	G4FLRV728952
27.	WHITE CRETA	DL7CU6244	MALPC812TNM412212	G4FLNV419906
28.	FORTUNER BLACK PPF	DL-10CM-5593	MALAA3GS600541878~0419	1GDA315481
29.	VENUE BLUE	HR98H6748	MALFE81AVNM414585	G3LCNM710628
30.	CRETA BLACK	DL5CV0515	MALPB812LPM501361	G4FLPV542092
31.	CRETA WHITE	UP14FE0207	MALPC812TNM354041	G4FLNV339192
32.	CRETA BLACK	DL10CV0397	MALPC812TPM466976	G4FLPV477510
33.	CRETA WHITE	DL3CCV4987	MALPC812TNM293546	G4FLMV257747
34.	BLACK CRETA	DL1CAH0520	MALPB812LPM559943	G4FLPV617851
35.	CRETA WHITE	DL10CQ7079	MALPC812TMM247997	G4FLMV246501
36.	WHITE FORTUNER	DL8CAZ3063	MBJGA3GS100387705~1119	1GDA374493
37.	BLACK SELTOS	PB03BE3962	MZBEU812LLN143556	G4FLLV058595
38.	FORTUNER WHITE	HR-85B-0011	MBJAA3GS300534760~0618	1GDA204219
39.	AUDI BLACK	UK07BQ0050	WAUZAG4M1GY000270	CVM005151
40.	WHITE BREZZA	DL-11CC-8040	MA3NYFJ1SMM869787	K15BN1253640
41.	CRETA WHITE	DL-8CBC-4100	MALPC811VMM194142	G4LDMG012041
42.	BLACK CRETA	RJ06CF8582	MALPC813LRM725323	D4FARM075656
43.	WHITE CRETA	DL8CBJ1647	MALPC812TRM784824	G4FLRV767439
44.	WHITE FORTUNER	DL10CK-8034	MBJAA3GS200533146~0418	1GDA185316
45.	WHITE CRETA	UP32PH1664	MALPB812TRM724833	G4FLPV680263
46.	FORTUNER WHITE	HR26DM2500	MBJAA3GS000531346~0118	1GDA164221
47.	SELTOS KIA	HR98C7845	MZBEU812TMN316442	G4FLMV261306
48.	KIA SELTOS	DL7CW9396	MZBET815VPN583482	G4LHPM714833
49.	MARUTI BALENO	AS02AL5074	MBHHWB13SPA369986	K12NP4199811
50.	SCORPIO BLACK	UP14-DR-2000	MA1TA2WR2JE48983	WRJ44E14796
51.	FORTUNER WHITE	DL8CBB2443	MAJAA3GS700549875-0121	1GDA472197
52.	FORTUNER WHITE	DL8CAQ2697	MBJBA3FS100803733-0217	1GDA075478
53.	BLACK FORTUNER	DL3CCS2070	MBJAA3GS800545849-0122	1GDA393522
54.	WHITE FORTUNER	DL10CR1868	MBJAA3GS100563545	1GDA600836
55.	BLACK SELTOS	DL14CH8316	MZBEU812LPN580809	G4FLPV667301
56.	BLACK BLUISH CRETA	RJ18CE-5767	MALPA812LPM488546	G4FLPV521439
57.	WHITE CRETA	DL7CS1756	MALPC812LMM157683	G4FLMB422004
58.	WHITE FORTUNER	DL3CCQ-1881	MBJBA3FS600816882-1118	1GDA253819
59.	WHITE FORTUNER	HR26DD0016	MBJGA3GS900371753-0317	1GDA078770
60.	WHITE FORTUNER	CH01BX7920	MBJAA3GS000542511****	1GDA326666
61.	SELTOS MATT BLACK	DL9CBE9111	MZBET815VPN585003	G4LHPM760949
62.	BREZZA WHITE	DL1CAC6655	MA3NYFJ1SLF650598	K15BN1120525
63.	FORTUNER WHITE	UP12AY2222	MBJGA3GS000384410~0219	1GDA293741
64.	BREZZA GREY SILVER	DL11CC8040	MA3NYFJ1SMM869787	K15BN1253640
65.	WHITE CRETA	HR98J6041	MALPC812TPM468440	G4FLPV490967
66.	CRETA WHITE	DL-10CQ-2413	MALPC813LMM208504	D4FAMM326512
67.	CRETA BLACK	HR-51CE-5599	MALPC813MMM184857	D4FAMM285112
68.	BLACK THAR	RJ45CY1465	MA1UJ2TZ2P2J19523	TZPZJ24416

[-] REQUEST TO CHECK THE RECORDS OF YOUR RESPECTIVE PSs AND CONFIRM BY RETURN SIGNAL OR EMAIL I.E. SPCAP@ARUNPOL.NIC.IN WITH INTIMATION TO THE I.O. OF THE CASE DYSP KENGO DIRCHI, APPS, SDPO ITANAGAR, MOB. NO.8974180486 [-]
FOR INFO PLEASE [-]

OC PS ITA

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

पिंकी कुंडू सह संपादक परिवहन विशेष

स्पष्टीकरण

नागरिक और राजनीतिक अधिकार हर इंसान की गरिमा, आज़ादी और बराबरी सुनिश्चित करने के लिए दिए गए अधिकार हैं। इनमें सबसे महत्वपूर्ण अधिकार है – "किसी भी व्यक्ति को क्रूर, अमानवीय या अपमानजनक व्यवहार या दंड के अधीन न किया जाए।" यह अधिकार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मानवाधिकार अधिनियम का अनुच्छेद 5 - स्वतंत्रता और सुरक्षा का अधिकार - हमें हमारी स्वतंत्रता को मनमाने ढंग से छीने जाने से बचाता है । यह अधिकार विशेष रूप से उन लोगों के लिए महत्वपूर्ण है जो आव्रजन हिरासत में हैं या आपराधिक न्याय प्रणाली में हैं या मानसिक स्वास्थ्य कानूनों के तहत हिरासत में हैं।

नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय वाचा का अनुच्छेद 7, किसी को भी यातना या क्रूर, अमानवीय या अपमानजनक व्यवहार या दंड नहीं दिया जाएगा । विशेषकर, किसी को भी उसकी स्वतंत्र सहमति के बिना चिकित्सा या वैज्ञानिक प्रयोग नहीं करने दिए जाएँगे।

इसका अर्थ है: किसी को भी यातना या अमानवीय सज़ा नहीं दी जा सकती। जेल में बंद व्यक्ति भी इंसान है, उसे अपमानजनक व्यवहार से नहीं गुज़रना चाहिए। पुलिस हिरासत, सैन्य कार्रवाई या कानून लागू करने में भी मानव गरिमा का सम्मान होना चाहिए। **यह अधिकार हर परिस्थिति में लागू होता है – चाहे युद्ध हो, आतंकवाद हो या कोई अन्य स्थिति।**

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) का मानना है

1. "मानव गरिमा सबसे बड़ा अधिकार है।"
2. "क्रूरता नहीं, करुणा चाहिए।"
3. "अमानवीय दंड मानवाधिकार का अपमान है।

अगर आप भी चाहते हैं की भारत देश में सबको उनके अधिकार मिले तो **टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)** के सदस्य/ कार्यकर्ता बने।

पूरे देश में बड़ी धूमधाम से मनाएंगे 6 सितंबर ट्रांसपोर्टर दिवस

असंगठित सेक्टर को इंडस्ट्रीज, ट्रेड, कॉरपोरेशन या आयोग का दर्जा दे सरकार।

नाजायज टोल, आरटीओ, ई-चालान, पुलिस की तानाशाही, बॉर्डर की लूट, ग्रीन टैक्स, खत्म हो।

अखिल भारतीय ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन की गूगल मीटिंग राष्ट्रीय अध्यक्ष आर के शर्मा की अध्यक्षता में संपन्न हुई जिसमें सभी ट्रांसपोर्टरों एवं संगठनों द्वारा मिलकर 6 सितंबर ट्रांसपोर्ट दिवस हर वर्ष की तरह इस वर्ष और भी ज्यादा ताकत से मना कर अपनी जागृति एवं एकता का परिचय देते हुए हमारे असंगठित सैक्टर की बहुत पुरानी ट्रांसपोर्ट एवं ड्राइवर आयोग की मांग सरकार से पुरजोर तरीके से की जाएगी। जूम मीटिंग के माध्यम से जुड़े पूरे देश के पदाधिकारीयों को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष आर के शर्मा ने बताया कि किसानों और सैनिकों की तरह ट्रांसपोर्टर और ड्राइवर भी पूरी ईमानदारी से राष्ट्र को आर्थिक रूप से मजबूत, सेवा करने में सबसे बड़ा योगदान दे रहे हैं इसका उदाहरण करोना काल में ट्रांसपोर्टरों और ड्राइवरों द्वारा अपनी जान पर खेल कर दवाइयां, खाने का सामान, जरूरी वस्तुएं एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचा कर किया गया सराहनीय कार्य है इसके बावजूद सरकार आरटीओ, टोल टैक्स, ऑनलाइन चालान, ग्रीन टैक्स, बॉर्डर पर जबरन वसूली, पार्किंग चार्ज, पुलिस की तानाशाही जैसे बहुत से तरीकों से ट्रांसपोर्टरों और ड्राइवरों का उत्पीड़न लगातार करती रहती है। दम तोड़ते ट्रांसपोर्टर और गाड़ी मालिक, रोड़ों पर पिटते ड्राइवरों से करोड़ों लोगों के बेरोजगार होने की संभावना है ट्रांसपोर्टरों की कमाई से चुनाव में फ्री की रेवड़िया बांटने वाली सरकार को बदले में ट्रांसपोर्टरों को इंडस्ट्रीज, ट्रेड, कॉरपोरेशन या आयोग जैसा दर्जा देकर उनके प्रति भी अपनी सहानुभूति दिखाते हुए कुछ जिम्मेवारी लेकर सम्मान देना चाहिए। इस अवसर पर मुख्य संरक्षक के के सेठी, सुरेंद्र शर्मा, एस पी गुप्ता, सुनील सिंगला, प्रदेश अध्यक्ष सत्यपाल भाटी, राजेश शर्मा, अनिल भारद्वाज, सरदार रविंद्र सिंह, कमांडेंट हृदेश कुमार, कंवर यादव, राधेश्याम कौशिक, सतीश जांगरा, सुरेंद्र शर्मा, मैनुद्दीन भाई, अशोक कौशिक, सुरेश यादव उपस्थित थे।

आर के शर्मा

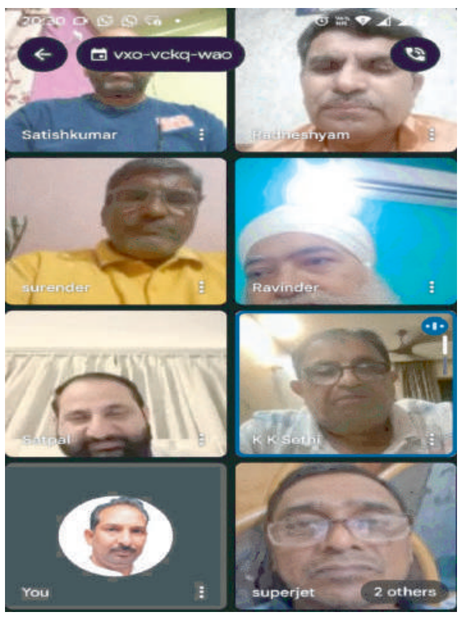

ड्राइवर उत्पीड़न - एक सामाजिक और आर्थिक चुनौती

भारत में सड़क परिवहन अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, और इसमें व्यावसायिक ड्राइवरों की भूमिका महत्वपूर्ण है। ट्रक,ट्रेलर व भारी व्यवसायिक वाहन चालक देश के माल और यात्री परिवहन को सुचारू रूप से चलाने में योगदान देते हैं। हालांकि, इन ड्राइवरों को विभिन्न स्तरों पर उत्पीड़न का सामना करना पड़ रहा है, जो न केवल उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है, बल्कि सड़क सुरक्षा और परिवहन उद्योग की दक्षता पर भी नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है।

ड्राइवर उत्पीड़न के प्रमुख रूप और तथ्य के रूप में पुलिस और प्रशासनिक उत्पीड़न प्रमुख है –

कई ड्राइवरों ने बताया है कि चेकपॉइंट्स पर पुलिस और परिवहन अधिकारियों द्वारा अनुचित तरीके से चालान काटे जाते हैं या रिश्वत मांगी जाती है व नहीं देने पर तिरस्कार व उत्पीड़न प्रदान की जाती है । उदाहरण के लिए, 24 जुलाई 2025 को घटित एक घटना के तहत एक ड्राइवर और ट्रैफिक पुलिस के बीच तीखी बहस का उल्लेख किया गया, जहां ड्राइवर ने दावा किया कि उसकी मेहनत की कमाई का एक बड़ा हिस्सा अनुचित चालानों में चला गया1

आजमगढ़ में व्यावसायिक ड्राइवर एकता संगठन ने जंजीर पहनकर जिलाधिकारी कार्यालय के सामने धरना प्रदर्शन किया, जिसमें उन्होंने अनुचित चालानों और प्रशासनिक शोषण के खिलाफ आवाज उठाई वहीं हरियाणा के सतीश धनखड़ ने जंजीर पहनकर आजाद देश के गुलाम की तरह जंजीरों मैं जकड़े प्रदर्शन किया1

आर्थिक शोषण के तहत ट्रक और ट्रेलर ड्राइवरों को अक्सर कम वेतन, लंबे कार्य समय और अपर्याप्त आराम की सुविधाओं का सामना लगातार करना पड़ता है। हरियाणा के नरेंद्र

बुवाना व उनकी टीम ने ट्रक ड्राइवरों के साथ बातचीत में उनके अधिकारों और आर्थिक शोषण के मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाने की रणनीति पर चर्चा की1 दिल्ली में बस ड्राइवरों और कंडक्टरों ने 6 मई 2025 को सरकार की नीतियों के खिलाफ आवाज उठाई, जिसमें उन्होंने अनुचित कार्य परिस्थितियों और आर्थिक दबाव का जिक्र भी किया। सामाजिक भेदभाव और असुरक्षा के अन्तर्गत ड्राइवरों, विशेष रूप से ट्रक और ट्रेलर चालकों को, सामाजिक रूप से सदा हाशिए पर रखा जाता है। बिहार मैं 2 लाख ड्राइवरों के सामने 2025 के चुनावों से पहले अपनी मांगों को लेकर अनिश्चितता अभी भी बनी हुई है, क्योंकि उनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति को लेकर सरकार की ओर से ठोस कदम नहीं उठाए गए हैं व सामाजिक सुरक्षा हेतु पर्याप्त कोशिस नहीं की गयी है1

उस पर से अपंजीकृत हजारों व्हाट्सप्प व सोशियल मिडिया पर संस्थाओं की भरमार ने कहीं न कहीं करोड़ों चालकों के आस्था व विश्वास को ठेस पहुंचाई है इसलिए राज्य सरकार व केंद्रीय सरकार को इन संस्थाओं का जिला, राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर उच्च स्तरीय जाँच व उचित कार्रवाई की व्यवस्था की जानी चाहिए1

सुभास यादव- बक्सर बिहार ₹ओड़सिा बिहार-उत्तर प्रदेश रूट के अनुसार--मेरे बारह वर्ष के चालक काल मैं कोई संस्था से न तो मुझे कोई मदद मिला न ही किसी ऐसी चालक संस्था के विषय मैं मुझे जानकारी है₹

सड़क सुरक्षा नियमों का प्रभाव:

2025 में लागू नए ट्रैफिक नियमों, जैसे नशे में गाड़ी चलाने पर 10,000 रुपये का जुर्माना या 6 महीने की जेल, नो पार्किंग 20000 ने ड्राइवरों पर आर्थिक दबाव बढ़ाया है। हालांकि ये नियम सड़क सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं, लेकिन कई ड्राइवरों का मानना है कि इनका अनुचित उपयोग उनके उत्पीड़न का कारण बन रहा है जिसमे चालान कम व वसुली ज्यादा होती है1

प्रभाव और आंकड़े के अनुसार सड़क दुर्घटनाएं और ड्राइवरों पर दबाव के रूप 2022 में भारत में 4,61,312 सड़क दुर्घटनाएं दर्ज की गईं, जिनमें से कई का कारण लापरवाही और ड्राइविंग के दौरान मानसिक तनाव प्रमुख रूप से पाया गया1 आर्थिक बोझ के रूप नए ट्रैफिक नियमों के तहत जुर्माने में 10 गुना तक की वृद्धि हुई है, जिससे ड्राइवरों की आय पर भारी असर पड़ रहा है।

सामाजिक प्रभाव के रूप मैं ड्राइवरों को सामाजिक रूप से कमजोर व असंगठित वर्ग के रूप में देखा जाता है, जिसके कारण उनके अधिकारों की लगातार अनदेखी होती है।

प्रस्तावित समाधान के रूप मैं पारदर्शी चालान प्रणाली, डिजिटल चालान प्रणाली को और अधिक पारदर्शी और निष्पक्ष बनाया जाए, ताकि अनुचित चालानों को रोका जा सके। ड्राइवरों के लिए प्रशिक्षण और जागरूकता- ड्राइवरों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में जागरूक करने के लिए नियमित कार्यशालाएं आयोजित की जाएं।

आर्थिक और सामाजिक सहायता के रूप मैं ड्राइवरों के लिए सरकारी बीमा योजनाएं, न्यूनतम वेतन नीति, और सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम निश्चित रूप से शुरू किए जाएं।

सड़क सुरक्षा और उत्पीड़न के बीच संतुलन मैं सख्त ट्रैफिक नियमों के साथ-साथ ड्राइवरों के उत्पीड़न को रोकने के लिए निगरानी तंत्र स्थापित किया जाए।

कानूनी सहायता मैं ड्राइवरों को अनुचित उत्पीड़न के खिलाफ कानूनी सहायता प्रदान करने के लिए मुफ्त कानूनी सलाह केंद्र प्रत्येक परिवहन कार्यालय स्तर पर तुरंत स्थापित किए जाएं।

आह्वान:

उफ्तत्सा -राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा ₹ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी₹ सरकार, परिवहन संगठनों, और नागरिक समाज से आग्रह करते हैं कि वे ड्राइवर उत्पीड़न के इस गंभीर मुद्दे पर ध्यान दें और इसे समाप्त करने के लिए ठोस कदम उठाएं। ड्राइवर न केवल परिवहन उद्योग का आधार हैं, बल्कि हमारे समाज का एक महत्वपूर्ण व अकाट्य हिस्सा भी हैं। उनकी गरिमा, मान सम्मान और स्वाभिमान सह उनके संवेधानिक व मानवीय अधिकारों की रक्षा करना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है।

उफ्तत्सा "राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा" (ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी)

यहां सब भटक रहें हैं क्योंकि हम ब्रह्मचक्र को समझते नहीं हैं। यह चक्र इतना विशाल है कि इसमें सारे जीव रह सकते हैं और वहीं अपनी आजीविका भी प्राप्त कर सकते हैं।

इस संसृति-चक्र में, इस जन्म-मरण के चक्र में जीव भटका करते हैं। हमें किसलिये इस चक्र में घूमना पड़ता है? ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हम अपने को परमात्मा से अलग/स्वतन्त्र/पृथक मानते हैं। इसी कारण हमें अनन्त बार जन्म लेना पड़ता है तथा मरना पड़ता है। इस चक्र से छूटने का रास्ता बताते हुए हमारे मनीषी कहते हैं कि साधक अपने को जब परमात्मा से अभिन्न जानता है तो जन्म-मरण के बन्धन से छूट जाता है, तभी शाश्वत शान्ति प्राप्त होती है। ध्यान रहे कि जब तक जीव अपने को परमात्मा से पृथक मानता है, स्वतन्त्र समझता है, तब तक उसका जन्म-मरण चलता रहता है, परंतु जब सदगुरु/मनीषी की कृपा/उपवास से परमात्मा के साथ अपना अभेद समझ/जान लेता है, तब उसकी जन्म-मरण के भटकाव से निवृत्ति हो जाती है।

नकली पौधों की मुस्कान असली क्यों लगती है?

[नकली पौधों की हरियाली, रिश्तों का सूखा रेगिस्तान]

नकली पौधों की चमक आंखों को भले भा जाए, पर दिल को कभी नहीं छूती। वे हर जगह बिखरे पड़े हैं—घरों की सजी मेजों पर, दफ्तरों की ठंडी मेजों पर, मॉल्स की चकाचौंध में दीवारों को सजाते। उनकी पत्तियां हमेशा हरी, फूल हमेशा खिले, और रंग हमेशा बेदाग। न मुरझाने का डर, न देखभाल की ज़रूरत। पहली नज़र में वे जादू सा बिखेरते हैं, लेकिन पास जाकर छूने पर सच्चाई खुलती है—वे बेजान हैं, बिना खुशबू, बिना सांस, बिना आत्मा। ठीक यही हाल आज हमारे रिश्तों, ख़ुशियों और मुस्कानों का है। बाहर से सब कुछ चमकता, हरा-भरा, पर भीतर से सूखा, खोखला, और ठंडा।

आज का इंसान असली पौधों की तरह जीने से कतराता है। असली पौधा मेहनत मांगता है—धूप की तपिश, बारिश की ठंडक, मिट्टी की गहराई। वह कभी पत्तियां गिराता है, कभी फूल मुरझाता है, कभी कीड़े खा जाते हैं। पर वही पौधा हवा को साफ करता है, ऑक्सीजन देता है, और अपनी खुशबू से मन को सुकून। उसी तरह, असली रिश्ते मेहनत मांगते हैं। उनमें आंसुओं की नमी, गुस्से की गर्मी, और धैर्य की मिट्टी चाहिए। वे कभी चोट देते हैं, कभी दर्द, पर वही रिश्ते आत्मा को जोड़ते हैं, सच्चा सुख देते हैं। नकली रिश्ते, जैसे नकली पौधे, बस सजावट हैं— दिखने में खूबसूरत, पर भीतर से बंजर और बेरंग।

सोशल मीडिया नकलीपन का विशाल मेला बन चुका है। वहां हर चेहरा मुस्कुराता है, हर ज़िंदगी किसी चमकते सपने-सी लगती है। फ़िल्टरों से सजी तस्वीरें, छुट्टियों की झूठी कहानियां, और हर पल को ₹परफेक्ट₹ दिखाने की दौड़। मगर स्क्रीन के पीछे की हकीकत कड़वी है—अकेलापन, तनाव, और भीतर का सन्नाटा। लोग अपनी असल ज़िंदगी छिपाकर एक कृत्रिम दुनिया रचते हैं, जहां सब कुछ इंस्टा-परफेक्ट होना चाहिए। यह नकली पौधे जैसा है—आंखों को भाता है, पर फेफड़ों को सांस नहीं देता। हमारी खुशियां अब लाइक्स की गिनती में कैद हो गई हैं। दोस्ती अब यह नहीं कि कौन आपके दुख में साथ खड़ा है, बल्कि यह कि कौन आपकी पोस्ट पर सबसे ज़्यादा तारीफ लिखता है।

यह दिखावा रिश्तों तक ही नहीं, परिवार, त्यौहार, और अपनापन भी इसकी चपेट में हैं। पहले त्यौहार हंसी, गर्मजोशी, और साझा कहानियों से भरे होते थे। अब वे फोटोशूट के मंच बन गए। लोग इस चिंता में डूबे हैं कि उनकी तस्वीर कितने लाइक्स बटोरेगी, न कि उस पल में कितना अपनापन बांटा गया। रिश्तों की गहराई अब स्टेटस अपडेट, ग्रुप चैट, और इमोजी में सिमट गई। हम असली भावनाओं से कतराने लगे हैं। कोई दुख साझा करे, तो हम असहज हो जाते हैं। हमें बस वही चाहिए जो चमकदार हो, आसान हो, बिना मेहनत वाला—जैसे नकली पौधे, जो न पानी मांगते, न धूप, न देखभाल।

इस नकलीपन का अंजाम क्या? एक खोखलापन, जो चुपके-चुपके हमारी आत्मा को निगल रहा है। हम दुख, कमजोरी, या असफलता को गले लगाने से डरते हैं। हर पल चमकदार चाहिए, हर रिश्ता बेदाग। मगर जीवन का सच दर्द में छिपा है। जैसे असली पौधा बिना मिट्टी, धूप, और पानी के नहीं पनपता, वैसे ही रिश्ते बिना आंसुओं, धैर्य, और सच्चाई के नहीं फलते। असली रिश्ते चोट देते हैं, आंसू लाते हैं, पर वही हमें सिखाते हैं, जोड़ते हैं, और जीवंत बनाते हैं। नकली रिश्ते भले आसान हों, पर वे सिर्फ़ खालीपन बिखेरते हैं।

नकली पौधों की मुस्कान आंखों का धोखा है। उनकी चमक बिना गंध, बिना जीवन। वे घर सजा सकते हैं, पर हवा को शुद्ध नहीं कर सकते। ठीक वैसे ही, नकली रिश्ते और झूठी खुशियां पलभर की चमक देती हैं, पर आत्मा को तृप्त नहीं करतीं। असली रिश्तों में खामियां होती हैं, जैसे पौधे की पीली पत्तियां। पर वही खामियां उन्हें अनमोल बनाती हैं। असली मुस्कान वही, जो दिल से फूटे, जिसमें सच्चाई की महक हो।

अब वक्त है इस नकलीपन के जाल को तोड़ने का। हमें असली पौधों की तरह जीना होगा—धूप में तपकर, बारिश में भीगकर, मिट्टी में जड़ें जमाकर। रिश्तों में सच्चाई लानी होगी, संवेदना बिखेरनी होगी। मुस्कान तभी सजीव है, जब वह छल से नहीं, दिल की गहराई से उपजे। क्योंकि आखिर में वही पौधा जीवन देता है, जो धूप की तपिश, बारिश की नमी, और मिट्टी की महक से गुज़रा हो। बाकी सब सजावट है—चमकदार, टिकाऊ, पर हमेशा बेजान। और इंसान का जीवन सजावट से नहीं, सच्चाई से सांस लेता है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

राहुल गांधी की यात्रा, वोट चोरी और बिहार में एसआईआर

शम्स आग़ाज़

भारतीय लोकतंत्र की सबसे बड़ी पहचान यह है कि यहां हर नागरिक को समान रूप से वोट देने का अधिकार प्राप्त है। ''एक व्यक्ति, एक वोट'' का सिद्धांत इस व्यवस्था की नींव है, और यही सिद्धांत देश को ''विविधता में एकता'' और जनशक्ति का वास्तविक स्वरूप बनाता है। लेकिन जब इसी मूलभूत अधिकार पर सवाल उठने लगें, और जब लोगों को यह महसूस होने लगे कि उनका वोट सुरक्षित नहीं है या किसी छिपी प्रक्रिया के जरिए उसे निष्प्रभावी बनाया जा रहा है, तो यह न सिर्फ एक व्यक्ति की बेबसी है, बल्कि लोकतांत्रिक ढांचे के डगमगाने का संकेत भी है।

इन्हीं चिंताओं के मद्देनज़र सांसद और विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने अपनी हालिया यात्रा की शुरुआत बिहार से की है, जिसे ''वोट अधिकार यात्रा'' नाम दिया गया है। यह यात्रा केवल एक राजनीतिक दौरा नहीं है, बल्कि जनता के बीच जाकर इस बुनियादी सवाल को फिर से जीवित करने की कोशिश है कि क्या हमारा वोट वास्तव में उतना ही महत्वपूर्ण है जितना हमारे संविधान ने उसे माना है? यह यात्रा लोकतांत्रिक चेतना को जगाने की एक गंभीर पहल है जो आम नागरिकों को यह याद दिलाती है कि उनका वोट सिर्फ एक पर्ची नहीं, बल्कि एक ताकत है। यदि वोटिंग प्रक्रिया की पारदर्शिता और निष्पक्षता पर सवाल उठने लगेंगे, तो पूरे चुनावी तंत्र पर जनता का भरोसा डगमगा जाएगा। इसलिए ज़रूरी है कि हर संस्था, हर नागरिक और हर राजनीतिक दल इस अधिकार की रक्षा के लिए सजग और सतर्क रहे। एक जीवंत लोकतंत्र की नींव जनता के विश्वास पर टिकी होती है, और जब यह विश्वास कमजोर पड़ता है, तो पूरा तंत्र खतरे में पड़ जाता है।

यह यात्रा बिहार की धरती पर ऐसे समय में शुरू हुई है जब राज्य में मतदाता सूची को लेकर एक बड़ा विवाद सामने आया है। बिहार में चुनाव आयोग ने ''स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन'' यानी एसआईआर के नाम पर एक ऐसी प्रक्रिया शुरू की जिसका उद्देश्य यह बताया गया कि मतदाता सूची की सफाई और उसे दुरुस्त किया जाए। लेकिन आंकड़ों ने जनता को चौंका दिया। रिपोर्ट्स के मुताबिक इस प्रक्रिया के दौरान लगभग 65 लाख वोटरों के नाम सूची से हटाने की बात सामने आई। चुनाव आयोग के अनुसार इनमें से अधिकांश untraceable या मृत हैं, लेकिन राजनीतिक दलों और जन प्रतिनिधियों ने इसे बड़े पैमाने पर वोट चोरी और खास तबकों को मताधिकार से वंचित करने की कोशिश करार दिया। बिहार जैसे राज्य में, जहां गरीब, मजदूर, पिछड़े वर्ग और प्रवासी बड़ी संख्या में रहते हैं, वहां यह कदम सीधे-सीधे इन तबकों को चुनावी प्रक्रिया से बाहर करने के समान समझा जा रहा है। विपक्ष ने चुनाव आयोग की तीखी आलोचना करते हुए कहा कि यह दरअसल सत्ता में बैठी सरकार के इशारे पर किया गया ताकि कमजोर वर्ग के वोट दबाए जा सकें।

इसी पृष्ठभूमि में राहुल गांधी ने बिहार में कदम रखा और जनता को यह समझाने की कोशिश की कि यह केवल सूची की सफाई नहीं बल्कि एक संगठित ''मताधिकार से वंचित करने'' की साजिश है। उनका कहना है कि बिहार में 65 लाख वोटरों के नामों का सूची से गायब होना सिर्फ एक तकनीकी गलती नहीं बल्कि लोकतांत्रिक अधिकार पर डाका डालने के समान है। वह जनता को संबोधित करते हुए बार-बार यह नारा दोहराते हैं कि ''यह लड़ाई कांग्रेस या किसी एक पार्टी की नहीं, यह आप सभी की लड़ाई है, यह लोकतंत्र को बचाने की लड़ाई है।''

राहुल गांधी के इस बयान को और बल तब मिला जब उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर आंकड़े पेश किए और कहा कि 2024 के लोकसभा चुनावों में कई सीटों पर वोट चोरी की गई। उनका दावा है कि इन सीटों पर कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों की हार केवल कुछ हजार वोटों के अंतर से हुई और ये वही जगहें हैं जहां सुनियोजित तरीके से वोटों में हेराफेरी की गई। उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि कुछ क्षेत्रों में एक ही व्यक्ति के नाम पर डुप्लीकेट वोट डाले गए, कहीं हजारों वोटरों को एक ही पते पर रजिस्टर कर दिया गया, कहीं फॉर्म 6 के गलत इस्तेमाल से हजारों फर्जी वोटर सूची में शामिल किए गए, और कई जगह मृत लोगों के नाम भी बनाए रखे गए ताकि फर्जी वोट डाले जा सकें। उनके अनुसार एक विस्तृत विश्लेषण में सामने आया कि 11,965 डुप्लीकेट वोटर, 40,009 फर्जी पते, 10,452 एक ही पते पर रजिस्टर वोटर, 4,132 गलत फोटो और 33,692 फॉर्म 6 के तहत झूठे नाम पाए गए। भले ही ये आंकड़े देश के विभिन्न हिस्सों से थे, लेकिन इसका उद्देश्य जनता को यह अहसास कराना था कि यह समस्या सिर्फ बिहार या किसी एक राज्य तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरे भारतीय लोकतंत्र पर हमला है।

अब सवाल यह है कि यदि सचमुच लाखों वोटरों के नाम मतदाता सूची से गायब हो जाएं या उन्हें किसी भी तरीके से वोट डालने से रोका जाए, तो इसके राजनीतिक और सामाजिक प्रभाव क्या होंगे? सबसे पहला और तत्काल प्रभाव यह होगा कि जनता का लोकतांत्रिक प्रणाली पर विश्वास डगमगाने लगेगा। एक आम नागरिक, जिसने वर्षों तक यह यकीन रखा कि

उसका वोट बदलाव ला सकता है, जब उसे पता चलेगा कि उसका नाम ही सूची में मौजूद नहीं है, तो वह खुद को न केवल बेबस बल्कि लोकतंत्र से कटा हुआ महसूस करेगा।

दूसरा बड़ा असर उन सामाजिक वर्गों पर पड़ेगा जो पहले से ही हाशिए पर हैं। जैसे कि गरीब, दलित, पिछड़े वर्ग, अल्पसंख्यक और प्रवासी मजदूर जो लगातार सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष कर रहे हैं। यदि इन तबकों को वोटिंग प्रक्रिया से वंचित कर दिया गया, तो उनकी आवाज़ राजनीतिक परिदृश्य से ग़ायब हो जाएगी। इसका मतलब सिर्फ चुनावी चुप्पी नहीं, बल्कि सामाजिक प्रतिनिधित्व का अभाव होगा।

इस स्थिति का सबसे खतरनाक पहलू यह है कि लोकतंत्र एक प्रतिनिधि व्यवस्था होने के बजाय कुछ खास वर्गों तक सीमित हो जाएगा, जहां शक्तिशाली की आवाज़ तो सुनी जाएगी लेकिन कमजोर वर्ग हमेशा दबाया जाएगा। यह सिर्फ चुनावी प्रक्रिया का नुकसान नहीं, बल्कि पूरे लोकतांत्रिक ढांचे की आत्मा को चोट पहुँचाने जैसा होगा।

बिहार में राहुल गांधी की यात्रा का उद्देश्य केवल यह नहीं कि वे रैलियां और सभाएं करें, बल्कि वे एक पूरा नक्शा बनाकर राज्य के 20 से अधिक जिलों में जनता से सीधे संपर्क कर रहे हैं। सासाराम से शुरू होकर यह कारवां गया, नवादा, शेखपुरा, मुंगेर, भागलपुर, पूर्णिया, अररिया, सहरसा, दरभंगा, मधुबनी, मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, पूर्वी और पश्चिमी चंपारण, सिवान, सारण, भोजपुर होते हुए पटना में समाप्त होगा। इस यात्रा की कुल दूरी 1300 किलोमीटर से अधिक है और इसे 16 दिनों में पूरा किया जा रहा है। यह यात्रा एक प्रतीकात्मक संदेश है कि राहुल गांधी जनता के बीच जाकर उनसे सीधा संवाद करना चाहते हैं और उन्हें बताना चाहते हैं कि यह लोकतंत्र को बचाने की लड़ाई है।

राहुल गांधी ने अपनी सभाओं में बार-बार यह मुद्दा उठाया कि ''अगर वोट ही सुरक्षित नहीं है तो लोकतंत्र का क्या मतलब है?'' उनका कहना है कि सरकारें जनता के वोट से बननी चाहिए, न कि ताकत और सरकारी मशीनरी के खेल से। वे जनता को यह याद दिला रहे हैं कि यह देश अनगिनत कुर्बानियों के बाद हासिल हुआ है, और इसके संविधान ने हमें यह अधिकार दिया है कि हम स्वतंत्र रूप से अपनी पसंद की सरकार चुन सकें।

लेकिन अगर यही बुनियादी अधिकार हमसे छीन लिया जाए या उसमें बाधा डाली जाए, तो यह न केवल संविधान से धोखा है, बल्कि उन लाखों शहीदों की कुर्बानियों का अपमान भी है जिन्होंने आज़ादी और जन-संप्रभुता के लिए अपनी जानें निछावर कीं। राहुल गांधी का मानना है कि लोकतंत्र केवल वोटिंग के दिन एक पर्ची डालने का नाम नहीं, बल्कि एक सतत संघर्ष है, जिसमें हर नागरिक की भागीदारी, जागरूकता और आवाज शामिल है। यदि वोट की पवित्रता को नष्ट किया गया, तो यह लोकतंत्र की नींव को हिला देगा और एक आम नागरिक की उम्मीद, भरोसा और अधिकार बुरी तरह प्रभावित होंगे।

यह बात भी याद रखने योग्य है कि बिहार की धरती हमेशा से बड़ी राजनीतिक आंदोलनों का केंद्र रही है। जयप्रकाश नारायण की आंदोलन ने पूरे देश को बदल डाला था, और आज फिर उसी बिहार की मिट्टी से एक नई आवाज़ उठ रही है। वोट के अधिकार की यह यात्रा उस परंपरा को आगे बढ़ा रही है और जनता को यह अहसास दिला रही है कि उनका वोट ही उनकी असली ताकत है।

आज जब चुनावी सुधारों के नाम पर लाखों लोगों को वोट देने से वंचित करने की बातें हो रही हैं, जब बड़ी राजनीतिक पार्टियां एक-दूसरे पर धांधली के आरोप लगा रही हैं, तब यह यात्रा एक जन जागरूकता अभियान बनकर उभरी है। यह जनता को झकझोर रही है कि अगर आज आपने चुप्पी साध ली, तो कल आपकी आवाज़ हमेशा के लिए दब सकती है।

इसलिए कहा जा सकता है कि बिहार की यह यात्रा केवल एक राजनीतिक गतिविधि नहीं, बल्कि लोकतंत्र की रक्षा की लड़ाई है। यह जनता को याद दिला रही है कि ''एक व्यक्ति, एक वोट'' केवल एक नारा नहीं, बल्कि हमारे संविधान का मूलभूत सिद्धांत है। राहुल गांधी और उनकी यात्रा यह संदेश दे रही है कि इस अधिकार की रक्षा के लिए सभी को एकजुट होना होगा, क्योंकि अगर वोट चोरी हो गया, तो लोकतंत्र का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा।

अजा एकादशी आज

अजा एकादशी का हिंदू धर्म में बहुत ज्यादा महत्व है। यह एकादशी भगवान विष्णु की पूजा के लिए समर्पित है। इस दिन साधक कठिन व्रत रखते हैं और पूजा-अर्चना करते हैं। वहीं, इस दिन दान और पुण्य का बड़ा महत्व है। इस साल हिंदू पंचांग के अनुसार, 19 अगस्त को अजा एकादशी का व्रत रखा जाएगा। व्रत के साथ-साथ इस दिन देवी तुलसी की पूजा भी जरूर करनी चाहिए। वहीं, इस दिन तुलसी चालीसा का पाठ परम कल्याणकारी माना गया है।

कब मनाई जाती है अजा एकादशी?

==========================

भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष की दशमी तिथि के अगले दिन अजा एकादशी मनाई जाती है। यह दिन पूर्णतया जगत के पालनहार भगवान विष्णु को समर्पित होता है। अतः अजा एकादशी के लिए साधक न केवल आराध्य भगवान विष्णु की पूजा करते हैं, बल्कि उनके निमित्त व्रत भी रखते हैं। इस व्रत को करने से साधक की हर मनोकामना पूरी होती है। साथ ही देवी मां लक्ष्मी की कृपा से सुख और सौभाग्य में वृद्धि होती है।

अजा एकादशी शुभ मुहूर्त

========================

वैदिक पंचांग के अनुसार, 18 अगस्त को शाम 05 बजकर 22 मिनट पर भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि प्रारंभ होगा। वहीं, 19 अगस्त को दोपहर 03 बजकर 32 मिनट पर एकादशी तिथि का समापन होगा। सनातन धर्म में उदया तिथि से गणना की जाती है। इस प्रकार 19 अगस्त को अजा एकादशी मनाई जाएगी। वहीं, 20 अगस्त के दिन अजा एकादशी का पारण किया जाएगा।

अजा एकादशी पारण समय

==========================

अजा एकादशी का पारण 20 अगस्त को किया जाएगा। इस दिन साधक सुबह 05 बजकर 15 मिनट से लेकर 07 बजकर 49 मिनट के मध्य पारण कर सकते हैं। एकादशी व्रत का पारण अन्न और धन का दान कर किया जाता है। इसके लिए द्वादशी तिथि पर स्नान-ध्यान के बाद भक्ति भाव से लक्ष्मी नारायण जी की पूजा करें। वहीं, पूजा के बाद अन्न का दान कर व्रत खोलें।

अजा एकादशी व्रत का महत्व

=====================

मान्यता है कि जो भी श्रद्धालु भगवान विष्णु के ऋषिकेश स्वरूप की उपासना करता है और व्रत कथा का श्रवण करता है, उसे मृत्यु के बाद विष्णु लोक की प्राप्ति होती है। इस व्रत की कथा सुनने मात्र से ही अश्वमेध यज्ञ के बराबर पुण्य फल मिलता है।

व्रत एवं पूजन विधि

===============

* व्रत वाले दिन प्रातःकाल स्नान आदि करके स्वच्छ वस्त्र धारण करें और भगवान विष्णु का ध्यान करते हुए व्रत का संकल्प लें।
* पूजा स्थल पर भगवान विष्णु की मूर्ति या चित्र स्थापित करें।
* दीप, धूप, पुष्प, फल आदि से विधिवत पूजा करें।
* विष्णु सहस्रनाम और श्रीकृष्ण भजन का पाठ अवश्य करें।
* रात्रि में जागरण करें और अगले दिन नियत समय पर व्रत का पारण करें।

अजा एकादशी पर दान का महत्व

==============================

हिन्दू धर्म शास्त्रों में दान बेहद महत्वपूर्ण माना गया है। सनातन संस्कृति को मानने वाले लोग सदियों से ही दान की महत्ता को समझते आ रहे हैं। लोग मन की शांति, मनोकामना पूर्ति, पुण्य की प्राप्ति, ग्रह-दोषों के प्रभाव से मुक्ति और भगवान का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए दान करते हैं। हिन्दू धर्म में दान का महत्व इसलिए भी ज्यादा है क्योंकि कहा जाता है कि दान का लाभ सिर्फ जीते जी नहीं बल्कि मृत्यु के बाद भी मिलता है। लेकिन दान का पुण्य फल आपको तभी प्राप्त होता है, जब दान सही समय, सही तरीके और सच्चे मन के साथ पात्र व्यक्ति को दिया गया हो।

वंशलोचन

असली वंशलोचन खा लिया तो कभी नहीं होगी कैल्शियम की कमी........
इसके सेवन से गोरापन भी मिलता है।

वंशलोचन के फायदे.....

वंशलोचन एक प्राकृतिक कैल्शियम है जो कि बांस के पेड़ से प्राप्त होता है। आयुर्वेद की दृष्टि से इसका उपयोग कई प्रकार की दवाईयां बनाने में किया जाता है।

वंशलोचन बांस के पेड़ में पाया जाता है। ये बांसों की गांठों में जम जाता है और बांस को काटकर इसके अंदर से निकाला जाता है।

वंशलोचन दिखने में सफेद मिश्री के दाने जैसा होता है।

इसका चूर्ण भी बाजार में उपलब्ध होता है लेकिन इसको खरीदते समय इसकी सत्यता की जांच जरूर कर लें।

कफ की समस्या के लिए.....

10 साल से कम उम्र के बच्चों को आधा ग्राम वंशलोचन के चूर्ण में २ चम्मच शहद मिलाकर देने से उनकी कफ की समस्या खत्म हो जाती है।

अस्थमा पीड़ितों के लिए....

जिन लोगों को दमे यानि अस्थमा की समस्या रहती है उनके लिए भी ये अत्यंत लाभकारी सिद्ध होता है। २०-२० ग्राम मात्रा में वंशलोचन और पीपल को अच्छी तरह से पीस लें और फिर इस चूर्ण की २ ग्राम मात्रा में एक चम्मच शहद मिलाकर सुबह खाली पेट लें। जल्द ही अस्थमा की समस्या खत्म हो जाती है।

गर्भपात की समस्या के लिए.....

कई महिलाओं का गर्भ नहीं टिक पाता है, अत: उन्हें आधा ग्राम वंशलोचन को दूध या पानी के साथ खाना चाहिए। इससे गर्भपात की समस्या खत्म हो जाती है। गर्भावस्था के दौरान भी वंशलोचन का सेवन करने से बच्चे का स्वास्थ अच्छा होता है।

आयुर्वेद के अनुसार इसका सेवन करने से बच्चे का रंग अत्यधिक गोरा हो जाता है।

हाथ-पैरों में जलन के लिए....

जिन लोगों के हाथ या पैरों में लगातार जलन रहती है उन्हें 1 ग्राम वंशलोचन में 1 चम्मच शहद मिलाकर लेना चाहिए। इससे जलन में आराम मिलता है और धीरे-धीरे ये परेशानी जड़ से खत्म हो जाती है।

मुंह के छालों के लिए.....

अक्सर बाहर का भोजन ग्रहण करने से पेट में छाले पड़ जाते हैं। ऐसे में वंशलोचन का एक चुटकी चूर्ण लें, उसको शहद में मिलाकर छालों पर लगाने से ये ठीक हो जाते हैं।

बच्चों के लिए....

यदि बच्चों को मिट्टी खाने की आदत है तो वंशलोचन के चूर्ण में शहद मिलाकर इसकी गोलियां बना लें और प्रतिदिन दो गोलियां बच्चे को खिलाएं। बच्चे की मिट्टी खाने की आदत छूट जाएगी।

हड्डियों में दर्द के लिए.....

कमजोर हड्डियों और मांसपेशियों के दर्द के लिए ये अत्यंत लाभकारी है। अक्सर रात में पैरों में दर्द की समस्या भी इससे दूर हो जाती है। इसके लिए एक चम्मच वंशलोचन का चूर्ण लेकर उसे आधा ग्लास दूध के साथ पीने से आराम मिलता है।

कब ना करें इस्तेमाल ?....

पथरी की समस्या से जूझ रहे लोगों को इसका सेवन कभी नहीं करना चाहिए। कैल्शियम की अधिक मात्रा होने पर हाइपरकैलेसीमिया नामक बीमारी हो जाती है जिससे शरीर में भारीपन और सिरदर्द रहने लगता है, इसलिए अपने चिकित्सक के परामर्श पर ही इसका सेवन करें..

त्रिफला: कब्ज और अन्य रोगों के लिए लाभकारी आयुर्वेदिक औषधि

आयुर्वेद में त्रिफला को एक शक्तिशाली औषधीय संयोजन माना गया है। यह न केवल कब्ज (Constipation) जैसी आम समस्या के समाधान में सहायक है, बल्कि आँखों, बालों और पाचन तंत्र की सेहत को भी बेहतर बनाता है। त्रिफला चूर्ण का सेवन हजारों वर्षों से भारत में आयुर्वेदिक चिकित्सा का हिस्सा रहा है।

त्रिफला क्या है?

त्रिफला का शाब्दिक अर्थ है ₹तीन फल₹। यह तीन आयुर्वेदिक औषधीय फलों - हरड़ (Haritaki), बहेड़ा (Bibhitaki) और आँवला (Amla) के सममिश्रण से तैयार किया जाता है। ये तीनों ही औषधियाँ शरीर को शुद्ध करने, पाचन शक्ति बढ़ाने और रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत करने के लिए जानी जाती हैं।

त्रिफला के प्रमुख लाभ:

1. कब्ज दूर करने में अत्यंत प्रभावकारी

त्रिफला सबसे ज्यादा कब्ज के घरेलू आयुर्वेदिक उपाय के रूप में जाना जाता है।

रात को सोने से पहले एक से दो चम्मच त्रिफला चूर्ण गुनगुने पानी के साथ लेने से पेट साफ रहता है और कब्ज की समस्या से राहत मिलती है।

2. आँखों की रोशनी बढ़ाने में उपयोगी

त्रिफला का बाहरी प्रयोग आँखों के लिए भी लाभकारी है।

एक तांबे के लोटे में रात भर पानी में त्रिफला चूर्ण भिगो दें और सुबह उस पानी से आँखें धोने पर नेत्रज्योति बढ़ती है।

3. बालों की मजबूती और असमय सफेदी में फायदेमंद

त्रिफला बालों की जड़ों को पोषण देता है।

त्रिफला के बचे हुए लेप को सिर में लगाने से बाल मजबूत होते हैं और सफेदी की गति धीमी हो सकती है।

4. पाचन तंत्र को सुधारता है

त्रिफला पाचन रसों के स्राव को बढ़ाता है और आंतों को साफ करता है। इससे गैस, अपच और एसिडिटी जैसी समस्याओं में भी राहत मिलती है।

5. शरीर को रोग-मुक्त और ऊर्जा से भरपूर बनाता है

नियमित सेवन से शरीर में टॉक्सिन्स (विषैले तत्व) बाहर निकलते हैं और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

त्रिफला चूर्ण कैसे लें?

कब्ज के लिए:

रात को सोने से पहले 1 से 2 चम्मच त्रिफला चूर्ण गुनगुने पानी के साथ लें।

मौसम के अनुसार विशेष प्रयोग:

आप त्रिफला को सौंठ, सेंधा नमक, शहद, खांड, बुरा या लेंडीपीपल के साथ भी ले सकते हैं।

उपयोग के बाद ध्यान रखने योग्य बातें:

त्रिफला चूर्ण लेने के बाद 1 घंटे तक दूध या चाय न पिएं।

चूर्ण 4 महीने से अधिक पुराना न हो; पुराना चूर्ण कम प्रभावी हो सकता है।

त्रिफला के प्रयोग में सावधानी:

शुरुआत में दस्त जैसी हल्की प्रतिक्रिया हो सकती है, जो सामान्य है।

त्रिफला का प्रयोग शरीर की प्रकृति (वात, पित्त, कफ) के अनुसार करना चाहिए।

बेहतर है कि सेवन से पहले किसी आयुर्वेदाचार्य से परामर्श लें।

त्रिफला चूर्ण घर पर कैसे तैयार करें?

अगर आप शुद्ध त्रिफला चूर्ण लेना चाहते हैं, तो आप इसे घर पर भी बना सकते हैं:

हरड़, बहेड़ा और आँवला को समान मात्रा में सुखाकर पीस लें और हवा-बंद डिब्बे में रखें।

निष्कर्ष:-

त्रिफला एक संपूर्ण आयुर्वेदिक औषधि है, जो न केवल पाचन संबंधी विकारों को ठीक करती है, बल्कि समग्र स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाती है। यदि आप आयुर्वेद की प्राकृतिक शक्ति से अपने स्वास्थ्य को सुधारना चाहते हैं, तो त्रिफला को अपनी दिनचर्या में अवश्य शामिल करें।

घनचक्कर बना भाजपा का प्रमुख कार्यकर्ता किसकी चौखट पर जाए

पार्षद, विधायक, सांसद या घनचक्कर बना घूमता रहे तीनों की चौखटों पर, बड़ा सवाल ?

पिंकी कुंडू सह संपादक परिवहन विशेष

नई दिल्ली। दिल्ली में सरकार बनने से पहले विधायक पद के बनने के सपने देखने वाले नेता बड़े प्यार से कार्यकर्ताओं से मिलते और उनके काम के लिए तत्पर रहते थे, मगर विधायक बनते ही वक्त बदल गया और अब वहीं विधायक बने नेता बड़े प्यार से उनके काम टरका रहे हैं। आज ट्रिपल सरकार में कार्यकर्ताओं की हालत यह है कि वह पार्षद, विधायक व सांसद के चक्कर में घनचक्कर बनकर रह गए हैं।

कार्यकर्ताओं को आज यह ही समझ नहीं आ रहा है की किसका दरवाजा खटखटाएं, मशहूर शायर ख्वाजा साजिद का शेर 'कल सियासत में भी मोहब्बत थी, अब मोहब्बत में भी सियासत है।' दिल्ली भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं पर एकदम सटीक बैठता है।

वर्ष 1959 में आई फिल्म कागज के फूल के मशहूर गीत 'वक्त ने किया क्या हंसीं सितम, तुम रहे न तुम हम रहे न हम।' की यह लाइने दिल्ली में 27 साल बाद सत्ता में लौटी भाजपा की सरकार और दिल्ली में हैट्रिक लगाते आ रहे भाजपा सांसदों की स्थिति को बखूबी बयां करता है।

दिल्ली में भाजपा की सरकार बनने के बाद सांसदों का कद कम हो गया जिसकी गवाही सड़को पर लगे पोस्टर ब्यान करते साफ नजर आ रहे हैं। कल तक बिग साइज वाले सांसद आज, छोटे साइज में कैद होकर रह गए हैं।

दिल्ली में भाजपा सरकार बनने के बाद से ही सांसद उनके कार्यालय पर पहुंचे कार्यकर्ताओ को साफ कहते सुने जा रहे हैं की क्या पानी की सप्लाई

दिलवाना, सफाई करवाना हमारा काम है तुम लोग जाकर पार्टी के विधायक और पार्षदों से मिलिए।

इसमें कोई शक नहीं की पानी, बिजली विधायक और सफाई पार्षद का काम है, लेकिन दिल्ली सरकार बनने से पहले तक तक 'वन मैन शो' बने सांसदों के कद में आई कमी उनके इन शब्दों के माध्यम से अपना दर्द को बयां करते साफ नजर आ रहे है।

आज दिल्ली में भाजपा कार्यकर्ताओं का यह हाल है की एक-दो सांसद तो अब उन्हें चाय तक पिलाना भी बुरा समझते हैं।

कार्यकर्ता विधायक के पास जाते हैं तो चुनाव जीतने से पहले तक जो उनके साथ प्यार बांटने वाले नेता थे वह उन्हें समझाते नजर आते हैं की यह काम तो सांसद का है और तुम लोग सांसद के पास जाओ। पुलिस हमारी सुनती नहीं है, पब्लिक स्कूल में दाखिला हम करवा नहीं सकते तो बताओ हमारे पास आने से तुम्हारी क्या मदद होगी।

कार्यकर्ता जो पार्षद के पास जाएं तो वह कार्यकर्ताओं को सांसद-विधायक के पास जाने की सलाह देते नजर आते हैं।

आज कार्यकर्ताओ की हालत फुटबॉल की तरह है। सभी विजय प्राप्त भाजपा नेता कार्यकर्ताओं को दूसरे के पाले में किक मारकर भेजते नजर आ रहे हैं।

भाजपा कार्यकर्ता विपक्ष से निपटने में तो माहिर है, लेकिन अपनी ही पार्टी की ट्रिपल इंजन की सरकार होने के बावजूद वेबस नजर आ रहा है।

अब मोदी और अमित शाह बताए की दिल्ली में जब भाजपा के प्रमुख कार्यकर्ताओं का यह हाल है तो आम जनता का क्या हाल होगा समझा जा सकता है आखिर कब तक सिर्फ मोदी-मोदी करके जनता के पास वोट मांगने जाएंगे। लोगों के काम भी तो होने चाहिए।

केजरीवाल बतायें की क्या उन्होने स्कूलों को धमकी देने वाले नाबालिग छात्र के आतिशी से जुड़ी एन.जी.ओं से जुड़ाव पर पूर्व मुख्य मंत्री आतिशी से कोई जवाब मांगा - वीरेन्द्र सचदेवा

सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की यह अत्यंत दुखद है की आम आदमी पार्टी नेता अरविंद केजरीवाल स्कूलों को अज्ञात सूत्रों से मिलने वाली बॉम्ब धमकियों जैसे संवेदनशील मुद्दे पर लगातार ओछी राजनीतिक ब्यानबाज़ी करके समाज में अभिभावकों में तनाव उत्पन्न करने की कोशिश करते हैं।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की यह अज्ञात बॉम्ब धमकियां केवल दिल्ली या भारत तक सीमित समस्या नही है, आज दुनिया भर में स्कूलों, अस्पताल एवं हवाई जहाजों को अज्ञात धमकी मिलना रोजमर्रा की बात हो गई है और दुनिया भर की तरह दिल्ली पुलिस भी इन्हे गम्भीरता से लेते हुए पहले सुरक्षा सुनिश्चित करती है और फिर जांच कर संलिप्त आरोपी को पकड़ती है।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की यह सर्वविदित है की पूर्व में दो बार ऐसी धमकियों की जांच में स्वंय नाबालिग छात्र ही संलिप्त पाये गये और एक बार तो धमकी देने में संलिप्त नाबालिग छात्र के पिता का रिश्ता पूर्व मुख्य मंत्री आतिशी मार्लेना से जुड़ी एक एन.जी.ओ. से रहा है।

दिल्ली की जनता अरविंद केजरीवाल से पूछना चाहती है की उनकी नेता आतिशी मार्लेना के माता पिता आतंकवादियों का समर्थन करते हैं और स्कूलों को धमकी देने वाले के तार भी उन्ही की एन.जी.ओ. से जुड़े निकले हैं तो ऐसे में केजरीवाल बतायें की क्या उन्होने स्कूलों को धमकी देने वाले नाबालिग छात्र के आतिशी से जुड़ी एन.जी.ओ, शायद से जुड़ाव पर या उनके माता पिता के आतंकवादी प्रेम पर पूर्व मुख्य मंत्री आतिशी से कोई जवाब मांगा।

दोपहर करीब 3:00 बजे महाजन इलेक्ट्रॉनिक्स की दूसरी मंजिल लगी पर आग

परिवहन विशेष न्यूज

कोशिशों के बाद सभी को बाहर निकाल कर अस्पतालों में भेज दिया गया। इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना में चार लोगों की जान चली गई है जबकि एक का इलाज चल रहा है। उचित कार्यवाही की जा रही है।

18/8/25 दोपहर 3:00pm के करीब राजा गार्डन चौक महाजन इलेक्ट्रॉनिक में लगी भीषण आग। आग लगने के संबंध में पीएस मोती नगर में एक संकटपूर्ण कॉल द्वारा सुचित किया गया। सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड, एसएचओ मोती नगर और अन्य कर्मी मौके पर पहुंचे। वहां पहुंचने पर वहां मौजूद लोगों ने बताया कि 5 लोग अंदर फंसे हुए हैं उन्हें वहां से निकाला गया और वह बुरी तरह जख्मी थे जिन्हें एंबुलेंस के जरिए अस्पताल भेजा गया वहां पर डॉक्टर ने चार लोगों को मृत्य घोषित कर दिया एक व्यक्ति की हालात सीरियस बताई जा रही है। जानकारी वहां पर खड़ी पब्लिक द्वारा दी गई जिससे मौके पर सिविल डिफेंस और आपदा मित्र की टीम पहुंची जिन्होंने वहां पर ट्रैफिक कंट्रोल किया और भीड़ को घटनास्थल से दूर किया जिससे कि फायर कर्मियों को किसी प्रकार की काम करने में कोई दिक्कत ना आए। मौके पर 5 फायर टेंडर चार कैट एम्बुलेंस स्थानीय पुलिस, फॉरेंसिक टीम, बिजली विभाग, सिविल डिफेंस डिजास्टर मैनेजमेंट से अपना मित्र की टीम उपस्थित रही।

श्री सनातन धर्म सभा मयूर विहार ने श्री राम मंदिर मयूर विहार में मनाया जन्माष्टमी पर्व

मुख्य संवाददाता

दिल्ली के मयूर विहार फेस-1, पॉकेट-1 स्थित श्रीराम मंदिर में जन्माष्टमी का पर्व इस वर्ष बड़े ही भक्ति भाव और धूमधाम से मनाया गया। सुबह से ही आसपास के क्षेत्रों से श्रद्धालु मंदिर पहुँचने लगे और श्रीकृष्ण जन्मोत्सव के दर्शनों का लाभ उठाते रहे।

जन्माष्टमी महोत्सव का शुभारंभ प्रातः गीता पाठ से हुआ। इसके पश्चात मंदिर की महिला कीर्तन मंडली ने भजनों की मधुर प्रस्तुतियों से पूरे वातावरण को भक्तिमय बना दिया। मंदिर में भगवान श्रीराम, राधा-कृष्ण और अन्य देव प्रतिमाओं को नए वस्त्रों से अलंकृत किया गया।

मंदिर समिति ने गर्भगृह को सफेद पुष्पों, रोशनियों और रंग-बिरंगे गुब्बारों से सजाया। संपूर्ण मंदिर में कोलकाता से मँगवाए गए गेंदे के पुष्पों का विशेष प्रयोग किया गया, जिनकी कुल मात्रा लगभग 50 किलो रही। बालकृष्ण के स्वरूप को सुंदर झूले में विराजमान किया गया, जहाँ भक्तों ने बारी-बारी से आकर लड्डू गोपाल को झूला झुलाया। वातावरण ₹जय श्रीकृष्ण, जय श्रीराधे₹ और ₹बाँके बिहारी लाल की जय₹ के उद्घोष से गूंजता रहा।

इस अवसर पर छोटे-छोटे बच्चों ने श्रीकृष्ण का वेश धारण किया और अपने अभिभावकों के साथ मंदिर में दर्शन हेतु पहुँचे। पूरे दिन में लगभग नौ हजार से अधिक श्रद्धालुओं ने मंदिर में दर्शन किए। सुरक्षा की दृष्टि से पुलिसकर्मियों, सुरक्षा गार्डों और सेवादारों की तैनाती की गई थी।

सायंकाल मंदिर प्रांगण में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। स्थानीय कलाकारों और भक्तों ने नृत्य, भजन और नाट्य प्रस्तुति के माध्यम से श्रीकृष्ण लीला का सुंदर चित्रण किया। उपस्थित भक्त देर रात तक कार्यक्रमों का आनंद लेते रहे। वहीं मंदिर परिसर में विभिन्न व्यंजनों के स्टाल भी लगाए गए, जिनसे मेले जैसा वातावरण बन गया।

रात्रि 11:30 बजे से मध्यरात्रि तक श्रीकृष्ण का मुख्य अभिषेक हुआ। ठीक 12 बजे जैसे ही जन्म का समय हुआ, पूरा मंदिर ₹नंद घर आनंद भयो, जय कन्हैया लाल की₹ की गूंज से गूंजायमान हो उठा। जन्मोत्सव उपरांत भक्तों को पंचामृत, धनिया पंजीरी और माखन-मिश्री का प्रसाद वितरित किया गया।

इस भव्य आयोजन का श्रेय श्रीराम मंदिर पॉकेट-1 की संचालन समिति श्री सनातन धर्म सभा, मयूर विहार (पंजी.) को जाता है। समिति के पदाधिकारी अध्यक्ष आर.पी. अग्रवाल, उपाध्यक्ष दीपा शर्मा, महासचिव के.बी. शर्मा, संयुक्त सचिव अनुराग अग्रवाल, कोषाध्यक्ष अनिल सचदेवा और भंडारी रणबीर सिंह रावत की सक्रिय भूमिका के कारण जन्माष्टमी महोत्सव सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

यह मामला सत्ता के दुरुपयोग का बड़ा उदाहरण है, जो निगम कर्मचारियों के मौलिक अधिकारों का भी हनन करता है- अंकुश नारंग

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली : एमसीडी में आम आदमी पार्टी के नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग ने सोमवार को एमसीडी के मेयर राजा इकबाल सिंह और कमिश्नर को प्रधानमंत्री की रैली में निगम कर्मियों को जबरन भेजने के संबंध में पत्र लिखा है और जांच कर कार्रवाई की मांग की है। उन्होंने पूछा है कि किसके आदेश से कर्मचारियों को रैली में जबरन भेजा गया? बसों की व्यवस्था किसने की, बसों के व्यय का भुगतान किस मद से किया गया और क्या किसी राजनीतिक रैली में कर्मचारियों को भेजना उचित है? उन्होंने पूरे मामले की जांच कर दोषी अधिकारियों के खिलाफ आवश्यक अनुशासनात्मक कार्रवाई की मांग की है। इसके अलावा, ''आप'' पार्षद कुसुम लता, सारिका चौधरी, भगवीर और राकेश लोहिया ने भी मामले की जांच कर कार्रवाई की मांग को लेकर अपने जोन के डिप्टी कमिश्नर को पत्र लिखा है।

उन्होंने अपने पत्र में कहा है कि जैसा कि आपको विदित ही है कि रविवार, 17 अगस्त को दिल्ली के रोहिणी/नरेला क्षेत्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा यूईआर-2 के उद्घाटन कार्यक्रम के अवसर पर भाजपा द्वारा एक विशाल राजनीतिक रैली का आयोजन किया गया। प्राप्त सूचनाओं एवं प्रमाणों के अनुसार, इस रैली को सफल दिखाने के लिए एमसीडी के विभिन्न जोन एवं वार्डों से सफाई कर्मचारियों, मलेरिया विभाग के कर्मियों, तथा निगम विद्यालयों के शिक्षकों को जबरन बुलाया गया। यह भी ज्ञात हुआ है कि इन कर्मचारियों को धमकी दी गई कि यदि वे रैली में उपस्थित नहीं हुए, तो उनकी सेवा समाप्ति, वेतन रोकने, अथवा अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी।

अंकुश नारंग ने कहा है कि रविवार को इन कर्मचारियों का साप्ताहिक अवकाश होता है, फिर भी उन्हें जबरन बुलाकर, बसों द्वारा रैली स्थल तक पहुँचाया गया और कुछ मामलों में कॉम्पेन्सेटरी लीव देने का झांसा भी दिया गया।

अंकुश नारंग ने इस मामले में कुछ गंभीर प्रश्न उठाए हैं। उन्होने कहा कि इस रैली के लिए कर्मचारियों को जबरन लाना किसके आदेश से किया गया? रैली स्थल तक लाने के लिए बसों की व्यवस्था किस विभाग द्वारा की गई? इन बसों के व्यय का भुगतान किस बजट मद से किया गया? क्या किसी राजनीतिक दल की रैली के लिए शासकीय कर्मचारियों को बाध्य करना उचित है?

उन्होंने कहा है कि इस प्रकार की कार्रवाई न केवल लोक सेवा आचरण नियमों का उल्लंघन है, बल्कि यह सत्ता के दुरुपयोग का स्पष्ट उदाहरण है। यह कर्मचारियों के मौलिक अधिकारों का भी हनन है। अंकुश नारंग ने निवेदन किया है कि उपरोक्त प्रकरण की निष्पक्ष जांच करवाई जाए तथा दोषी अधिकारियों/कर्मचारियों के विरुद्ध आवश्यक अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाए।

अंकुश नारंग ने पत्र के साथ प्रमाण स्वरूप कुछ वार्डों के पार्षदों द्वारा किए गए फेसबुक लाइव वीडियो के लिंक तथा कर्मचारियों को दिए गए विभागीय आदेशों की प्रतिलिपियां भी संलग्न की। अंकुश नारंग ने मेयर से अपेक्षा जताई है कि इस गम्भीर विषय को प्राथमिकता के आधार पर संज्ञान में लिया जाएगा और मेरे कार्यालय को की गई करवाई से अवगत करवाया जाएगा।

"छला समर्पण" (एक सच्ची कहानी)

यह कहानी खुली छोड़ दी गई है, ताकि पाठक सोच सके —
क्या कभी छोटे भाई, माता- पिता और बहनें उस त्याग को समझेंगे?
या यह भी एक ऐसी कहानी होगी, जो सिर्फ पीपल के पत्तों की सरसराहट में सुनी जाएगी...

डॉ. सत्यवान सौरभ

घर के आँगन में पीपल का पुराना पेड़ खामोशी से खड़ा था। उसकी छाँव में खेलते हुए बीते साल जैसे किसी पुराने संदूक में बंद पड़े थे। इस घर की दीवारों ने न जाने कितनी कहानियाँ देखी थीं — हँसी की, आँसुओं की, त्याग और उपेक्षा की।

बड़े बेटे ने महज़ छठी कक्षा से ही घर का बोझ अपने कंधों पर उठा लिया था। पिता का स्वभाव ऐसा कि घर के कामों में कोई स्थायी हाथ बँटाना उनकी आदत में नहीं था। न कोई बड़ा सपना, न मेहनत से आगे बढ़ने की चाह। उस उम्र में, जब बाकी बच्चे अपनी पढ़ाई और खेलों में मग्न होते हैं, उसने ट्यूशन पढ़ाकर खुद की पढ़ाई भी पूरी की और छोटे भाई की भी।

बहनों की पढ़ाई के लिए जितना संभव हो सका, उसने पैसे जुटाए। कपड़े, किताबें, फीस — हर ज़रूरत में वह आगे खड़ा था। शादी के बाद उसकी पत्नी भी इस जिम्मेदारी में बराबर की साझेदार बनी। वह न सिर्फ अपने घर की जिम्मेदारी निभाती, बल्कि ननदों को उनके घर जाकर पढ़ाती, उन्हें अपने साथ कोचिंग ले जाती।

घर की छोटी-बड़ी ज़रूरतों के लिए बड़े की नौकरी और उसकी पत्नी के पैसों पर ही घर चलता रहा। पत्नी के फिक्स्ड डिपॉज़िट तक घर के खर्च में लग गए। जब उसकी पत्नी की भी नौकरी लगी, तब भी उनकी पूरी तनख्वाह घर की उन्नति में लगती रही।

कई सालों बाद बड़ा भाई नौकरी में स्थिर हुआ। उसने घर का सपना सजाया — नया मकान बनवाया, एक पुरानी गाड़ी खरीदी ताकि घर के काम आसानी से हों। लेकिन गाड़ी का इस्तेमाल भी ज्यादातर छोटा ही करता। यहाँ तक कि जब उसकी पत्नी गर्भवती थी, तब भी छोटा गाड़ी लेकर चला जाता और भाभी बस से ड्यूटी जाती। बड़ा भाई खुद किसी और के साथ काम पर जाता।

बड़े के बेटे के जन्म से पहले ही छोटे भाई की नौकरी लग चुकी थी। पर जिम्मेदारियों में हाथ बँटाने या घर का पुराना कर्ज़ चुकाने के बजाय वह अपने ही आराम में लगा रहा।

एक-दो बार बड़े ने माता-पिता से भी कहा कि छोटे की जरूरतों पर ध्यान दो, पर उसकी इच्छाओं को पंख मत लगाओ। मगर माता-पिता ने यह नहीं सोचा कि बड़ा सालों से परिवार का बोझ उठाए हुए है और अपना सब कुछ घर के लिए झोंक चुका है।

बड़ा भाई और भाभी हमेशा छोटे के लिए खुद से अच्छा ढूंढते और सोचते रहे — कपड़ों से लेकर पढ़ाई और सुविधा तक, हर बार उन्होंने पहले छोटे की ज़रूरत पूरी की। लेकिन माता-पिता और छोटे की इच्छाओं को कभी सब्र नहीं मिला; जो चाहा, तुरंत चाहिए था, चाहे उसके लिए बड़े का त्याग और मेहनत क्यों न कुर्बान हो।

बड़े भाई और उसकी पत्नी दोनों ड्यूटी करते और बच्चा पिता की गोद में पलता। इस वक्त भी न सास-ससुर, न बहनें और न ही छोटा भाई मदद को आगे आए।

कुछ समय बाद छोटे भाई की शादी हुई। उसकी पत्नी भी नौकरी में थी। घर के कर्ज़ को उतारने के बजाय दोनों ने नई गाड़ी खरीद ली। जबकि बड़े भाई की पत्नी को मायके से गाड़ी के लिए जो पैसे मिले थे, वे भी इस घर को आगे बढ़ाने में खर्च हो चुके थे।

सबसे चुभने वाली बात यह थी कि बहनों की पढ़ाई और ज़रूरतों के लिए सालों तक सबकुछ देने के बाद भी, वे छोटे भाई के पक्ष में रहीं। जैसे बड़े का हर त्याग, हर मेहनत किसी पुराने कपड़े की तरह बेमानी हो गया हो।

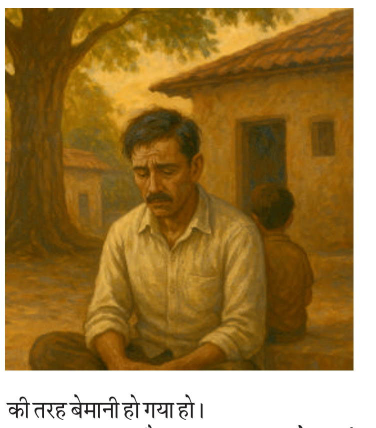

अब घर का माहौल बदल चुका था। छोटा भाई और उसकी पत्नी के बीच अहम का भाव बढ़ चुका था। बातें तानों में बदल गई थीं, और ताने अपमान में। कभी-कभी तो छोटे का गुस्सा हाथ तक पहुँच जाता। सास-ससुर भी इस पर चुप रहते।

बड़ा भाई अब अपने बेटे और पत्नी के साथ ही अपनी छोटी-सी दुनिया में सीमित हो चुका था। पर एक अजीब-सी खामोशी उसके भीतर घर कर गई थी — वह खामोशी, जो सिर्फ वही समझ सकता था, जिसने सालों तक दूसरों के लिए अपना सब कुछ दे दिया हो और बदले में सिर्फ दूरी पाई हो।

दुख इस बात का नहीं था कि मेहनत का प्रतिफल नहीं मिला, बल्कि इस बात का था कि जिनके लिए जीवन का हर पल खपा दिया, उन्होंने ही मुंह मोड़ लिया। बड़े ने बहनों की पढ़ाई के लिए जो त्याग किया, उन्हें अपने घर तक पढ़ाया, वे भी चुपचाप छोटे के साथ खड़ी रहीं। बड़े के बेटे के जन्म के बाद भी किसी ने उसका ध्यान नहीं रखा — न दादी ने, न बुआओं ने, न चाचा-चाची ने।

समय का चक्र घूमता रहा, पर एक सच्चाई स्थिर रही — वह किशोर, जिसने छठी कक्षा से घर संभालना शुरू किया था, आज भी अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटा। बस अब उसने उम्मीद करना छोड़ दिया था।

एक रात, बरसों के घुटे हुए दर्द के बाद, उसने पत्नी से कहा —

"शायद गलती हमारी ही थी... हमने सोचा था कि खून का रिश्ता सबसे बड़ा होता है। पर असल में, समझ और सम्मान ही रिश्तों को जीवित रखते हैं।"

पत्नी ने बस उसका हाथ थाम लिया। आँसुओं से भरी आँखों में कोई शिकवा नहीं था, बस एक दृढ़ता थी —

"अब हम अपने बेटे को ये सिखाएँगे कि इंसानियत पहले, रिश्ते बाद में।"

आंगन में हवा चल रही थी। दूर मंदिर की घंटियाँ बज रही थीं। घर वही था, लोग वही थे, पर बड़ा भाई अब भीतर से बदल चुका था। वह जान चुका था कि त्याग का फल हमेशा आभार नहीं होता — कभी-कभी बस चुप्पी और दूरी मिलती है।

एक शाम, जब घर के आँगन में पीपल की पत्तियाँ सरसराईं, बड़ा भाई चुपचाप अपने बेटे को गोद में लेकर बैठा था। बेटा मासूमियत से पूछ बैठा —

"पापा, आप हमेशा इतने चुप क्यों रहते हो?"

बड़े ने हल्की मुस्कान दी, पर भीतर का दर्द आँखों में उतर आया। उसने बस इतना कहा —

"कभी-कभी बेटा, चुप रहना सबसे बड़ी ताकत होती है।"

पीपल का पेड़ उस शाम और भी स्थिर हो गया था। जैसे उसने भी यह वादा कर लिया हो कि वह इस घर के त्याग की छाया को हमेशा संजोकर रखेगा — चाहे लोग भूल जाएँ, पर हवा की हर सरसराहट में वह कहानी ज़िंदा रहेगी।

यह कहानी खुली छोड़ दी गई है, ताकि पाठक सोच सके —

क्या कभी छोटे भाई, माता- पिता और बहनें उस त्याग को समझेंगे?

या यह भी एक ऐसी कहानी होगी, जो सिर्फ पीपल के पत्तों की सरसराहट में सुनी जाएगी...

दिल्ली सरकार का ऐतिहासिक निर्णय: हिंदू सम्राटों की विरासत को मिलेगा सम्मान

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली। विश्व हिंदू परिषद, इंद्रप्रस्थ प्रांत की एक प्रतिनिधि टोली ने दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता से भेंट कर उन्हें एक विस्तृत हिंदू मांग पत्र सौंपा था। यह मांग पत्र राजधानी दिल्ली में सनातन संस्कृति, धार्मिक स्वतंत्रता, गौसंरक्षण, सामाजिक समरसता, तथा हिंदू समाज की ज्वलंत समस्याओं को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया था। प्रतिनिधि मंडल में प्रांत अध्यक्ष श्री कपिल खन्ना जी, प्रांत संगठन मंत्री श्री सुबोध जी तथा प्रांत मंत्री श्री सुरेन्द्र कुमार गुप्ता जी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता जी ने सभी बिंदुओं को गंभीरता से सुना और आश्वासन दिया कि राज्य सरकार इन मुद्दों पर यथासंभव सकारात्मक कदम उठाएगी।

मांगपत्र पर त्वरित ध्यान देते हुए दिल्ली के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री मा. कपिल मिश्रा जी ने एक ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए घोषणा कि हिंदू सम्राटों से संबंधित ऐतिहासिक स्थलों को दिल्ली की हेरिटेज वॉक में शामिल किया जाएगा। यह निर्णय न केवल दिल्ली की सांस्कृतिक पहचान को पुनर्स्थापित करेगा, बल्कि देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों को भारत की गौरवशाली हिंदू विरासत से परिचित कराने का माध्यम बनेगा। प्रान्त मंत्री सुरेंद्र गुप्ता जी के द्वारा प्रस्तुत सुझावों की प्रमुख बातेंः

सम्राट हेमचंद्र विक्रमादित्य के सम्मान में एक भव्य स्मारक का निर्माण। हुमायूं के मकबरे की विशाल भूमि पर एक हिंदू विरासत स्मारक पार्क की स्थापना। इन स्थलों को UNESCO वर्ल्ड हेरिटेज साइट्स की सूची में शामिल करने हेतु प्रयास। दिल्ली आने वाले प्रत्येक विदेशी पर्यटक को एक निःशुल्क पुस्तिका प्रदान की जाए जिसमें इन स्मारकों का ऐतिहासिक विवरण हो। इन स्थलों के निकट विश्व-स्तरीय होटल एवं सुविधाएं विकसित की जाएं ताकि पर्यटन को बढ़ावा मिले। इस योजना में विश्व हिंदू परिषद को एक सांस्कृतिक भागीदार के रूप में शामिल किया जाए। विश्व हिंदू परिषद, इंद्रप्रस्थ प्रांत की ओर से हम हृदय की गहराइयों से मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता के मंत्रिमंडल को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

इनर व्हील क्लब ऑफ़ वृंदावन दिव्य शक्ति ने किया डॉ. गोपाल चतुर्वेदी को सम्मानित

परिवहन विशेष न्यूज

वृन्दावन। तराश मन्दिर क्षेत्र स्थित शारदा रेस्टोरेंट में समाज सेवा की अंतरराष्ट्रीय संस्था इनर व्हील क्लब ऑफ वृंदावन दिव्य शक्ति के चौथे अधिष्ठापन समारोह में नगर के प्रख्यात साहित्यकार, आध्यात्मविद् व पत्रकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, एडवोकेट का सम्मान किया गया। उन्हें यह सम्मान कार्यक्रम की मुख्य अतिथि जिला - 311 की अध्यक्ष डॉ. सुरुचि सक्सेना ने प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह अंगवस्त्र एवं उपहार भेंट करके दिया।

इस अवसर पर इनर व्हील ऑफ़ वृंदावन दिव्य शक्ति की नव निर्वाचित अध्यक्ष निशा शर्मा, सचिव राधिका गोस्वामी,

पी.डी.सी. शिक्षाविद लता गोयल, विशिष्ट अतिथि जिला की ISO मंजू पारीक, पूर्व अध्यक्ष संध्या शर्मा, रिचा वर्मा, नवीन तोडकर, गीता गोस्वामी, रेनू, नीरजा शर्मा, निर्जला, निर्मल, श्रीं शांडिल्य, डॉ. सुनीता पचार, विनीता द्विवेदी, अंजू अग्रवाल, देवेन्द्र शर्मा, डॉ. राधाकांत शर्मा, निशा शर्मा आदि की उपस्थिति विशेष रही।

बेटियों के सम्मान की गूँज: आदिवासी समाज में नई सुबह

[धरती और धरोहर पर बेटियों का हक : एक न्यायिक क्रांति]

एक बेटी की पुकार, सदियों पुरानी परंपराओं की दीवारों को तोड़ने की हिम्मत, और एक ऐतिहासिक फैसले की गूँज—यह कहानी छत्तीसगढ़ के सूरजपुर के मानी गाँव से शुरू होती है, लेकिन इसकी लहरें भारत के हर आदिवासी समुदाय तक पहुँच रही हैं। धइया, एक साधारण आदिवासी महिला, जिसकी आवाज़ ने न सिर्फ़ परिवार की चुप्पी तोड़ी, बल्कि देश की सर्वोच्च अदालत को भी झकझोर दिया। सुप्रीम कोर्ट का वह फैसला, जो कागज़ों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि हर उस बेटी के दिल में उकेरा गया, जिसे कभी उसके हक से वंचित किया गया। यह फैसला सिर्फ़ कानूनी जीत नहीं, बल्कि एक सामाजिक क्रांति का प्रतीक है, जो आदिवासी बेटियों के लिए नई सुबह का वादा करता है। मगर सवाल अब भी बाकी है, क्या यह फैसला रूढ़ियों के तूफान में खड़ा रह पाएगा, या यह एक नई जंग को जन्म देगा?

धइया की कहानी तब शुरू हुई, जब उनके पिता भज्जू गौड़ ने अपनी ज़मीन अपने पाँच बेटों में बाँट दी, और परंपराओं के नाम पर अपनी इकलौती बेटी को खाली हाथ छोड़ दिया। उनके बेटे रामचरण ने माँ के हक के लिए आवाज़ बुलंद की। वे कहते हैं, 1993 में हमने अदालत का दरवाज़ा खटखटाया, मगर हमें बताया गया कि आदिवासी समाज में बेटियों को पैतृक संपत्ति में हिस्सा नहीं मिलता। परंपराओं की आड़ में हमारी आवाज़ दबाने की कोशिश हुई। सूरजपुर की स्थानीय अदालत और छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट ने भी यही रुख अपनाया। फिर भी, धइया का परिवार डटा रहा। 32 साल की लंबी लड़ाई के बाद, सुप्रीम कोर्ट ने एक ऐसा फैसला सुनाया, जो न सिर्फ़ धइया के हक को मान्यता देता है, बल्कि पूरे आदिवासी समाज को एक नई दिशा दिखाता है।

सुप्रीम कोर्ट की पीठ ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि लिंग के आधार पर संपत्ति से वंचित करना संविधान के अनुच्छेद 14 का उल्लंघन है, जो कानून के समक्ष समानता की गारंटी देता है। कोर्ट ने सवाल उठाया — क्या कोई ऐसा रिवाज़ है जो आदिवासी बेटियों को उनके हक से वंचित करता हो? कोई भी पक्ष ऐसा कोई प्रामाणिक रिवाज़ सिद्ध नहीं कर सका। कोर्ट ने जोर देकर कहा, रिवाज़ समय के साथ बदलते हैं। यदि कोई रिवाज़ भेदभाव को बढ़ावा देता है, तो उसे बदलना अनिवार्य है। यह फैसला महज कानूनी दस्तावेजों तक सीमित नहीं, बल्कि 2011 की जनगणना के अनुसार देश की 8.6% आबादी, यानी 10.42 करोड़ आदिवासियों के लिए एक नई राह खोलता है, जिनमें से अधिकांश समुदायों में बेटियों को पैतृक संपत्ति से वंचित रखा जाता है।

सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला एक शक्तिशाली तूफान है, जो आदिवासी समाज की गहरी जड़ों में जमी रूढ़ियों को उखाड़ने की ताकत रखता है। 2005 का हिंदू उत्तराधिकार (संशोधन) अधिनियम हिंदू महिलाओं को पैतृक संपत्ति में बराबरी का हक देता है, लेकिन आदिवासी समुदायों को इस दायरे से बाहर रखा गया, जिसके चलते आदिवासी बेटियाँ आज भी अपने पिता की संपत्ति से वंचित हैं। यह फैसला उस भेदभाव को मिटाने का एक क्रांतिकारी कदम है। जब आदिवासी समाज ने खान-पान, पहनावे और जीवनशैली में बदलाव को गले लगाया है, तो फिर बेटियों को उनके जन्मसिद्ध हक से क्यों वंचित रखा जाए? यह समय परिवर्तन का है, और इसे पूरे दिल से अपनाने का वक्त आ गया है।

सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला हर किसी के लिए उत्सव का कारण नहीं है। कुछ का मानना है कि यह फैसला घर-घर में विवाद की चिंगारी सुलगा सकता है। उनके अनुसार, परंपराएँ बेटियों को ससुराल में सम्मान और संपत्ति का पूरा हक देती हैं, लेकिन पिता की संपत्ति में हिस्सा देने का रिवाज़ नहीं रहा। चिंता यह भी है कि यह फैसला समाज की नींव को हिला सकता है, क्योंकि बाहरी लोग संपत्ति के लालच में आदिवासी बेटियों से विवाह कर सकते हैं, जिससे आदिवासी ज़मीनों पर खतरा मंडरा सकता है, जो केवल समुदाय के भीतर ही हस्तांतरित हो सकती हैं।

इसके जवाब में कुछ युवा आवाज़ें उभरती हैं, जो कहती हैं कि संभावित खतरों के डर से बेटियों को उनके हक से वंचित करना अन्याय है। अगर ज़मीन के दुरुपयोग का भय है, तो ऐसे कानून बनाए जाएँ जो यह सुनिश्चित करें कि संपत्ति समुदाय के भीतर ही रहे। वहीं, दूसरी ओर कुछ इसे क्रांति का प्रतीक मानते हैं। उनका कहना है कि देश की अन्य बेटियों को मिलने वाला हक आदिवासी बेटियों का भी अधिकार है। यह फैसला लाखों महिलाओं के लिए आशा की किरण है, जो सदियों से चली आ रही परंपराओं की दीवारों को तोड़ने का साहस जुटा रही है।

धइया की यह लड़ाई अब केवल एक परिवार की कहानी नहीं, बल्कि हर उस बेटी की हुंकार बन गई है, जिसे परंपराओं की जंजीरों ने जकड़ा था। सुप्रीम कोर्ट ने न सिर्फ़ कानूनी तर्कों की बुनियाद रखी, बल्कि न्याय, समानता और विवेक की लौ को भी प्रज्वलित किया। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि भेदभाव को पोषित करने वाले रिवाज़ संविधान के अनुच्छेद 15(1) का उल्लंघन हैं, जो लिंग, धर्म या जाति के आधार पर किसी भी प्रकार के भेद को नकारता है। यह फैसला उन 730 आदिवासी समुदायों के लिए एक नए युग का सूत्रपात हो सकता है, जहाँ बेटियों को उनके पैतृक हक से वंचित रखा जाता रहा है।

मगर सवाल अब भी कायम है—क्या यह फैसला धरातल पर अपनी सार्थकता सिद्ध कर पाएगा? आदिवासी समाज में दो स्पष्ट धड़े उभर रहे हैं: एक इसे प्रगति का प्रतीक मानता है, तो दूसरा इसे अपनी सांस्कृतिक अस्मिता पर आघात के रूप में देखता है। धइया के पोते की सादगी भरी बात, "हमने तो सिर्फ़ अपनी दादी के हक की लड़ाई लड़ी, और अदालत ने भी यही कहा," साधारण लग सकती है, मगर इसके पीछे छिपी है वह अदम्य हिम्मत, जो सदियों पुरानी परंपराओं को चुनौती देती है।

यह फैसला एक नई बहस का आगाज़ है—यह महज़ ज़मीन और संपत्ति का मसला नहीं, बल्कि बेटियों के सम्मान, उनकी पहचान और उनके जन्मसिद्ध अधिकारों की लड़ाई है। यह एक ऐसी जंग है, जो परंपरा और आधुनिकता के बीच की खाई को पाटने की कोशिश करती है। क्या आदिवासी बेटियाँ अपनी ज़मीन पर अपना हक कायम कर पाएँगी? या परंपराओं की ऊँची दीवारें इस बदलाव को थाम लेंगी? समय ही इसका जवाब देगा, पर धइया की पुकार ने एक सत्य को रेखांकित कर दिया—बदलाव की बयार बह चुकी है, और अब इसे कोई रोक नहीं सकता।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

जिन स्वाद चखें या ब्रज रज कौ, बैकुंठ के स्वाद कू फीकौ बतावें

या ब्रज कौ वास मिले विनकू,
जो नित्य किशोरी कौ ध्यान लगावें,
जो गिरि गोवर्धन श्रीयमुना और
ब्रज रज कू नित शीश नवावें।
या ब्रज की रज के कण-कण कू, ब्रह्मा दिक सुर
नर मुनि ललचावें,
जिन स्वाद चखें या ब्रज रज कौ,
बैकुंठ के स्वाद कू फीकौ
बतावें।।
(दो)
श्रीराधा कृष्ण रटूं दिन रैन,
नहि दूजौ कोई नाम सुहावै,
मेरी प्रीत लगी मनमोहन ते,
जाकि मोहनी मूरत मैं समावै।
मेरौ छीन लियौ सुख चैन सबहि,
अब कोई कहा धीर-धरावै,
भई बावरी आयकें ब्रज,
जहां माखन चोर त्रिलोकी कहावै।।

डॉ. गोपाल चतुर्वेदी (प्रख्यात साहित्यकार एवं आध्यात्मिक पत्रकार) छटीकरा रोड़, वृन्दावन

आचार्य पीठ में 51 वां अष्ट-दिवसीय श्रीमद्भागवत जयंती व श्रीराधा जन्म महोत्सव 31 अगस्त से

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। सेवाकुंज-इमलीतला क्षेत्र स्थित श्रीआचार्य पीठ में श्रीमद्भागवत सेवा संस्थान (रजि.) के तत्वावधान में अष्टदिवसीय श्रीमद्भागवत जयंती एवं श्रीराधा जन्म महोत्सव आचार्य पीठाधीश्वर भागवत भूषण स्वामी यदुनंदनाचार्य महाराज के पावन सानिध्य में विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के मध्य 31 अगस्त से 07 सितंबर 2025 पर्यन्त अत्यन्त श्रद्धा व धूमधाम के साथ आयोजित किया गया है।

जानकारी देते हुए डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया है कि बैकुंठवासी स्वामी ब्रजरमाणाचार्य महाराज की पावन स्मृति में एवं आचार्य पीठाधीपति रामानुज सम्प्रदायाचार्य, बैकुंठवासी स्वामी किशोरीरमाणाचार्य महाराज की सद्प्रेरणा से आयोजित होने वाले इस अष्टदिवसीय महोत्सव का शुभारंभ 31 अगस्त को प्रातः 7 बजे गणपति पूजन, कलश स्थापना व प्रियाजी का महाभिषेक विषेशार्चन के साथ होगा।तत्पश्चात 31 अगस्त से 07 सितंबर तक नित्यप्रति प्रातः 7 से 12 बजे तक वेदज्ञ विद्वानों के द्वारा श्रीमद्भागवत मूल पारायण पाठ किया जायेगा।तत्पश्चात अपराह्न 4 बजे से सायं 7 बजे तक आचार्य पीठ के युवराज वेदान्त आचार्य महाराज अपनी सुमधुर वाणी के द्वारा देश-विदेश से आए समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक प्रवचन श्रवण कराएंगे।इसके अलावा इस आयोजन में सत्यनारायण भगवान की तुलसी अर्चना, विष्णु सहस्त्रनाम पाठ एवं श्रीमद्भगवतगीता पाठ आदि के अनुष्ठान भी संपन्न होंगे।

डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया है कि 07 सितम्बर को अपराह्न 3 बजे से बधाई गायन एवं वृहद संत-विद्वत सम्मेलन आयोजित किया गया है। श्रीरामानुज सम्प्रदाचार्य जगद्गुरु स्वामी अनिरुद्धाचार्य महाराज की अध्यक्षता में आयोजित वृहद सन्त सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि के रूप में जगद्गुरु कार्ष्णि स्वामी गुरु शरणानंद महाराज के अलावा देश के कई प्रख्यात संत, विद्वान और धर्माचार्य आदि भाग लेंगे।

समाजसेवी ओपी भाटिया ने पांडु नगर में कराया राम जानकी मंदिर का भव्य निर्माण

सुनील बाजपेई

कानपुर। इस महानगर में धर्म और अध्यात्म का प्रभाव लगातार बढ़ता जा रहा है, जिसके फलस्वरुप भगवान में आस्था रखने वाले लोग भव्य मंदिरों का भी निर्माण कराने में पीछे नहीं है। ऐसे ही राम जानकी के भव्य मंदिर का निर्माण यहां पांडव नगर के महारानी लक्ष्मीबाई पार्क में भी किया गया है। श्री राम जानकी का यह भव्य मंदिर भक्तों की आस्था का भी केंद्र बना हुआ है ,जहां पर वह प्रतिदिन पूजा, अर्चना करने भी आते हैं।

हर किसी के सुख - दुख में सदैव खड़े होने वाले, समाजसेवा के क्षेत्र में भी अग्रणी ट्रांसपोर्टर ओमप्रकाश भाटिया द्वारा निर्मित कराए गए इस भव्य राम जानकी मंदिर में भगवान श्री सीता राम और लक्ष्मण के साथ ही राधा कृष्ण ,भगवान शंकर और पार्वती के साथ मां दुर्गा अदि की भी भव्य मूर्तियां स्थापित की गई हैं।

इस बार के श्री कृष्ण जन्मोत्सव पर भी श्री रामजानकी मंदिर में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्रद्धालुओं ने बड़ी संख्या में पहुंचकर भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव को बड़ी श्रद्धा के साथ बहुत उत्साहपूर्वक धूमधाम से मनाया। जैसे ही रात को 12:00 बजे इस भव्य राम जानकी मंदिर में घंटा-घड़ियाल और शंखनाद के बीच कान्हा का जन्मोत्सव मनाते हुए भक्तों ने लड्डू गोपाल को पालने में झुलाया।

इस दौरान आयोजित भजन संध्या में प्रसिद्ध भजन गायक कलाकारों ने मनमोहक प्रस्तुतियों ने भक्तों को झूमने पर भी मजबूर कर दिया। इस अवसर पर सतीश कुमार चड्ढा, मारुत सेठ, ब्रिजकिशोर गुप्त, जयदीप दुआ, हिमांशु तांगड़ी, गगन पांडेय, प्रदीप दीक्षित,अविनाश त्रिपाठी, प्रियंका, आशा भाटिया समेत ,आर-बी.एस.चौहान, आर.के. श्रीवास्तव, मनोज कुमार गुप्ता ,मानसी जयसवाल प्रियंका, रुसिया ,नीलम और उषा त्रिपाठी आदि लोग मौजूद रहे।

भारत क़े डिजिटल स्वाधीनता और तकनीकी आत्मनिर्भरता की दिशा में तेज़ी से कदम बढ़ाने की चर्चा जोरों पर! क्या वैश्विक डिजिटल परिदृश्य में भारत द्वारा एक क्रांतिकारी बदलाव देने की रणनीति अंतिम दौर में पहुंची?

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर आज सूचना व प्रौद्योगिकी का युग चल पड़ा है, मानव सभ्यता का इतिहास यह बताता है कि जो भी राष्ट्र ज्ञान, सूचना और तकनीक पर नियंत्रण स्थापित करता है, वही भविष्य की दिशा तय करता है। जो हम वर्तमान परिपेक्ष में चल रहे वैश्विक युद्धों, टैरिफ रूपी डर का डंडा व हर ओर मलाई की चादर अपनी तरफ खींचने की प्रथा जो चल पड़ी है उस परिपेक्ष में, मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र ऐसा मानता हूं कि 20 वीं सदी में औद्योगिक क्रांति ने दुनियाँ का चेहरा बदला, तो 21वीं सदी में सूचना और डिजिटल क्रांति ने मानव जीवन को पूरी तरह परिवर्तित कर दिया। इस क्रांति के केंद्र में आज तक गूगल, फेसबुक, अमेज़न और क्रोम जैसी विदेशी कंपनियाँ रही हैं। लेकिन अब यूट्यूब सहित अन्य प्लेटफॉर्म्स पर चर्चा जोरों से चल रही है कि भारत ने अपना स्वदेशी सर्च इंजन लॉन्च कर दुनियाँ की दूसरी सबसे बड़ी आबादी और सबसे तेज़ी से बढ़ती डिजिटल अर्थव्यवस्था अब अपने डिजिटल भविष्य का नेतृत्व खुद करेगी।यह न केवल तकनीकी उपलब्धि होंगी, बल्कि आत्मनिर्भर भारत की ओर निर्णायक कदम भी होगा। हालांकि प्रौद्योगिकी प्लेटफॉर्म सहित गवर्नमेंट के अन्य प्लेटफार्म पर सर्च करने पर अधिकृत रूप से भारत द्वारा ऐसी कोई भी घोषणा नहीं की गई है ऐसा मैंने पाया। मैं ऐसा मानताहूं कि भारत इंटरनेट उपयोगकर्ताओं के मामले में चीन के बाद दूसरा सबसे बड़ा देश है। 85 करोड़ से अधिक सक्रिय इंटरनेट यूज़र और 55 करोड़ से अधिक सोशल मीडिया उपभोक्ता भारत को वैश्विक डिजिटल बाज़ार का केंद्र बनाते हैं। लेकिन इस विशाल जनसंख्या के डेटा और सूचना पर दशकों से विदेशी कंपनियों का वर्चस्व रहा है। गूगल 97 पेसेंट सर्च इंजन मार्केट पर कब्ज़ा रखता है, फेसबुक और इंस्टाग्राम सोशल मीडिया पर राज करते हैं, और क्रोम भारत का सबसे लोकप्रिय ब्राउज़र है।यह स्थिति केवल व्यापारिक प्रभुत्व तक सीमित नहीं रही, बल्कि भारत की डिजिटल संप्रभुता पर भी प्रश्न खड़ा करती रही। उपयोगकर्ताओं की गतिविधियों, रुचियों और व्यवहार का विशाल डेटा विदेशी सर्वरों पर जमा होता रहा, जिससे न केवल अरबों डॉलर का मुनाफ़ा विदेश जाता रहा बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा के लिहाज़ से भी खतरे पैदा हुए। इसी पृष्ठभूमि में भारत सरकार और निजी आईटी कंपनियों ने मिलकर एक ऐसा सर्च इंजन विकसित करना जरूरी हो गया है जो भारतीय ज़रूरतों और भारतीय मूल्यों के अनुरूप हो। जिसमें इस तरह की तकनीकी हो कि वह भारत की 22 अधिकृत भाषाओं में भी रूपांतरित होकर के परफॉर्मेंस करें।यह नया सर्च इंजन अत्याधुनिक तकनीक का प्रतीक होना चाहिए।इसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), मशीन लर्निंग (एमएल), बिग डेटा एनालिटिक्स और नैचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (एनएलपी) जैसी तकनीकों का समावेश किया गया हो। हालांकि इन सभी गुणों से सुसज्जित सर्च इंजन भारत में लॉन्च हो गया है ऐसी चर्चा यूट्यूब पर चल रही है परंतु अधिकृत रूप से भारत सरकार द्वारा सूचना की जानकारी नहीं आई है? चूँकि 21वीं सदी में डेटा को ₹नया तेल₹ कहा जाता है।गूगल औरफेसबुक का साम्राज्य इसी डेटा-आधारित अर्थव्यवस्था पर खड़ा है। वे उपयोगकर्ताओं की हर गतिविधि, क्या खोजा, क्या खरीदा, किससे जुड़ा, कहाँ गया, सबका रिकॉर्ड रखते हैं और उसे विज्ञापन कंपनियों को बेचते हैं।इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, भारत क़े डिजिटल स्वाधीनता और तकनीकी आत्मनिर्भरता की दिशा में तेजी से कदम बढ़ाने की चर्चा जोरों पर!

साथियों बात अगर हम भारत के लिए ऐसे सर्च इंजन की जरूरत की करें जो भारत की 22 अधिकृत भाषाओं को कवर करें तो, उसमें ऐसी तकनीकी होनीं चाहिए (1) भारतीय भाषाओं का समर्थन-यह इंजन 22 आधिकारिक भारतीय भाषाओं और 50 से अधिक बोलियों में खोज परिणाम प्रदान कर सके। यदि कोई उपयोगकर्ता भोजपुरी में कोई सवाल करता है, तो उसे भोजपुरी में ही प्रासंगिक परिणाम मिलेंगे।(2)लोकलाइज्ड एल्गोरिद्मः-गूगल की तरह केवल अंग्रेज़ी या वैश्विक पैटर्न पर आधारित न होकर यह सर्च इंजन भारतीय संस्कृति, भूगोल और समाज को ध्यान में रखकर जानकारी छाँटता हो।(3)तेज़ और सटीक परिणामः- एआई आधारित एल्गोरिद्म उपयोगकर्ता के सर्च पैटर्न को समझकर व्यक्तिगत और सटीक जानकारी प्रदान करता हो, लेकिन डेटा का दुरुपयोग किए बिना। (4) वॉइस सर्च की सुविधाः भारत जैसे देश में जहां कई लोग टाइपिंग की बजाय बोलकर जानकारी खोजना पसंद करते हैं, वहाँ यह इंजन वॉइस सर्च को हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में सपोर्ट करता हो। (5) तकनीकी संरचनाः आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और भारतीय भाषाओं का संगम हो।

साथियों बात अगर हम भारत का यह सर्च इंजन₹डेटा भारत में, भारत के लिए₹ की नीति पर आधारित होने की करें तो, (1) भारतीय सर्वर और डेटा सेंटरः सभी उपयोगकर्ताओं का डेटा देश के भीतर सुरक्षित सर्वरों में संग्रहित हो। (2) डेटा गोपनीयता कानूनः यह इंजन भारत के नए ₹डिजिटल डेटा प्रोटेक्शन एक्ट₹ का पालन करता हो, जिससे नागरिकों का व्यक्तिगत डेटा विदेश नहीं जाएगा। (3) निजी जानकारी का नियंत्रणः उपयोगकर्ता चाहे तो अपनी गतिविधियों को पूरी तरह निजी रख सकता हो। कोई भी विज्ञापनदाता बिना अनुमति डेटा तक नहीं पहुँच सकता हो।इससे भारत न केवल अपने नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करेगा बल्कि डिजिटल स्वतंत्रता की दिशा में भी दुनिया के लिए उदाहरण बनेगा। जो रेखांकित करने वाली बात होगी।

साथियों बात अगर हम इस नए सर्च इंजन से स्टार्टअप और ई-कॉमर्स व शिक्षा, शोध और ज्ञान-परंपरा के लिए नया युग की करें तो, (1) भारत में 1 लाख से अधिक स्टार्टअप्स हैं, लेकिन

उन्हें डिजिटल विज्ञापन और ग्राहक तक पहुँचने के लिए गूगल-फेसबुक को भारी रकम चुकानी पड़ती थी।यह नया सर्च इंजन उन्हें, कम लागत पर स्थानीय विज्ञापन सुविधा देगा।₹मेड इन इंडिया₹ उत्पादों को प्राथमिकता देगा।छोटे दुकानदारों और ग्रामीण उद्यमियों को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लाएगा।इससे डिजिटल अर्थव्यवस्था में करोड़ों नए अवसर पैदा होंगे।(2) शिक्षा, शोध और ज्ञान-परंपरा-भारत की सदियों पुरानी ज्ञान परंपरा रही है, लेकिन गूगल पर भारतीय स्रोतों को अक्सर प्राथमिकता नहीं मिलती। इस सर्च इंजन ने इसे सुधारने का प्रयास किया जायेगा।भारतीय विश्वविद्यालयों और शोध पत्रों को प्राथमिकताः आईआईटी, आईआईएससी, जेएनयू और अन्य संस्थानों के शोधपत्र अब अधिक आसानी से उपलब्ध होंगे।डिजिटल पुस्तकालय का एकीकरणः भारतीय भाषाओं के प्राचीन ग्रंथ और साहित्य भी खोज परिणामों में शामिल होंगे।छात्रों और शोधार्थियों को प्रामाणिक जानकारीः अब उन्हें विदेशी स्रोतों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा।

साथियों बात अगर हम, गूगल और फेसबुक को सीधी चुनौती, वैश्विक प्रतिक्रिया और भू-राजनीतिक महत्व एवं चुनौतियाँ और भविष्य की करें तो, अब तक गूगल का नाम ही ₹सर्च₹ का पर्याय माना जाता हैं। लेकिन भारत का नया सर्च इंजन इस एकाधिकार को तोड़ने की क्षमता रखता हो तो (1) विज्ञापन बाज़ारः भारतीय व्यापारी तब गूगल ऐडवर्ड्स या फेसबुक ऐड्स पर निर्भर नहीं रहेंगे। उन्हें सस्ता और स्थानीय विकल्प मिलेगा।(2) कंटेंट प्राथमिकताः भारतीय वेबसाइट्स और स्थानीय कंटेंट को सर्च परिणामों में प्राथमिकता दी जाएगी, जो गूगल अक्सर नज़रअंदाज़ करता है (3) पारदर्शिताः गूगल और फेसबुक के एल्गोरिद्म अक्सर रहस्यमय रहते हैं, लेकिन भारत का इंजन अपने एल्गोरिद्म और विज्ञापन प्रणाली में पारदर्शिता रखेगा।(3) इसका सीधा असर वैश्विक डिजिटल राजनीति पर पड़ेगा। अमेरिका की बड़ी कंपनियाँ भारत के इस कदम को अपनी आर्थिक ताक़त पर हमला मानेंगी और कूटनीतिक दबाव बना सकती हैं।वैश्विक प्रतिक्रिया और भू-राजनीतिक महत्व-भारत का यह कदम केवल तकनीकी या आर्थिक मामला नहीं है, यह भू-राजनीति से भी जुड़ा है। अमेरिकाः-गूगल और फेसबुक जैसी कंपनियाँ अमेरिकी अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं, वे भारत की इस पहल का कड़ा विरोध कर सकती हैं।चीन और रूसः- चीन पहले ही अपने बाईडू और रूस अपने यांडेक्स सर्च इंजन के माध्यम से डिजिटल स्वायत्तता हासिल कर चुके हैं। वे भारत का स्वागत करेंगे और सहयोग की पेशकश कर सकते हैं।युरोपीय संघः-जो पहले से डेटा सुरक्षा को लेकर सख़्त रुख अपनाता रहा है, वह भारत की इस पहल का समर्थन कर सकता है।इस प्रकार भारत का यह कदम वैश्विक इंटरनेट गवर्नेंस में शक्ति संतुलन को बदल देगा।चुनौतियाँ और भविष्यः-(1) किसी भी बड़े कदम की तरह इस पहल के सामने भी चुनौतियाँ होंगी।(2) गूगल जैसी कंपनियों के पास अरबों डॉलर का अनुसंधान बजट है।(3) उपयोगकर्ताओं की आदत बदलना कठिन है, क्योंकि गूगल का नाम ही ₹सर्च₹ का पर्याय बन चुका है।(4)साइबर हमलों और हैकिंग से सुरक्षा सुनिश्चित करनी होगी। आर्टिकल के अंत में बताते चलूं कि, भारत की आईटीप्रतिभा सरकार का समर्थन और जनता का विश्वास इन चुनौतियों को अवसर में बदल सकते हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि भारत क़े डिजिटल स्वाधीनता और तकनीकी आत्मनिर्भरता की दिशा में तेज़ी से कदम बढ़ाने की चर्चा जोरों पर !क्या वैश्विक डिजिटल परिदृश्य में भारत द्वारा एक क्रांतिकारी बदलाव देने की रणनीति अंतिम दौर में पहुंची ?20वीं सदी में औद्योगिक क्रांति ने दुनियाँ का चेहरा बदला तो 21वीं सदी में सूचना व डिजिटल क्रांति ने मानव जीवन को ही बदल दिया ?

अगर ट्रैफिक जाम 12 घंटे तर रहे, तो क्यों दें टोल? टोल वसूली पर NHAI की याचिका पर SC का फैसला सुरक्षित

सुप्रीम कोर्ट ने एनएचएआई से पूछा कि 65 किलोमीटर के राजमार्ग को तय करने में 12 घंटे लगने पर 150 रुपये का टोल क्यों लिया जा रहा है। कोर्ट ने केरल हाई कोर्ट के टोल निलंबन आदेश के खिलाफ एनएचएआई की याचिका पर सुनवाई करते हुए यह टिप्पणी की। कोर्ट ने सड़क की खराब स्थिति और यातायात जाम पर चिंता जताई।

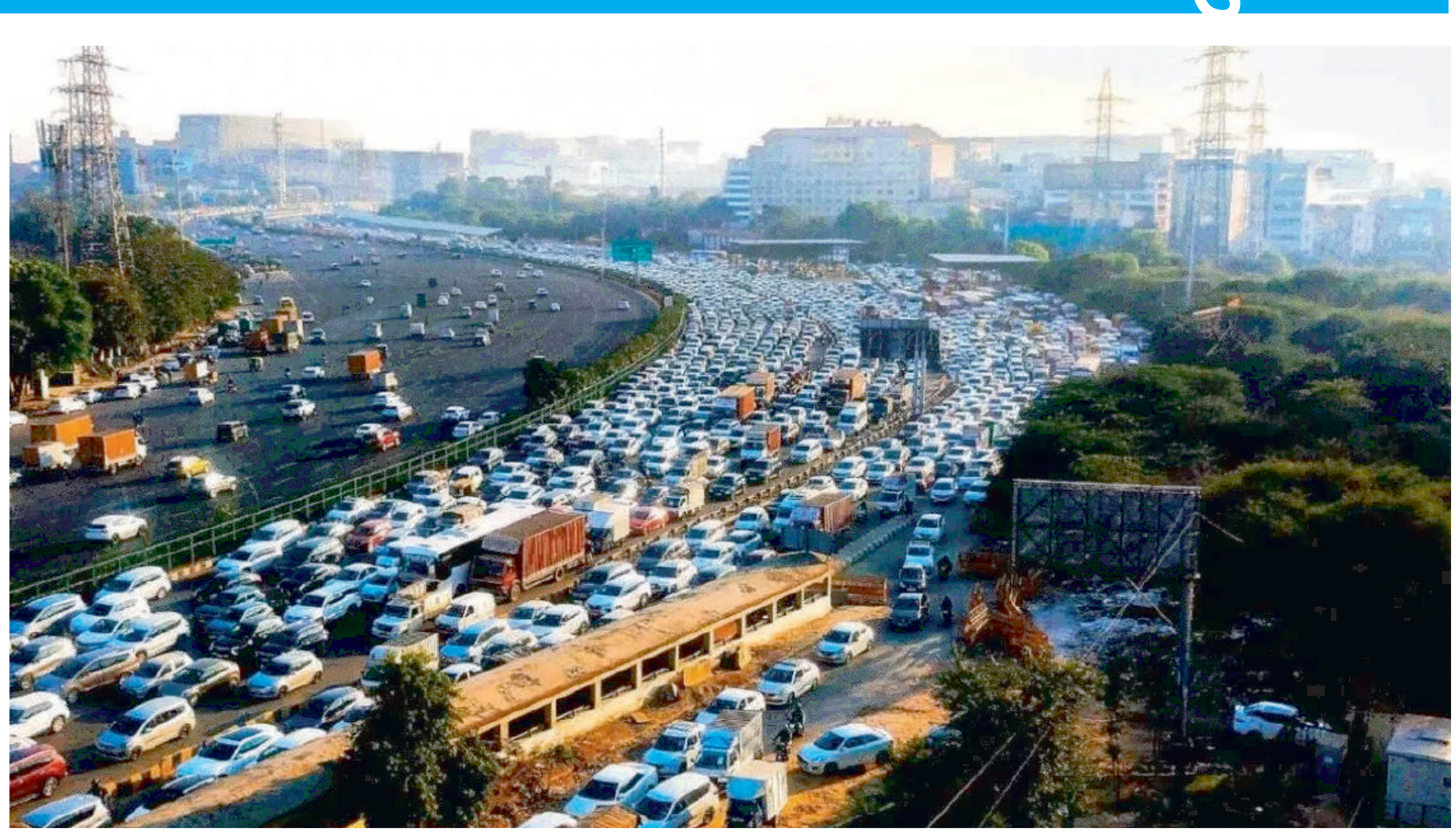

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI) से पूछा कि अगर 65 किलोमीटर लंबे राजमार्ग को तय करने में 12 घंटे लगते हैं, तो किसी यात्री को 150 रुपये के टोल का भुगतान करने के लिए क्यों कहा जाए? प्रधान न्यायाधीश बीआर गवई, जस्टिस के. विनोद चंद्रन और जस्टिस एनवी अंजारिया की पीठ ने यह टिप्पणी NHAI और टोल वसूलने का अधिकार रखने वाली कंपनी गुरुवायूर इन्फ्रास्ट्रक्चर द्वारा दायर याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए की। याचिका में त्रिचूर (केरल) के पलियेक्कारा टोल प्लाजा पर टोल संग्रह को निलंबित करने के केरल हाई कोर्ट के आदेश को चुनौती दी गई थी।

मामले पर CJI ने क्या कहा?

सीजेआइ ने कहा, अगर किसी व्यक्ति को सड़क के एक छोर से दूसरे छोर तक जाने में 12 घंटे लगते हैं, तो उसे 150 रुपये क्यों देने चाहिए? जिस सड़क पर एक घंटे का समय लगने की उम्मीद है, उसमें 11 घंटे और लगते हैं और यात्रियों को टोल भी देना पड़ता है। सुनवाई के दौरान पीठ को सप्ताहांत में इस मार्ग पर लगभग 12 घंटे तक यातायात जाम रहने के बारे में बताया गया। हाई कोर्ट ने छह अगस्त को राष्ट्रीय राजमार्ग 544 के एडापल्ली-मन्नुथी खंड की खराब स्थिति और निर्माण कार्यों के कारण उत्पन्न गंभीर यातायात जाम के आधार पर टोल निलंबन का आदेश दिया था।

NHAI ने कोर्ट में दी यह दलील

NHAI की ओर से सालिसिटर जनरल तुषार मेहता और गुरुवायूर इन्फ्रास्ट्रक्चर की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता श्याम दीवान की दलीलें सुनने के बाद पीठ ने कहा कि हम हर पहलू पर विचार करेंगे। जस्टिस चंद्रन ने कहा कि जिस दुर्घटना के कारण यह सड़क अवरुद्ध हुई, वह कोई दैवीय कृत्य नहीं था, जैसा कि मेहता ने तर्क दिया। एक ट्रक के गड्ढे में गिर जाने के कारण यह परिस्थिति उत्पन्न हुई थी। मेहता ने कहा कि जहां अंडरपास का निर्माण कार्य चल रहा था, वहां NHAI ने सर्विस रोड उपलब्ध कराई थी। लेकिन, उन्होंने स्वीकार किया कि मानसून की वर्षा ने निर्माण कार्य की गति धीमी कर दी है।

ठेकेदारों को दोषी ठहराया

उन्होंने एक उदाहरण भी दिया, जिसमें टोल को निलंबित करने के बजाय आनुपातिक रूप से कम करने का सुझाव दिया गया था। हालांकि, जस्टिस चंद्रन ने टिप्पणी की कि 12 घंटे की यह कठिन परीक्षा किसी भी आनुपातिक समायोजन से कहीं अधिक थी। वहीं, गुरुवायूर इन्फ्रास्ट्रक्चर ने कहा कि उसने 60 किलोमीटर का क्षेत्र अपने नियंत्रण में रखा है। उसने सर्विस रोड की रुकावटों के लिए, पीएसजी इंजीनियरिंग सहित तीसरे पक्ष के ठेकेदारों को दोषी ठहराया।

टोयाटा कैमरी Sprint Edition लॉन्च; 48.50 लाख कीमत, स्पोर्टी लुक और नए कलर मिले

टोयाटा मोटर्स ने भारत में नई Toyota Camry Sprint Edition लॉन्च किया है जिसमें कॉस्मेटिक बदलाव किए गए हैं। यह फुली-लोडेड वेरिएंट पर आधारित है और इसकी कीमत 48.5 लाख रुपये से 50 हजार रुपये ज्यादा है। इसे पांच कलर ऑप्शन में पेश किया गया है जिसमें मैट ब्लैक फिनिश शामिल है। इसमें स्पोर्टी लुक के लिए ब्लैक-आउट टेप मैट ब्लैक अलॉय व्हील्स और स्पोर्ट्स किट भी हैं।

नई दिल्ली। टोयोटा मोटर्स ने भारत में नई Toyota Camry को साल 2024 के आखिर में लॉन्च किया गया था। अब कंपनी इसका स्पेशल एडिशन लॉन्च की है। इसके स्पेशल एडिशन का नाम Toyota Camry Sprint Edition है। इसे कुछ खास कॉस्मेटिक बदलाव के साथ लेकर आया गया है। आइए इसके बारे में विस्तार में जानते हैं।

डिजाइन और कीमत : यह फुली-लोडेड वेरिएंट पर बेस्ड है। भारत में 2025 Toyota Camry को 48.5 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में ऑफर किया जाता है। इसके Sprint Edition की कीमत 50 हजार रुपये ज्यादा है। इसे पांच शानदार कलर ऑप्शन में लेकर आया गया है, जो इमोशनल रेड और मैट ब्लैक, प्लैटिनम व्हाइट पर्ल और मैट ब्लैक, सीमेंट ग्रे और मैट ब्लैक, प्रीशियस मेटल और मैट ब्लैक, डार्क ब्लू मेटैलिक और मैट ब्लैक है।

इसके मैट ब्लैक को सभी पांच कलर के साथ पेश किया जाता है। Camry Sprint Edition के बोनट, रूफ और ट्रंक पर लगा एक ब्लैक-आउट टेप दिया गयाहै। इसमें स्पोर्टी लुक देने वाले मैट ब्लैक अलॉय व्हील्स भी दिए गए हैं। इसे एक्सक्लूसिव स्पोर्ट्स किट दिया जा रहा है, जिसमें फ्रंट बॉडी किट,

रियर बॉडी किट और एक रियर स्पॉइलर शामिल है। इसके रूफ, बोनट और ट्रंक पर ब्लैक टेप दी गई है। इसमें डोर वार्निंग लैंप्स और एंबिएंट लाइटिंग भी है।

इंजन और फीचर्स : इसमें मिलने वाले फीचर्स की बात करें, तो इसमें स्टैंडर्ड मॉडल के समान ही सुविधाएं दी गई हैं। यह 9 एयरबैग, एक व्यापक ADAS सूट, 360-डिग्री कैमरे, वेंटिलेटेड फ्रंट सीटें, मेमोरी फंक्शन के साथ 10-तरफा पावर एडजस्टेबल ड्राइवर सीट, HUD समेत और भी कई बेहतरीन फीचर्स से लैस है। इसमें 2.5L हाइब्रिड इंजन दिया गया है, जो 230 PS की पावर जनरेट करता है। इसमें Eco, Normal और Sports ड्राइविंग मोड भी दिया गया है। कंपनी का दावा है कि उनकी यह कार 25.49 किमी/लीटर तक का माइलेज देती है। इसमें सेल्फ-चार्जिंग हाइब्रिड सिस्टम है, न कि प्लग-इन हाइब्रिड सिस्टम।

रॉयल इनफील्ड फ्लाइंग Flea C6 का टीजर जारी, लेह में हुई टेस्टिंग, जानें क्या है खास?

Royal Enfield ने अपनी पहली इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल Flying Flea C6 का वीडियो जारी किया है जिसमें इसे लेह के मुश्किल रास्तों पर टेस्ट करते हुए दिखाया गया है। टेस्टिंग में खड़ी चढ़ाई और ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर बाइक का प्रदर्शन बेहतर रहा। Flying Flea C6 में रेट्रो स्टाइलिंग के साथ आधुनिक फीचर्स हैं और इसमें 125cc या 150cc की बाइक के बराबर प्रदर्शन मिलने की उम्मीद है।

नई दिल्ली। Royal Enfield ने हाल ही में अपने सोशल मीडिया पर अपनी पहली इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल Flying Flea C6 का एक वीडियो जारी किया है। इस वीडियो बाइक की टेस्टिंग को दिखाया गया है। जिसमें इसे ऊंचाई वाले रास्ते पर आसानी से चढ़ाते हुए दिखाया गया है। कंपनी ने इस वीडियो को जारी करते हुए राइड एंड टेस्टेड सीरीज कहा है। आइए जानते हैं कि Royal Enfield Flying Flea C6 के टीजर में क्या कुछ खास देखने के लिए मिला है?

लेह के मुश्किल रास्तों पर हुई टेस्टिंग

Royal Enfield Flying Flea C6 के टीजर में देखने के लिए मिल रहा है कि इस लेह के मुश्किल रास्तों पर टेस्ट किया जा रहा है। इस टेस्टिंग के दौरान कुछ खड़ी चढ़ाई, ढलान, ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर इसे चलाया जा रहा है। वीडियो में इसकी टेस्टिंग केवल राइडर और पीलियन दोनों के साथ अलग-अलग किया जा रहा है। इलेक्ट्रिक बाइक में कई राइड मोड का इस्तेमाल करके भी टेस्ट किया जा रहा है। टेस्टिंग के दौरान इसके परिणाम बेहतर देखने के लिए मिल रहे हैं। Royal Enfield Himalayan Electric की एक झलक भी देखने के लिए मिली है, जो बताता है कि कंपनी इन दोनों इलेक्ट्रिक बाइक की टेस्टिंग को जा रही है।

डिजाइन और स्पेसिफिकेशन्स

इलेक्ट्रिक बाइक Flying Flea C6 में Royal Enfield की सिग्नेचर रेट्रो स्टाइलिंग को एक आधुनिक स्पर्श दिया गया है। बाइक को एक बेल्ट ड्राइव के साथ एक मिड-माउंटेड मोटर मिलती है जिससे 125cc या 150cc की बाइक के बराबर प्रदर्शन मिलने की उम्मीद है। इसमें एल्युमीनियम चेसिस के साथ-साथ गर्डर-स्टाइल फ्रंट फोर्क और दोनों सिरों पर 18-इंच के अलॉय व्हील का इस्तेमाल किया गया है। इसमें गोल LED हेडलाइट, स्प्लिट सीटिंग के साथ ही और भी कई बेहतरीन फीचर्स दिए गए हैं।

"बक्से में सहेजी धूप"

जब कन्या ज़रा-सी सयानी हुई,
गली-गली उसकी आहट फैल जाती—
जैसे कचनार की पहली कली
अचानक सबकी नजर में आ गई हो।

अम्मा की आँखों में चिंता और ममता की छाया—
'सीख ले बिटिया
ससुराल की चौखट पार करते ही
तेरे हाथों का हुनर ही तेरी पहचान होगा।'

तब पाठशाला रसोई में थी,
और पुस्तकें मौसी-बुआ के हाथ।
छत पर धूप के गलीचे बिछाकर
क्रोशिया के फंदों में दिन उलझते,
रेशमी धागों में सपने बुनते,
ब्लॉक प्रिंट की चादरों में रंग उतरते—
मानो बिटिया की किस्मत रंगीन की जा रही हो।

पलंग के नीचे बक्सा—
धीरे-धीरे भरता
सिर्फ वस्त्रों से नहीं,
बल्कि समय के ठहरे स्पर्श से,
और रिश्तों की अनदेखी ऊष्मा से।

भाभियाँ पान-मसाले की महक लिए
चटाई गूँथ देतीं,
चाची टोकरी में अपना आशीष रख देतीं,
और पुराने रूमालों पर फूल टाँकते हाथ
मानो मौन में कह देते—
'तू खाली हाथ नहीं जा रही, बिटिया।'

मौसी की धीमी फुसफुसाहट—
'बोलना जैसे ओस की बूँद गिरती है,
और सास के सामने मुस्कुराना—
जैसे शरद चाँदनी खिड़की पर उतरती है।'

बिटिया हर गलती से पहले ठिठक जाती—
डरती कि कहीं कोई न कह दे,
'इसकी अम्मा ने कुछ नहीं सिखाया।'

शादी तब एक अकेले घर का उत्सव नहीं थी,
वो पूरे मोहल्ले की साँझी रचना थी।
हर गली, हर आँगन अपनी साँस उसमें जोड़ता था।

अब वो बक्से नहीं,
ना वो छतें, ना वो दोपहरें।
पर स्मृति की आँच में
अब भी खड़ी है एक बिटिया—
माथे पर बिंदी, आँखों में झिझक,
और मन में पूरे मोहल्ले की अनकही प्रार्थनाएँ।

--- डॉ. प्रियंका सौरभ

दलित बोलें - कांग्रेस का वोट चोरी का पुराना इतिहास, कांग्रेस वोट चोरी की जनक - डॉ. बाबा साहेब को ऐसे ही हराया था चुनाव

कांग्रेस जब भी कमजोर हुई, संविधान के नाम दलितों को गुमराह करना शुरू किया
कांग्रेस चला रही घुसपैठियो को भारत का वोटर बनाके संविधान बदलने का विदेशी एजेंडा, अब नहीं चलेगा
वो वोट चोरी से पटेल की जगह खुद प्रधानमंत्री बने, और वो गांधी सर नेम चुराकर प्रधानमंत्री बनी
एवं 12जून 1975 को प्रयागराज अदालत से वोट चोरी के आरोप में सजा पाकर प्रेस से बचने केलिए साडी के पल्लू से मुँह छुपाकर निकलना पड़ा
और वो सिख दंगों की आड़ में वोट चोरी से प्रधानमंत्री बने - आज उस खानदान का युवा चिराग दूसरे को चोर बोल रहा है।-–
इनके लिए ही बनी एक प्रशिद्ध कहावत हैं –
'नाच न जाने आंगन टेढ़ा'
अर्थ – अपनी अयोग्यता को छुपाने के लिए बहाने बनाना
उदाहरण– बिना कार्यकर्ताओ और संघटन की तैयारी के चुनाव में सिर्फ एक वर्ग के वोटों के सहारे उतरना और वार वार हारने पर कभी EVM – तो कभी चुनाव आयोग पर को कोसना और जनता को भड़काने के लिए फ़ेक न्यूज़ फैलाना।

डॉ. अंबेडकर ने चुनाव आयुक्त से की थी जांच की मांग

उत्तरप्रदेश, संजय सागर सिंह। आज की चर्चा में आम मजदूर दलित वर्ग ने आरोप लगाया कि वोट चोरी जैसे मामलों में कांग्रेस का पूरा इतिहास भरा हुआ है। कांग्रेस के वोट चोरी के इतिहास का सबसे बड़ा प्रमाण डॉ बाबा साहेब का है। कांग्रेस ने 1952 में वोट चोरी करके संविधान निर्माता डॉ. बीआर अंबेडकर जी को षड्यंत्र के तहत चुनाव हराया था। आज कांग्रेस वोट चोरी को लेकर हो-हल्ला मचा रही है। जबकि असलियत यह है कि कांग्रेस की नीति हमेशा वोट चोरी की रही है। तत्कालीन प्रधानमंत्री वोट चोरी के जनक हैं, जिन्होंने दो बार संविधान निर्माता को चुनाव हराया। वो वोट चोरी से पटेल की जगह खुद प्रधानमंत्री बने, और वो गांधी सर नेम चुराकर प्रधानमंत्री बनी एवं 12जून 1975 को प्रयागराज अदालत से वोट चोरी के आरोप में सजा पाकर प्रेस से बचने केलिए साडी के पल्लू से मुँह छुपाकर निकलना पड़ा और वो सिख दंगों की आड़ में वोट चोरी से प्रधानमंत्री बने - आज उस खानदान का युवा चिराग दूसरे को चोर बोल रहा है।

इनके लिए ही बनी एक प्रशिद्ध कहावत हैं - "नाच न जाने आंगन टेढ़ा"

अर्थ - अपनी अयोग्यता को छुपाने के लिए बहाने बनाना

उदाहरण - बिना कार्यकर्ताओ और संघटन की तैयारी के चुनाव में सिर्फ एक वर्ग के वोटों के सहारे उतरना और वार वार हारने पर कभी EVM - तो कभी चुनाव आयोग पर को कोसना और जनता को भड़काने के लिए फ़ेक न्यूज़ फैलाना।

कांग्रेस चला रही घुसपैठियो को भारत का वोटर बनाके संविधान बदलने का झूठा एजेंडा, अब नहीं चलेगा

दलितों ने कांग्रेस को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि कांग्रेस घुसपैठियों को भारत का वोटर बनाकर संविधान बदलने का विदेशी एजेंडा चला रही है। कांग्रेस ने हमेशा संविधान निर्माता का अपमानित करने का काम किया। तब दलितों ने एकजुट होकर कांग्रेस द्वारा चलाए जा रहे संविधान बदलने के षड्यंत्र के जवाब देने हेतु हुंकार भरी थी। इस हुंकार ने न केवल कांग्रेस को सत्ता में आने से रोका बल्कि भाजपा की तीसरी बार सरकार बनाई।

आज जो कांग्रेस संविधान की प्रति लहराते है, उन्हें मामूल होना चाहिए कि संविधान कोई कागज का टुकड़ा नहीं है। बल्कि संविधान वह पवित्र ग्रंथ है, जिनमें लोकतंत्र और देश के नागरिकों के हित सुरक्षित हैं। कांग्रेस लोकतंत्र की मर्यादा का हनन कर रही है। कांग्रेस ने संविधान निर्माता को भारत रत्न से वंचित रखा, जबकि भाजपा ने संविधान निर्माता को भारत रत्न देने के साथ उनके जन्म स्थान और कर्मस्थली पर स्मारक बनाकर नई पहचान दिलाने का काम किया। मोदी योगी राज में दलितों को पूरा सम्मान मिला है इस सरकार ने किसी दलित मजदूर का अहित नहीं किया।

जबकि वर्ष 2014 से पहले दलित उत्पीड़न और पिछड़ेपन के शिकार थे। हर 18वें मिनट में दलितों का उत्पीड़न होता था। उनकी कोई सुध लेने वाला नहीं था, कांग्रेस ने केवल उन्हें सत्ता हथियाने के लिए वोट का हथियार समझा। जब वर्ष 2014 में मोदी ने बतौर प्रधानमंत्री देश की कमान संभाली तो उन्होंने सबसे पहले भाई-भतीजावाद, भ्रष्टाचार, क्षेत्रवाद और जातिवाद जैसे नासूर को न केवल खत्म किया। बल्कि सुशासन, पादर्शिता और अंत्योदय उत्थान का ऐसा मॉडल पेश किया जोकि आज भी देश भर में मिसाल है।

मोदी योगी ने अंत्योदय उत्थान के मॉडल के जरिये समाज की अंतिम पंक्ति के व्यक्ति तक लाभ पहुंचा, जिसका सबसे ज्यादा फायदा ग़रीब दलितों को हुआ। मिशन मेरिट के आधार पर पढ़े लिखे दलित युवाओं को बिना पर्ची-बिना खर्ची नौकरी लगने का सपना साकार हुआ। इसके साथ ही सरकार ने एससी कमीशन, सफाई आयोग और पदोन्नति में आरक्षण की लंबित मांग को भी पूरा किया।

उन्होंने आखिर में कहा कि संविधान निर्माता डॉ. बीआर अंबेडकर जी ने दलित, शोषित, वंचित और पिछड़ों को शिक्षा और समानता का अधिकार दिया। इस अधिकार की बदौलत ही आज दलित ईमानदारी से आगे बढ़ रहे हैं। वहीं, इतिहास के पन्नों की जानकारी समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे, इसको लेकर संविधान सम्मान की मुहिम शुरू की गई है।

उत्तर प्रदेश में छात्रवृत्ति योजनाओं से वंचित दलित छात्र

ओ पी सोनिक

सरकारी दावों के अनुसार देश की आबादी का एक बड़ा हिस्सा सामाजिक सुरक्षा के दायरे में है जो पहले कभी नहीं रहा। इसके पीछे सरकारी योजनाओं की उपलब्धियों को माना जा रहा है। ऐसे तमाम दावों के बावजूद दलितों को छात्रवृत्तियों के रूप पहले से मिली सामाजिक सुरक्षा दलितों की मुट्ठी से फिसलती नजर आ रही है। उत्तर प्रदेश में वंचित वर्गों की छात्रवृत्ति योजनाओं के मामलों में भी कुछ ऐसा ही परिलक्षित हो रहा है। पिछले दिनों उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री और बसपा सुप्रीमो मायावती को वंचित वर्गों की छात्रवृत्ति योजनाओं के सुस्त क्रियान्वन पर ध्यानाकर्षण करना पड़ा। उन्होंने अलीगढ़ स्थित राजा महेन्द्र प्रताप सिंह विश्वविद्यालय के विभिन्न कालेजों में विद्यार्थियों को लंबित छात्रवृत्तियों का लाभ दिलाने की मांग की।

छात्रवृत्ति के सुस्त क्रियान्वयन के कारण ही समय-समय पर संसद में भी छात्रवृत्तियों से संबंधित प्रश्न पूछे जाते रहे हैं। इसी कड़ी में 29 जुलाई 2024 को लोकसभा में संसद सदस्या कुमारी सुधा आर एवं जी एम बालयोगी द्वारा पूछे गए एक प्रश्न के जवाब में मिले आंकड़े चौंकाने वाले हैं। लोकसभा में पेश आंकड़ों के अनुसार उत्तर प्रदेश में वर्ष 2019-20 में दलित वर्ग के 5 लाख 31 हजार विद्यार्थियों को प्री-मैट्रिक छात्रवृत्ति का लाभ मिला, वर्ष 2023-24 में जिनकी संख्या घटकर मात्र 3 लाख 82 हजार रह गयी। वर्ष 2019-20 में दलित वर्ग के 13 लाख 60 हजार विद्यार्थियों को पोस्ट-मैट्रिक छात्रवृत्ति का लाभ मिला जिनकी संख्या वर्ष 2023-24 में घटकर 9 लाख 53 हजार रह गयी, यानि कि उक्त अवधि के दौरान दलित वर्ग के करीब 5 लाख 55 हजार विद्यार्थी छात्रवृत्ति योजनाओं से बाहर हो गए।

उक्त आंकड़ों के आधार पर यह माना जा सकता है कि छात्रवृत्ति योजनाओं पर अमल की प्रक्रिया राजनीतिक इच्छाशक्ति के अभाव में दम तोड़ रही है। छात्रवृत्ति योजनाओं के अमल पर उक्त प्रवृत्ति महज एक प्रदेश तक सीमित नहीं है बल्कि राष्ट्रीय स्तर की राजनीतिक उदासीनता का रूप ले चुकी है। मसलन-देश में वर्ष 2019-20 में अनुसूचित जाति वर्ग के 54 लाख 27 हजार विद्यार्थियों को पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति मिली जिनकी संख्या वर्ष 2023-24 में करीब 8 लाख घटकर मात्र 46 लाख रह गयी। इसी अवधि के दौरान प्री मैट्रिक छात्रवृत्ति के लाभार्थियों की संख्या भी 31 लाख 37 हजार से घटकर 22 लाख 38 हजार रह गयी, यानी कि उक्त अवधि में देश में अनुसूचित जाति वर्ग के करीब 17 लाख विद्यार्थी उक्त योजनाओं से भी बाहर हो गए। देश में अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की छात्रवृत्ति के करीब तीन लाख आवेदन अस्वीकृत हो गए। सरकार द्वारा चलायी जा रहीं विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाएं समाज को शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करती हैं। ऐसी योजनाएं सामाजिक एवं आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के बच्चों को आर्थिक लाभ पहुंचाकर विद्यार्थियों के बीच में पढ़ाई छोड़ने की दर को भी कम करती हैं।

केन्द्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय द्वारा राज्यों को जारी दिशा-निर्देशों के अनुसार सभी राज्य एवं केन्द्र शासित प्रदेश ग्राम पंचायतों के नोटिस बोर्डों, स्कूल कमेटियों एवं अभिभावक-शिक्षक मीटिंग के द्वारा छात्रवृत्ति योजनाओं के प्रति लोगों को जागरूक करेंगे। दलित वर्ग इसकी पुष्टि कम से कम स्थानीय स्तर पर तो सरलता से कर सकता है कि उक्त दिशा-निर्देशों का कितना पालन हो रहा है। छात्रवृत्ति योजनाओं का लाभ अधिक से अधिक पात्र विद्यार्थियों तक पहुंचे और छात्रवृत्ति को अधिक पारदर्शी बनाने के लिए सरकार द्वारा कुछ अहम कदम उठाए गए जिसके तहत आवेदकों को आधार कार्ड, पिछली कक्षा का अंक-पत्र, जाति प्रमाण-पत्र, आय प्रमाण-पत्र, निवास प्रमाण-पत्र और बैंक खाते की आवश्यकता होती है। छात्रवृत्ति योजनाओं के पात्र विद्यार्थियों को राजस्व विभाग से आय प्रमाण-पत्र और निवास प्रमाण-पत्र बनवाने के लिए लंबी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है जिसके कारण अधिकांश विद्यार्थी निर्धारित तिथियों के बीच राजस्व विभाग से आय प्रमाण-पत्र और आवास प्रमाण-पत्र नहीं बनवा पाते। शिक्षा के बढ़ते निजीकरण और व्यवसायीकरण के चलते निजी शिक्षण संस्थान दलित विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति योजनाओं के प्रति हतोत्साहित करते हैं और छात्रवृत्ति से संबंधित आवेदनों को देर से भेजते हैं। शिक्षा के व्यवसायीकरण की प्रवृत्ति ने छात्रवृत्तियों में फर्जीवाड़े के रूप में एक अलग तरह के भ्रष्टाचार को जन्म दिया है। भले ही सरकारी द्वारा छात्रवृत्तियों के फर्जीवाड़े के मामलों में कार्रवाई कर दी जाती है पर पात्र विद्यार्थी तो छात्रवृत्ति से वंचित रह ही जाते हैं।

प्रकृति से खिलवाड़ के खतरनाक नतीजे

ललित गर्ग

भारतीय दर्शन के अनुसार, मानव सभ्यता का विकास हिमालय और उसकी नदी घाटियों से माना जाता है। आज विकास के तरीकों और जल्दबाजी से समूचे हिमालय के दरकने का सिलसिला जारी है। उत्तराखंड के उत्तरकाशी में धराली गांव समेत तीन स्थानों पर आई प्राकृतिक आपदा एक चेतावनी है कि प्रकृति से खिलवाड़ के नतीजे भयानक हो सकते हैं। धराली और हर्षिल में बाढ़ के रूप में प्रकृति ने जो दृश्य दिखाए हैं, वे वास्तव में भयावह हैं। एक बार फिर चारधाम यात्रा से जुड़े इस मार्ग पर केदारनाथ आपदा की कहानी प्रकृति है।

दरअसल, वर्तमान में समूचा हिमालयी क्षेत्र आधुनिक विकास और जलवायु परिवर्तन के खतरों से दो-चार हो रहा है। मौसम और प्राकृतिक आपदाओं की जानकारी देने वाले उपग्रह चाहे जितने आधुनिक तकनीक से जुड़े हों, वे अनियमित हो चुके मौसम के कारण बादलों के फटने, हिमनदों के टूटने और भारी बारिश होने की क्षेत्रवार सटीक जानकारी नहीं के टूटने दे पाते हैं। वर्ष 2013 में केदारनाथ त्रासदी और 2014 में जम्मू-कश्मीर की नदियों में बाढ़ आने के संकेत भी उपग्रह से नहीं मिल पाए थे। इसी तरह वर्ष 2021 में नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान के निकट हिमनद के टूटने से तबाही मची थी। इससे धौलीगंगा नदी में अचानक बाढ़ आई और तपोवन पनबिजली परियोजना में काम कर रहे अनेक मजदूर काल के गाल में समा गए थे। हिमाचल प्रदेश में भी भू-स्खलन, बादल फटने और भारी बारिश से तबाही देखने में आ रही है।

मौसम विज्ञानियों का कहना है कि इस बार मानसून में लंबी बाधा के कारण देश के कुछ हिस्सों में कम बारिश से सूखे जैसे हालात निर्मित हो हैं, , जबकि हिमाचल और उत्तराखंड में भारी बारिश तबाही मचा रही है। मानसून में रुकावट आ जाने से बादल पहाड़ों पर इकट्ठे हो जाते हैं और यही मूसलाधार बारिश के कारण बनते हैं। मगर तबाही के लिए मानसून को जिम्मेदार ठहरा कर जवाबदेही से नहीं बचा सकता। केदारनाथ में बिना मानसून की रुकावट के ही तबाही आ गई थी। इसलिए यह कहना बेमानी है कि मानसून की रुकावट तबाही में बदली। असल में समूचे हिमालय क्षेत्र में बीते एक दशक से पर्यटकों के लिए सुविधाएं जुटाने तथा जल विद्युत और रेल परियोजनाओं के कार्यों में प्रकृति से छेड़छाड़ हो रही है। इन परियोजनाओं के लिए हिमालय क्षेत्र में रेल गुजारने और कई हिमालयी छोटी नदियों को बड़ी नदियों में मिलाने के लिए सुरंगें निर्मित की जा रही हैं। बिजली परियोजनाओं के लिए भी जो संयंत्र लग रहे हैं, उनके लिए हिमालय को खोखला किया जा रहा है।

आधुनिक औद्योगिक और प्रौद्योगिकी विकास में असंतुलन का ही परिणाम है कि आज पहाड़ दरकने लगे हैं, जिन पर हजारों वर्ष से मनुष्य अपनी ज्ञान परंपरा के बूते जीवन यापन करने के साथ हिमालय और वहां रहने वाले अन्य जीव जगत की भी रक्षा करता रहा था हिमालय और पृथ्वी सुरक्षित बने रहें, इस दृष्टि से कृतज्ञ मनुष्य ने अथर्ववेद में लिखे पृथ्वी सूक्त में अनेक प्रार्थनाएं की हैं। इसमें राष्ट्रीय अवधारणा एवं वसुधैव कुटुंबकम की भावना को पोषित एवं फलित करने के लिए मनुष्य को नीति और धर्म से बांधने की कोशिश की है, लेकिन हमने कथित भौतिक सुविधाओं के लिए अपने आधार को ही नष्ट करने का काम आधुनिक विकास के बहाने कर दिया।

आपदा प्रभावित धराली और हर्षिल क्षेत्र में बहने वाली भागीरथी नदी पर बनी 1300 मीटर लंबी और 80 मीटर चौड़ी झील से पानी का रिसाव हो रहा है, इसे पोकलैंड मशीनों से तोड़ने की तैयारी है, ताकि रिसाव के लिए थोड़ा प्रवाह बढ़ जाए और झील का जलस्तर घट जाए। अगर इस झील के बीच कोई बड़ा बोल्डर होगा, तो इसे नियंत्रित विस्फोटक से तोड़ा जाएगा। पहाड़ों में अतिवृष्टि के चलते यह झील अस्तित्व में आ गई है। हिमालय में झील, तालाब और हिमनदों का बनना एक आश्चर्यजनक, लेकिन स्वाभाविक प्रक्रिया है। चूंकि यह झील हर्षिल और धराली के लिए संकट बन गई है, लिहाजा इसे तोड़ा जाना जरूरी हो गया है। अगर यह प्राकृतिक प्रकोप के चलते टूटती है, तो धराली एवं हर्षिल को और खतरा बढ़ जाएगा। देहरादून सिंचाई विभाग के अभियंताओं का बारह सदस्यीय दल हेलिकाप्टर से झील के निरीक्षण में लगा है। झील के प्रवाह में यदि कोई चट्टान बाधा है, तो उसे रिमोट से नियंत्रित विस्फोटक से तोड़ा जाएगा। इस विधि से वही हिस्सा टूटता है, जितना तोड़ना जरूरी होता है। हालांकि अभी तक यह निश्चित अनुमान नहीं लगाया जा सका है. इस जल प्रलय का वास्तविक कारण क्या है। भू-विज्ञानी असमंजस में हैं। सच्चाई जानने के लिए वे अब 'रिमोट सेंसिंग डेटा' और 'सेटेलाइट डेटा' की प्रतीक्षा में है। इससे स्थिति साफ होगी कि खीर गंगा नदी में आया सैलाब बादल फटने, हिमनद टूटने या भू-स्खलन से आया या फिर किसी अन्य कारण से। इस सिलसिले में भू-विज्ञानियों और विशेषज्ञों का मानना कि नदी में अचानक इतना सैलाब किस कारण से आया, यह कहना फिलहाल संभव नहीं है। यह आपदा प्राकृतिक और मानव निर्मित दोनों ही कारण से हो सकती है। इन विरोधाभासी अनुमानों से साफ है कि इस बार आई आपदा के बारे में कारण स्पष्ट नहीं है। दरअसल, पर्वतीय क्षेत्रों में प्रकृति के साथ संतुलन बना कर विकास कार्य होना चाहिए, लेकिन कथित विकास की चकाचौंध में राज्य सरकारें कोई संतुलित नीति बना भी लेती हैं, तो उसके क्रियान्वयन में ईमानदारी नहीं बरतती हैं। यही वजह है पूरे हिमालय क्षेत्र में अंधाधुंध विकास की परियोजनाएं हिमालय की आंतरिक सुगठित संरचना को नष्ट कर रही है।

इस आपदा ने यह साफ कर दिया है कि उत्तराखंड के उच्च हिमालयी क्षेत्र में झीलों के खतरे बढ़ रहे हैं। राज्य में ऐसी करीब 1266 झीलें हैं। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) ने उत्तराखंड में 13 हिमनदों को खतरनाक श्रेणी के रूप में चिह्नित किया है। इनमें से पांच को उच्च जोखिम श्रेणी में रखा है। हालांकि यह मुद्दा कोई नया नहीं है। वर्ष 2013 में केदारनाथ जल प्रलय के बाद मुद्दा महत्त्वपूर्ण हो गया था।

उत्तराखंड भूकम्प के सबसे खतरनाक जोन-5 में आता है। कम तीव्रता के भूकम्प यहां निरंतर आते रहते हैं। मानसून के दौरान हिमाचल और उत्तराखंड पहाड़ी जिलों में भू-स्खलन, बादल फटने और बिजली गिरने की घटनाएं लगातार सामने आ रही हैं। पहाड़ों के दुरकने के साथ हल्के भूकम्प भी आ रहे हैं। उत्तराखंड और हिमाचल में बीते सात वर्षों में 130 बार से ज्यादा छोटे भूकम्प आए हैं। हिमाचल और उत्तराखंड में जल विद्युत और रेल परियोजनाओं ने बड़ा नुकसान पहुंचाया है। टिहरी पर बांध को रोकने के लिए तो लंबा अभियान चला था। पर्यावरणविद और भू-वैज्ञानिक भी हिदायतें देते रहे हैं कि गंगा और उसकी सहायक नदियों की अविरल धारा बाधित हुई, तो फिर गंगा तो अस्तित्व खोएगी ही, हिमालय की अन्य नदियों और झीलों का अस्तित्व भी खतरे में पड़ सकता है।

महान गणितज्ञ हन्ना काहिरा ने 17 साल की उम्र में अलौकिक क्षमताओं के साथ शुरुआत की

विजय गर्ग

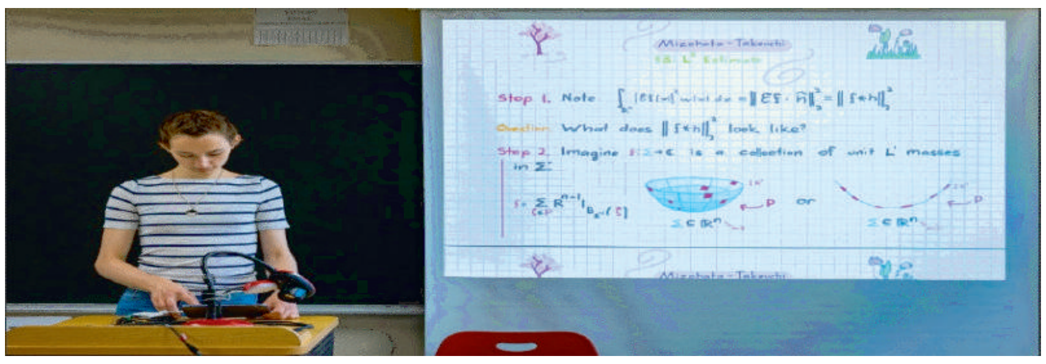

कोविड-19 महामारी के दौरान अपने कौशल का सम्मान करने वाले एक शानदार किशोर ने गणित की सबसे रहस्यमय समस्याओं में से एक को हल किया है - और ऐसा करने में, एक उभरते हुए सितारे बनें।

गणितज्ञ हन्ना काहिरा सिर्फ 17 साल का था जब उसने मिजोहाटा-ताकुची अनुमान को अस्वीकार कर दिया, एक दशकों पुराना प्रस्ताव - उच्च गणित में, यह सुझाव है कि कुछ टिप्पणियों के आधार पर सच है कि चुनौतीपूर्ण औपचारिक काउंटर प्रूफ के लिए एक लक्ष्य बन गया है - सतहों पर लहरों से निपटना जो किसी ने कभी भी उसके सामने सफलतापूर्वक काउंटर नहीं किया था।

होमस्कूल मैथ व्हिज़ ने 11 साल की पथरी में महारत हासिल की, खुद को ग्रैड स्कूल-स्तर की पाठ्यपुस्तकों से पढ़ाया, और प्रोफेसरों के साथ दूर से काम किया, जिन्हें उसके माता-पिता ने ट्यूटर के रूप में काम पर रखा था, पत्रिका की रिपोर्ट। जब कोविड लॉकडाउन 2021 में मारा, काहिरा क्या दुनिया भर में दूसरों के लाखों किया था: वह एक शौक लिया, गणित हलकों क्लब है कि शिक्षकों और छात्रों को एक साथ लाने के लिए गणित की समस्याओं को हल की शिकागो शाखा के रूप में।

क्लब की प्रतिष्ठित बर्कले, कैलिफोर्निया शाखा और इसके दो सप्ताह के ऑनलाइन समर प्रोग्राम के बारे में जानने के बाद, काहिरा ने अपने पंख फैलाने और पश्चिम की ओर लक्ष्य बनाने का फैसला किया। 14 साल की उम्र में, उसने कार्यक्रम के लिए अपने 2022 के आवेदन में लिखा था कि उसके पास पहले से ही एक उन्नत स्नातक गणित की डिग्री के बराबर ज्ञान का एक स्व-सिखाया शरीर है - और स्वाभाविक रूप से, वह अंदर चली गई।

क्वांटा के साथ एक साक्षात्कार में, बर्कले गणितज्ञ विश्वविद्यालय के ज़ेवेज़डेलिना स्टेनकोवा ने उत्साहित होकर ₹हन्ना सामान्य से ऊपर और परे है,₹ शहर के मैथ सर्कल की स्थापना की। ₹हर बार जब वह स्कूल या एक कार्यक्रम के लिए आवेदन करती है, तो वह कई स्तरों पर आगे होती है।₹

दूसरी बार कार्यक्रम पूरा करने के बाद, काहिरा ने अपने स्व-सिखाए गए ज्ञान के पूरक के लिए एक औपचारिक उच्च शिक्षा प्राप्त करने पर विचार करना शुरू किया। स्टैंकोवा ने उसे बर्कले के समवर्ती नामांकन कार्यक्रम में निर्देशित किया, जो काहिरा जैसे प्रतिभाशाली छात्रों को हाई स्कूल खत्म करते समय विश्वविद्यालय में कॉलेज की कक्षाएं लेने की अनुमति देता है। एक बार फिर, काहिरा में मिला, और यह वहां था कि वह गणितज्ञ और प्रोफेसर रुइक्सियांग झांग से मिलीं, जिन्होंने उन्हें मिजोहाटा-ताकुची अनुमान से परिचित कराया।

अपनी प्रतिभा के बावजूद, प्रतिभाशाली किशोर ने समस्या के साथ, क्वांटा नोट्स को काफी संघर्ष किया। जब झांग ने पहली बार अपने छात्रों को अनुमान का एक सरलीकृत रूप सौंपा, तो उन्होंने उन्हें अपने सबूतों के बारे में अधिक गहराई से सोचने के लिए प्रोत्साहित किया कि क्या उन्हें समस्या के अधिक जटिल संस्करणों के लिए व्यापक किया जा सकता है। काहिरा ने उसे उठा लिया - केवल उसके प्रारंभिक सिद्धांतों को बार-बार गोली मार दी।

मैं ऑफिस के घंटों में गया और उससे पूछा, 'क्या ये विचार काम करते हैं?' यह पता चला कि वे नहीं थे क्योंकि वे मूर्ख थे, ₹किशोर ने पत्रिका को बताया। ₹यह आगे-पीछे होगा। मैं नए विचारों के साथ कार्यालय के घंटों में आता हूं और पूछता हूं कि क्या वे काम करते हैं। और वह नहीं कहेंगे।

निराश लेकिन मनोबल नहीं, काहिरा अपने विचार प्रयोगों में कायम रहा, अंततः इस अनुमान के लिए एक उपन्यास दृष्टिकोण का पता लगाया गया जिसमें लहरों की एक अजीब सरणी शामिल थी जो सभी एक घुमावदार सतह पर थीं। एक-दूसरे को रद्द करने के बजाय, जैसा कि वे मूल प्रमेय में थे, उन्होंने एक-दूसरे को इस तरह से प्रवर्धित किया कि मिजोहाटा-ताकुची अनुमान निषिद्ध है।

अपने काम से प्रेरित काहिरा ने इसे यथासंभव सरल बनाने के लिए सरल बनाया - और इस बार, झांग को इसके द्वारा मजबूर किया गया था।

सहकर्मी की समीक्षा से पहले इस फरवरी में जारी किए गए अपने प्रमाण पर एक पेपर लिखने के बाद, गणितीय दुनिया हंगामे में थी - खासकर जब उन्हें पता चला कि काहिरा कितना छोटा था।

यूके के बर्मिंघम विश्वविद्यालय के एक गणित शोधकर्ता इटामर ओलिवेरा ने बताया, ₹हम सभी हैरान थे, बिल्कुल,₹ मिजोहाटा-ताकुची पर केंद्रित वर्षों बिताए हैं। ₹मुझे कभी भी ऐसा कुछ देखकर याद नहीं है।₹

एडिनबर्ग विश्वविद्यालय के गणितज्ञ टोनी कार्बेरी, जिन्होंने अनुमान का अध्ययन करते हुए दशकों बिताए हैं, को इसी तरह से अध्ययन किया गया था, खासकर यह जानने पर कि जब उन्होंने अपना पेपर लिखा था तो काहिरा कितना युवा था।

जबकि गणित की दुनिया ने अपने सबसे नए स्टार की शुरुआत की, लड़की ने खुद एक बार फिर दृश्यों को बदलने का फैसला किया - इस बार मैरीलैंड विश्वविद्यालय के लिए, जो जॉन्स हॉपकिंस के साथ एक उच्च विद्यालय डिप्लोमा या स्नातक की डिग्री के बिना उसे स्वीकार करने के लिए तैयार एकमात्र स्नातक स्कूल था। वह गिरावट में शुरू होती है, क्वांटा नोट करती है, और जब वह खत्म होती है, तो वह डिग्री उसकी पहली होगी।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्

कम आय वाले घरों के उज्ज्वल बच्चे प्रारंभिक माध्यमिक विद्यालय में संज्ञानात्मक बढ़त खो देते हैं

विजय गर्ग

अनुसंधान इंगित करता है कि कम आय वाले परिवारों के उज्ज्वल बच्चे अक्सर प्रारंभिक माध्यमिक विद्यालय में संक्रमण के दौरान अपने संज्ञानात्मक बढ़त और शैक्षणिक लाभ को खो देते हैं, आमतौर पर 11 से 14 वर्ष की आयु के बीच। जबकि ये छात्र प्राथमिक विद्यालय में अपने अधिक समृद्ध साथियों के साथ प्रदर्शन कर सकते हैं, उनके शैक्षणिक प्रदर्शन में उल्लेखनीय गिरावट, स्कूल के प्रति दृष्टिकोण और मानसिक स्वास्थ्य अक्सर इस स्तर पर होता है। इस घटना में कई कारक योगदान करते हैं:

सामाजिक और पर्यावरणीय तनावः कम आय वाली पृष्ठभूमि के छात्रों को अस्थिर घर के वातावरण, खाद्य असुरक्षा और गुणवत्ता स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच की कमी के कारण पुराने तनाव का अनुभव होने की अधिक संभावना है। यह पुराना तनाव संज्ञानात्मक कार्य को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है, जिससे बिगड़ा हुआ कार्यकारी कार्य, स्मृति और ध्यान हो सकता है।

संसाधनों और समर्थन की कमीः कम आय वाले परिवारों के पास अक्सर शैक्षिक सामग्रियों में निवेश करने, अनुभवों को समृद्ध करने (जैसे यात्रा या पाठ्येतर गतिविधियों), या सीखने का समर्थन करने वाले एक स्थिर घरेलू वातावरण के लिए कम वित्तीय संसाधन होते हैं। इसके अतिरिक्त, माता-पिता लंबे समय तक काम कर सकते हैं, अपने बच्चे के स्कूली जीवन में शामिल होने की क्षमता को सीमित कर सकते हैं।

स्कूल पर्यावरण और सामाजिक गतिशीलताः माध्यमिक विद्यालय में संक्रमण सभी छात्रों के लिए एक कठिन अवधि हो सकती है, लेकिन यह कम आय वाले छात्रों के लिए विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण हो सकता है। नया वातावरण, जो बड़ा और अधिक अवैयक्तिक हो सकता है, प्रेरणा और सगाई में तेज गिरावट का कारण बन सकता है। सामाजिक गतिशीलता, जिसमें सामाजिक स्थिति की कथित कमी और अधिक संपन्न साथियों के हितों और अनुभवों से एक डिस्कनेक्ट भी शामिल है, अलगाव की भावनाओं और अकादमिक प्रेरणा के नुकसान में भी योगदान कर सकता है।

यौवन और विकासः कुछ शोध बताते हैं कि पुरानी तनाव, जो कम आय वाले वातावरण में अधिक आम है, पहले के यौवन विकास को ट्रिगर कर सकता है। यह संज्ञानात्मक कार्य को ख़राब कर सकता है और शैक्षणिक प्रदर्शन में गिरावट में योगदान दे सकता है। मुद्दे को संबोधित करने के लिए हस्तक्षेप उच्च-प्राप्त करने वाले, कम आय वाले छात्रों का समर्थन करने के उद्देश्य से हस्तक्षेप को बहुआयामी और अकादमिक और सामाजिक-भावनात्मक दोनों जरूरतों को पूरा करने की आवश्यकता है। संभावित रणनीतियों में शामिल हैं:

प्रारंभिक बचपन की शिक्षाः उच्च गुणवत्ता वाले पूर्वस्कूली कार्यक्रम जो प्रारंभिक गणित और साक्षरता कौशल पर ध्यान केंद्रित करते हैं, भविष्य की शैक्षणिक सफलता के लिए एक मजबूत नींव बनाने में मदद कर सकते हैं।

सशक्तिकरण और आत्म-वकालतः कार्यक्रम जो छात्रों को आत्म-वकालत और मुकाबला रणनीतियों को सिखाते हैं, उन्हें माध्यमिक विद्यालय की चुनौतियों को नेविगेट करने और लचीलापन बनाने में मदद कर सकते हैं।

लक्षित सहायता कार्यक्रमः गर्मियों के हस्तक्षेप, उन्नत कोर्सवर्क और वित्तीय सहायता जानकारी सहित साल भर का समर्थन प्रदान करना, छात्रों को उन्नत सीखने के अवसरों के लिए तैयार करने और सफल होने में मदद कर सकता है।

स्कूल और सामुदायिक सहयोगः मजबूत शिक्षक सहायता, संसाधनों तक पहुंच और सामुदायिक संगठनों के साथ साझेदारी के माध्यम से एक सहायक स्कूल वातावरण बनाना सामाजिक आर्थिक नुकसान के नकारात्मक प्रभावों को कम करने में मदद कर सकता है।

मौद्रिक प्रोत्साहनः कुछ संदर्भों में, विशिष्ट शैक्षणिक बेंचमार्क को पूरा करने वाले छात्रों या परिवारों के लिए प्रत्यक्ष वित्तीय प्रोत्साहन को प्राप्ति बढ़ाने में प्रभावी दिखाया गया है।

सचमुच आजाद है हमारा मुल्क ?

अशोक गुप्त

स्वाधीनता दिवस के मौके पर यह चिंतन करने का समय है कि हमारा देश आजादी के बाद कितना आजाद हुआ, देश के लोगों को कितनी आजादी मिली और हम लोग कितने आजाद हैं, अपने अपने आचार और व्यवहार में. क्या हम लोग वास्तव में आजाद हैं, विचार करने पर मालूम होता है कि दुनिया के बहुत से देशों जिनमें अमेरिका और इंग्लैंड जैसे देश भी शामिल है, के मुकाबले हम बहुत अधिक आजाद हैं. हमारे यहां जितनी आजादी है, उतनी शायद किसी भी देश में नहीं है. पाकिस्तान बर्मा या चीन जैसे देशों की तो बात ही अलग है किंतु अमेरिका स्विट्जरलैंड, नॉर्वे, जर्मनी, इटली, बेल्जियम आदि किसी भी ऐसा देश के नागरिकों के मुकाबले में भी हम बहुत आजाद हैं. आप जरुर सोचते होंगे कि यह कैसे हो सकता है. वहां तो बहुत आजादी है, वहां के लोग तो चाहे जैसे कपड़े पहन कर घूम सकते हैं .वहां पर बोलने की भी शायद अधिक आजादी हो सकती है मगर जो हमारे यहां आजादी है, वह मेरे ख्याल में शायद किसी भी देश में नहीं होगी.

हमारे यहां गरीब आदमी को इतनी आजादी है कि यदि उसे अपने यहां खाना नहीं मिल रहा तो वह अपना घर छोड़कर कभी भी दिल्ली जैसी देश की राजधानी में आ सकता है. यहां उसको खाने के लिए आसानी से जगह-जगह लगे भंडारो या लंगरों से भोजन मिल सकता है. रहने की समस्या शायद हो सकती है मगर चिंता की कोई बात नहीं. समय डालकर उसको कहीं न कहीं झुग्गी डालने का भी मौका मिल जाता है. अब यह जरूरी नहीं है कि वह अच्छी जगह हो लेकिन इतनी आजादी तो है ही कि वह किसी दीवार के किनारे या किसी नाले के साइड पर या कहीं पर भी अपनी झुग्गी डाल दे. उसके कारण देश की राजधानी दिल्ली झुग्गियों का शहर बन गई है मगर आम आदमी को इतनी आजादी है कि वह जहां चाहे, झुग्गी डाल दे और उसके बाद आसानी से वहां पर रहता रहे.

एक बार झुग्गी डालने पर उसका राशन कार्ड बन जाएगा और उसको मुफ्त राशन मिलने लगेगा. मुफ्त में बिजली पानी की सुविधा तो है ही, उसके अतिरिक्त और भी कई सारी चीजें उसको मुफ्त मिल जाती है. अगर महिला है तो उसको बस में आने जाने की सुविधा भी मुफ्त मिल जाती है. किसी और देश में शायद यह सब सुविधाएँ नहीं होंगी. जहां तक मैं सोचता हूं झुग्गी डालने की सुविधा तो किसी भी देश में नहीं होगी मगर यहां तो कोई भी जहां चाहे झुग्गी डालकर बैठ जाता है और यह केवल दिल्ली की बात नहीं है. चाहे दिल्ली के आसपास के शहर में या बाहर हो, जिसका जहाँ मन करता है ,वह वहां झुग्गी डालकर बैठ जाता है और उसके पश्चात

मुफ्त बिजली पानी की सुविधा तो मिल ही जाती है और खाने का भी इंतजाम कहीं ना कहीं से हो ही जाता है.

हमारे देश में कुत्तों को भी बहुत आजादी है . वे जहां चाहे, वहां जाकर भौंक सकते हैं, हग सकते हैं या कुछ भी कर सकते हैं. चाहे तो किसी को भी काट सकते हैं और छोटे बच्चों की तो जान तक ले सकते हैं. कुत्तों को इतनी आजादी और किस देश में होगी. अभी मैं एक लेख पढ़ रहा था जिसमें यूरोप में कुत्तों की जिंदगी के बारे में बताया गया था. लेखिका ने लेखक ने यह बताया कि वहां उन्होंने सड़क पर एक भी आवारा कुत्ता नहीं देखा और और वहां जो कुत्ते होते थे, वह केवल अपने मालिकों के साथ होते थे. हां मालिक उनको लेकर किसी पब्लिक ट्रांसपोर्ट में भी जा सकते थे मगर वहां के कुत्तों को ऐसी ट्रेनिंग दी गई होती थी कि वह कभी भी किसी को काटना तो दूर, भौंकते तक नहीं थे. उन्हें जहां बैठा दिया गया, वहीं बैठते थे.

राजनैतिक व्यंग्य-समागम : असत्य का पुजारी

विष्णु नागर

राजा हरिश्चंद्र से लेकर महात्मा गांधी तक सत्य के प्रति गहरी निष्ठा रखने वाले कम नहीं हुए हैं, मगर असत्य के प्रति गहरी निष्ठा रखने वाला भारत में आज तक अकेला केवल एक ही हुआ है। उसे आप भी जानते हैं और वह भी जानता है कि आप उसे जानते हैं। वही जिसने स्वतंत्रता दिवस पर अपने ही भाषण का रिकार्ड तोड़ते हुए 103 मिनट का भाषण दिया। 140 करोड़ लोगों के इस देश में वह अकेला है और विश्व में भी उसके मुकाबले आने की हिम्मत करने वाले बमुश्किल दो-चार होंगे। अगर नहीं होंगे तो भी आश्चर्य नहीं, क्योंकि भारत विश्वगुरू है!

पिछले 11 साल में उसने एक दिन के लिए भी झूठ बोलने का अपना संकल्प नहीं तोड़ा। सच तो यह है कि उसने एक घंटे के लिए भी अपने ऊपर सच बोलने का 'कलंक' नहीं लगने दिया। कितने ही संकट आए, कितनी ही चुनौतियां आईं, कितनी ही उसकी खिल्ली उड़ाई गई, मगर वह असत्य के पथ से कभी डिगा नहीं। स्वतंत्रता दिवस पर भी इस संकल्प पर वह अडिग रहा।

असत्य को उसने कभी अकेला छोड़ा नहीं! उसका झूठ हर दिन, हर जगह पकड़ा गया। फिर भी असत्य वीर इससे विचलित नहीं हुआ। पथ से डिगा नहीं। लोगों ने उसे बार-बार झूठा कहा, लबार कहा, फेंकू कहा, पर वह घबराया नहीं, शरमाया नहीं, लजाया नहीं, भरमाया नहीं, हिला नहीं, डुला नहीं, भूला नहीं। उसने एक बार भी असत्यवादी होने का खंडन किया नहीं। इस यथार्थ से उसने मुंह मोड़ा नहीं।

ऐसा भी नहीं कि उसने कि सौ बार झूठ बोला और एक बार सच बोल दिया। असत्यव्रत को उसने खंडित नहीं होने दिया। अपनी यह साख उसने बनाये रखी। जैसे गांधी जी स्वाभाविक रूप से सच बोलते थे, यह उतने ही स्वाभाविक रूप से झूठ बोलता है। आप-हम जितने आत्मविश्वास से सच नहीं बोल सकते, उससे सौ गुना अधिक आत्मविश्वास से यह झूठ बोलता है। कमाल है कि झूठ बोलते समय उसके चेहरे पर एक शिकन तक नहीं आती, इसलिए भी काफी लोग उसके दीवाने हैं। भारत के पांच हजार साल के ज्ञात इतिहास में देश की कमान संभालने वाला यह पहला और शायद अंतिम व्यक्ति है, जिसने झूठ का झंडा देश-विदेश में अभिमान के साथ गाड़ दिया है। इसके पहले लोकल लेबल के लबार हुए हैं, जो जूते खाकर चुप बैठ गए। यह बैठा नहीं, उठा ही रहा।एक बार इसने असत्य के पथ पर कदम बढ़ा दिए, तो फिर इसने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

सच बोलने के लिए कितने इंच का सीना चाहिए, यह तो गांधी जी ने कभी बताया नहीं। यह राज उन्होंने जनता से छुपा कर रखा, जबकि असत्यवादी ने यह राज नहीं छुपाया। बताया कि इसके लिए छप्पन इंच का सीना होना चाहिए। इधर हम जैसों का हाल यह है कि कोई छोटा-सा झूठ भी पकड़ लिया जाए, तो हमारी घिग्घी बंध जाती है।आंख और नाक से पानी आने लग जाता है। लगता है, धरा फट जाए और उसमें समा जाएं!

तो खैर, उस आदमी की असत्य के प्रति गहरी निष्ठा की बात हो रही थी। दिलचस्प बात यह है कि उसने भी उसी गुजरात भूमि को 'पवित्र' किया, जिस पर कभी महात्मा गांधी जन्म ले चुके थे। गनीमत यह रही कि इस धराधाम से जब गांधी जी कूच कर गए, उसके भी साढ़े सात महीने बाद पदार्पण किया, वरना यह तो जन्म लेने के दिन से ही यह अफवाह उड़ा देता कि मैंने, महात्मा गांधी ने पुनर्जन्म लिया है। गांधी जी बाल-बाल बच गए, क्योंकि यह तो पिछले साल नान-बायोलॉजिकल भी हो चुका है।यह कभी भी जन्म ले सकता था। फिर भी गुजराती होने के नाते इसकी गांधी जी पर अतीव कृपा रही कि इसने देर से जन्म लेकर उन्हें बख्शा। उसने यह सिद्ध करके दिखा दिया कि जिस धरती पर सत्य का पुजारी पैदा हो सकता है, उसी पर झूठ का व्यापारी भी जन्म ले सकता है। धरती का कोई भाग न इतना पवित्र है, न इतना अपवित्र कि उसमें गांधी पैदा हो, तो मोदी पैदा नहीं हो सकता!

यह बिल्कुल गांधी जी का 200 प्रतिशत विलोम है। गांधी जी ने बचपन में मगरमच्छ का बच्चा नहीं पकड़ा था, यह कहता है कि इसने पकड़ा था। गांधी जी बैरिस्टर थे और इसका उन्हें कतई गर्व नहीं था। यह दसवीं पास है और उसे इसका ही नहीं, अपने हिंदू होने का भी गर्व है। गांधी जी को दक्षिण अफ्रीका से वापस भारत आने पर कोई सर्टिफिकेट दिखाने की जरूरत नहीं पड़ी थी, इसने फर्जी प्रमाण पत्रों का अंबार लगा रखा है। गांधी जी ने अपने बचपन से जवानी तक और जवानी से बुढ़ापे तक अपने बारे में एक भी गप नहीं मारी, इसके पास गप्पों का विश्व रिकॉर्ड है। आज का अखबार आपने पढ़ा होगा, तो आज भी इसने इस पिटारे में से कुछ निकाल कर जनता के सिर पर दे मारा होगा!

गांधी जी को सच बोलने में तनिक भी हिचक नहीं थी, इसे झूठ बोलने में हिचक नहीं। गांधी जी शरीर पर केवल खादी की एक चादर लपेटते थे। यह कपड़ों का भंडार लेकर चलता है। दिन में छह बार महंगे-महंगे कपड़े बदलता है। गांधी जी के शिष्य और साथी नेहरू-पटेल जैसे पाये के लोग थे, इसके साथी शाह और अडानी जैसे लोग हैं। गांधी जी कस्तूरबा को छोड़ने की कल्पना नहीं कर सकते थे, इसने दिल्ली की गद्दी पर बैठने से पहले तक यह छुपाया कि यह शादीशुदा है।

इसने एक काम जरूर पाज़िटिव किया है कि उन लोगों का घमंड तोड़ दिया,जो यह दावा करते थे कि हमने गांधी को देखा है। आज लोग उससे भी अधिक गर्व से यह कहते पाए जाते हैं कि हमने मोदी को देखा है। इस तरह इसने भक्तों को गांधी ग्रंथी से उबारा है।इसके लिए भारत इसका हमेशा ऋणी रहेगा।

(कई पुरस्कारों से सम्मानित विष्णु नागर साहित्यकार और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

7 बोगियां छोड़कर भागा इंजन, आधे घंटे बाद पहुंचा गंतव्य

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : 7 बोगियों को छोड़कर इंजन फरार। बनास रेलवे फाटक के पास एक मालगाड़ी का इंजन 7 बोगियों को छोड़कर फरार हो गया। आज दोपहर 12 बजे भद्रक से बालासोर जा रही कोयले से लदी ट्रेन डाउन लाइन पर चल रही थी, तभी मरकोना स्टेशन के बनास रेलवे फाटक के पास 7 बोगियां बच गईं।जिसके कारण लोगों को काफी देर तक परेशानियों का सामना करना पड़ा।आधे घंटे बाद इंजन आया और 7 डिब्बों को उनके गंतव्य तक पहुंचाया।

डिप्टी कमिश्नर द्वारा खानकोट इलाके का दौरा स्वास्थ्य विभाग को डॉक्टरों की टीमें तैनात करने के निर्देश

अमृतसर, 18 अगस्त (साहिल बेरी)

अमृतसर शहर के खानकोट इलाके में, जहाँ बीती रात दूषित पानी पीने के कारण लोगों के बीमार होने की समस्या सामने आई थी, उस क्षेत्र का हालचाल जानने और मौजूदा हालात का जायज़ा लेने के लिए डिप्टी कमिश्नर श्रीमती साक्षी साहनी ने दौरा किया। इस अवसर पर उनके साथ अतिरिक्त डिप्टी कमिश्नर श्रीमती परमजीत कौर, अतिरिक्त कमिश्नर कॉर्पोरेशन श्री सुरिंदर सिंह, सिविल सर्जन डॉक्टर किरणदीप कौर और अन्य अधिकारी मौजूद थे। उन्होंने गांववासियों से बातचीत कर मौजूदा स्थिति की जानकारी ली और स्वास्थ्य विभाग को निर्देश दिए कि इलाके में लोगों की मदद के लिए डॉक्टरों की टीमें तैनात की जाएं। इसके अलावा यहां साफ-सुथरा पानी उपलब्ध कराना भी सुनिश्चित किया जाए।

पंजाब के ईसाई एकजुट होकर मसीही महासभा का पुनर्गठन करेंगे

अमृतसर 18 अगस्त (साहिल बेरी)

पंजाब के ईसाइयों के बीच एकता को बढ़ावा देने के लिए एक अभूतपूर्व कदम उठाते हुए, डायोसिस ऑफ़ अमृतसर, चर्च ऑफ नॉर्थ इंडिया (सीएनआई), और रोमन कैथोलिक चर्च के नेताओं ने मसीही महासभा (एमएमएस) का पुनर्गठन करने का संकल्प लिया है। इस सहयोगात्मक प्रयास का उद्देश्य पंजाब में ईसाई समुदाय को प्रभावित करने वाले ज्वलंत मुद्दों का समाधान करने के साथ-साथ हाशिए पर पड़े वर्गों को सशक्त बनाना और अंतरधार्मिक सद्भाव को मजबूत करना है।

संप्रदायगत मतभेदों को दरकिनार करते हुए, राइट रेवरेंड मनोज चरन, बिशप, डायोसिस ऑफ़ अमृतसर, चर्च ऑफ नॉर्थ इंडिया, तथा ऐक्टिंग डिप्टी मॉडरेटर, चर्च ऑफ नॉर्थ इंडिया, ने रोमन कैथोलिक चर्च के प्रतिनिधियों फादर जॉन ग्रेवाल और फादर विलियम सहोता के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक के दौरान इस संयुक्त पहल के प्रति प्रतिबद्धता व्यक्त की। इस वर्ष अप्रैल में बिशप मनोज चरन की नियुक्ति के बाद उनका स्वागत करने के लिए एक शिष्टाचार भेंट के रूप में शुरू हुई यह चर्चा पंजाब के ईसाइयों के दरपेश गंभीर चुनौतियों पर एक महत्वपूर्ण चर्चा में बदल गई।

"मसीही महासभा पंजाब में ईसाई धर्म के बारे में गलत धारणाओं को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी, विशेष रूप से 'जबरन धर्मांतरण' के झूठे आरोपों को संबोधित करने में, जो अक्सर समुदायों के बीच संबंधों को खराब करते हैं," बिशप मनोज चरन ने कहा। ₹हम शांति को बढ़ावा देने, गिरजा घरों पर हमलों से अपने समुदाय की रक्षा करने और सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए अंतर-धार्मिक संवाद को बढ़ावा देने के प्रति समर्पित हैं,₹ उन्होंने कहा।

फादर जॉन ग्रेवाल ने ज़ोर देकर कहा, "एकता हमारी ताकत है। मसीही महासभा के माध्यम से, हम पंजाब के ईसाइयों की सेवा करने और सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए सांप्रदायिक दूरियों को पाटते हैं।" फादर विलियम सहोता ने कहा, ₹हम सब मिलकर पंजाब के विविध परिदृश्य में फैली भ्रांतियों को दूर कर सकते हैं, शांति को बढ़ावा दे सकते हैं और अपने समुदाय को सशक्त बना सकते हैं।"

श्री डैनियल बी दास, सचिव, अमृतसर डायोसिसन ट्रस्ट एसोसिएशन (एडीटीए), रेव अयूब डैनियल, प्रशासक, डीओए, सीएनआई, रेव मार्कस मसीह, बिशपस चैप्लिन, श्री ओम प्रकाश, वित्त सचिव, डीओए, सीएनआई, श्री रोशन जोसेफ, और श्री जॉन कोटली, भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

फोटोग्राफी मेरा जुनून है.... वर्ल्ड फोटोग्राफी डे आज

– सोनू यादव, वरिष्ठ प्रेस फोटोग्राफर इन्दौर

हर साल 19 अगस्त को वर्ल्ड फोटोग्राफी डे मनाया जाता है। यह दिन मेरे जैसे फोटोग्राफरों के लिए सिर्फ एक तारीख नहीं, बल्कि भावनाओं से जुड़ा हुआ एक अहसास है। कैमरा मेरे लिए सिर्फ़ रोज़गार का साधन नहीं, बल्कि मेरी पहचान और मेरा जुनून है।

मैंने करीब 20 साल पहले प्रेस फोटोग्राफी की शुरुआत की थी। उस समय न तो इतने संसाधन थे और न ही कोई बड़ी सुविधाएँ। लेकिन दिल में एक सपना था – समाज की सच्चाई और आम लोगों की भावनाएँ कैमरे में उतारनी हैं। इसी जुनून ने मुझे लगातार मेहनत करने की प्रेरणा दी।

आज पीछे मुड़कर देखता हूँ तो लगता है कि इस सफर में कैमरे ने मुझे बहुत कुछ दिया है। मेरी खींची गई तस्वीरों ने कई बार खबर को नई दिशा दी, कई बार लोगों की भावनाएँ दुनिया तक पहुँचाई। इन कोशिशों के लिए मुझे समय-समय पर कई अवॉर्ड्स भी मिले, जो मेरे लिए सम्मान के साथ-साथ और बेहतर काम करने की प्रेरणा भी हैं।

मेरे लिए फोटोग्राफी का मतलब है – सच्चाई को उसी रूप में दुनिया के सामने लाना, जैसी वह है। एक सही तस्वीर शब्दों से भी ज्यादा बोलती है और सीधे दिल पर असर करती है।

इस वर्ल्ड फोटोग्राफी डे पर मैं सभी साथी फोटोग्राफरों को सलाम करता हूँ, जो अपने-अपने कैमरे से समाज को असली तस्वीर दिखाने में जुटे हैं। उम्मीद है कि हमारी आने वाली पीढ़ियाँ भी फोटोग्राफी को सिर्फ़ एक पेशा नहीं, बल्कि समाज के प्रति जिम्मेदारी के रूप में देखेंगी।

बुजुर्ग बदल रहे अर्थव्यवस्था की चाल, चमकने लगी 'सिल्वर इकोनॉमी'

हरीश शिवनानी

अपने सनक भरे टैरिफ वार के चलते अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने पिछले दिनों जब भारत को 'डैड इकोनॉमी' बताकर अप्रिय विवाद उत्पन्न कर थोप दिया तो भारत सहित दुनियाभर के अर्थशास्त्रियों ने उनकी बात पर बहुत हैरानी ज़ाहिर की थी। वजह थी कि, इस समय दुनिया की सबसे तेज गति से बढ़ती अर्थव्यवस्था भारत ही है। विश्व बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के मुताबिक भारतीय अर्थव्यवस्था 6.4 से 6.7 फीसदी की दर से बढ़ रही है जबकि अमेरिका की 1.9 की दर से, चीनी दो से भी कम। भारत की इस बढ़ती अर्थव्यवस्था में समाज के एक ऐसे वर्ग का बड़ा हाथ है, जिसे प्रायः 'अनुत्पादक' माना जाता रहा है। यह 60 प्लस आयु वर्ग भारत में एक आर्थिक शक्ति बन कर उभर रहा है। यह समूह धन और प्रभावशाली खर्च के एक बड़े हिस्से को नियंत्रित कर रहा है। हाल के वर्षों में बुज़ुर्ग पीढ़ी में उल्लेखनीय परिवर्तन आया है, जो निःस्वार्थता और पोते-पोतियों की देखभाल पर केंद्रित घर-केंद्रित जीवनशैली की अपनी पारंपरिक छवि से हटकर अब कहीं आगे निकल गई है। यह पीढ़ी भारत की 'सिल्वर इकोनॉमी' चमका रही है। 'सिल्वर इकोनॉमी' शब्द बुज़ुर्ग आबादी से जुड़ी आर्थिक गतिविधियों को समाहित कर उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं को बताती है।

वित्त वर्ष २०२३-२४ में बुज़ुर्गों ने भारतीय अर्थव्यवस्था में करीब ६8 अरब डॉलर का योगदान दिया है जो भारत के सकल घरेलू उत्पादन (जीडीपी) का तीन प्रतिशत है। गैर सरकारी संगठन 'रोहिणी निलेकणी फिलान्थ्रॉपीज' की हाल ही जारी रिपोर्ट 'लोंगेविटी: ए न्यू वे आफ अंडरस्टेंडिंग ऐजिंग' में कहा गया है कि वृद्धजनों की ज़रूरतों में आर्थिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और कल्याण, भागीदारी की स्वतंत्रता और सामाजिक जुड़ाव प्रमुख हैं। भारत में आर्थिक सुधारों और छठा और बाद के वेतन आयोग लागू होने के बाद औसत वास्तविक आय में वृद्धि हुई है। 'सिल्वर इकोनॉमी' को बढ़ाने में बुज़ुर्गों का योगदान दो तरह से है। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष। प्रत्यक्ष योगदान के तहत बुज़ुर्गों की आय विभिन्न स्रोतों से आती है, जो उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर निर्भर करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में 35 प्रतिशत से अधिक बुज़ुर्ग खेती, कुटीर उद्योगों या छोटे व्यवसाय, दुकानदारी में संलग्न हैं तो नगरीय बुज़ुर्ग कौशल आधारित कार्यों पर। इनमें सेवानिवृत्त शिक्षक, डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, वित्त-कर, शैक्षणिक या तकनीकी सलाहकार की भूमिका में आय अर्जित कर रहे हैं। इनके अलावा पेंशन, सामाजिक सुरक्षा राशि, सावधि जमा राशि, प्रॉपर्टी किराया छोटी बचत के अलावा स्टॉक मार्केट, निवेश, अन्य अंशकालिक कार्य से भी उनकी आय होती है।

इनसे प्राय बुज़ुर्गों का अर्थव्यवस्था में अप्रत्यक्ष योगदान भी बढ़ रहा है। मसलन, पारिवारिक देखभाल की श्रेणी में वे प्रति वर्ष लगभग 14 अरब घंटे बच्चों की देखभाल में समय देते हैं, जिससे उनके परिवार की युवा पीढ़ी निश्चिंत होकर व्यवसाय, नौकरी, प्रोफेशनल गतिविधियों में मग्न रहती है। इसी तरह बुज़ुर्ग प्रति वर्ष 2.6 अरब घंटे वे सामुदायिक कार्यों (जैसे धार्मिक-सामाजिक-सामुदायिक आयोजन, स्थानीय प्रशासन) में योगदान देकर उनका व्यय बचाकर अपना योगदान देते हैं। आय प्राप्ति के बाद बुज़ुर्ग अपनी आय को अनेक क्षेत्रों में खर्च करते हैं। जिससे अर्थव्यवस्था को भी गति मिलती है। पहला और महत्वपूर्ण बिंदु है स्वास्थ्य। रिटायरमेंट और कमज़ोर होते शरीर से भी बुज़ुर्ग योगदान दे कर अर्थव्यवस्था की चाल बदल रहे हैं। हेल्थ और फार्मा उद्योग तो अधिकतम बुज़ुर्गों पर ही निर्भर है। बुज़ुर्ग परिवार स्वास्थ्य पर औसतन 12 प्रतिशत खर्च करता है। राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग के अनुसार, उम्र-संबंधी बीमारियाँ प्रायः हैं, जिनसे दवाइयाँ, अस्पताल, स्वास्थ्य-बीमा, हैल्थ सप्लीमेंट्स आदि सहायक चिकित्सा उत्पादों की मांग बढ़ती है। भारत में साल २०२७ तक स्वास्थ्य सेवाओं के 1.74 लाख करोड़ रुपये तक पहुंचने का अनुमान है।

सिर्फ तस्वीर नहीं, इतिहास का आईना भी है फोटोग्राफी [सौंदर्य से संघर्ष तक: तस्वीरों का अनकहा सच]

फोटोग्राफी समय को एक फ्रेम में कैद करने की जादुई कला है। यह वह लेंस है जो न केवल दृश्यों को, बल्कि भावनाओं, संस्कृतियों और मानवता के अनकहे किस्सों को अमर बनाता है। 19 अगस्त को मनाया जाने वाला विश्व फोटोग्राफी दिवस केवल कैमरे की तकनीक का उत्सव नहीं, बल्कि उस नजरिए का सम्मान है जो दुनिया को नए रंगों और गहराइयों में देखता है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि एक तस्वीर न सिर्फ आँखों के लिए एक दृश्य है, बल्कि वह एक कहानी, एक विचार और एक युग का दस्तावेज भी है।

फोटोग्राफी का इतिहास 19वीं सदी की प्रयोगशालाओं में शुरू हुआ, जब जोसेफ निसेफोर निएप्स ने 1826 में पहली स्थायी तस्वीर खींची, जिसे ₹व्यू फ्रॉम द विंडो एट ले ग्रास₹ कहा गया। यह धुंधली तस्वीर, जो आठ घंटे की रोशनी के संपर्क में रहकर बनी, ने मानव इतिहास में एक नया अध्याय खोला। इसके बाद, 1839 में लुई दागेरे की दागेरेओटाइप प्रक्रिया ने फोटोग्राफी को और सुलभ बनाया। उसी वर्ष फ्रांस सरकार ने इसे दुनिया के लिए मुफ्त घोषित किया, जिसकी स्मृति में 19 अगस्त को विश्व फोटोग्राफी दिवस मनाया जाता है। यह एक ऐसी खोज थी जिसने न केवल कला, बल्कि विज्ञान, पत्रकारिता और सामाजिक बदलाव को नया आयाम दिया।

फोटोग्राफी ने इतिहास को जीवंत दस्तावेज में बदल दिया। 1857 के भारतीय विद्रोह की तस्वीरें हों या 1969 में चंद्रमा पर नील आर्मस्ट्रांग के पहले कदम की छवि, इन तस्वीरों ने समय की धारा को रोका और हमें अतीत को महसूस करने का मौका दिया। विश्व फोटोग्राफी दिवस हमें यह भी याद दिलाता है कि फोटोग्राफी ने युद्धों, क्रांतियों और सामाजिक आंदोलनों को न केवल रिकॉर्ड किया, बल्कि उन्हें दुनिया तक पहुँचाकर बदलाव की प्रेरणा भी दी। उदाहरण के लिए, 1972 में वियतनाम युद्ध की उस तस्वीर ने, जिसमें एक नन्ही बच्ची नापाम बम के हमले से भागती दिख रही थी, पूरी दुनिया में युद्ध-विरोधी भावनाएँ भड़काईं। यह तस्वीर, जिसे निक उत ने खींचा था, आज भी फोटोग्राफी की सामाजिक शक्ति का प्रतीक है।

आज फोटोग्राफी आम आदमी की जेब तक पहुँच चुकी है। स्मार्टफोन के कैमरों ने हर व्यक्ति को फोटोग्राफर बना दिया है। 2023 तक, वैश्विक स्तर पर प्रतिदिन 1.8 अरब से अधिक तस्वीरें खींची जा रही थीं, जिनमें से 80% से ज्यादा स्मार्टफोन के जरिए। यह लोकतांत्रिक क्रांति फोटोग्राफी को पहले से कहीं अधिक समावेशी बनाती है। अब कोई भी व्यक्ति, चाहे वह किसी दूरदराज के गाँव में हो या महानगर में, अपनी कहानी को दुनिया तक पहुँचा सकता है। भारत में, जहाँ 1.4 अरब लोग रहते हैं, स्मार्टफोन की पहुँच ने ग्रामीण फोटोग्राफरों को भी सामने लाया है, जो अपनी तस्वीरों के जरिए स्थानीय संस्कृति, पर्यावरण और सामाजिक मुद्दों को उजागर कर रहे हैं।

हालाँकि, डिजिटल युग ने फोटोग्राफी को नई चुनौतियाँ भी दी हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और फोटो एडिटिंग सॉफ्टवेयर ने तस्वीरों की प्रामाणिकता पर सवाल उठाए हैं। 2024 में, एक सर्वेक्षण में पाया गया कि 62% लोग ऑनलाइन देखी गई तस्वीरों पर पूरी तरह भरोसा नहीं करते। यह फोटोग्राफरों के लिए एक नैतिक जिम्मेदारी लाता है कि वे सत्य को विकृत न करें। विश्व फोटोग्राफी दिवस इस बात पर जोर देता है कि फोटोग्राफी की शक्ति तभी सार्थक है, जब वह ईमानदारी और पारदर्शिता के साथ प्रस्तुत हो।

फोटोग्राफी का एक अनोखा पहलू इसकी वैश्विक भाषा है। यह वह माध्यम है जो बिना शब्दों के भावनाओं को व्यक्त करता है। चाहे वह अफ्रीका के सूखे से प्रभावित बच्चे की आँखों में छिपा दर्द हो, या हिमालय की बर्फीली चोटियों का सौंदर्य, ये तस्वीरें हर दिल तक पहुँचती हैं। 2023 में, नेशनल जियोग्राफिक की एक तस्वीर, जिसमें एक ध्रुवीय भालू पिघलते ग्लेशियर पर बैठा था, ने जलवायु परिवर्तन पर वैश्विक चर्चा को नई दिशा दी। यह तस्वीर न केवल सुंदर थी, बल्कि पर्यावरण संरक्षण की तात्कालिकता को भी रेखांकित करती थी।

फोटोग्राफी कला का एक ऐसा रूप है जो रचनात्मकता को असीमित आकाश देता है। लाइट, शैडो, और कोणों का खेल किसी तस्वीर को सामान्य से असाधारण बना देता है। भारत में, रघु राय जैसे फोटोग्राफरों ने अपनी तस्वीरों के जरिए देश की आत्मा को कैद किया। उनकी 1984 की भोपाल गैस त्रासदी की तस्वीरें आज भी मानवता को झकझोर देती हैं। वहीं, सोशल मीडिया के युग में इंस्टाग्राम और पिनटेरेस्ट जैसे प्लेटफॉर्म ने युवा फोटोग्राफरों को अपनी कला को दुनिया तक पहुँचाने का मौका दिया है। 2024 में, भारत में 50 लाख से अधिक लोग फोटोग्राफी को अपने पेशे या शौक के रूप में अपना चुके हैं, जो इसकी बढ़ती लोकप्रियता को दर्शाता है।

फोटोग्राफी सामाजिक बदलाव का भी एक शक्तिशाली हथियार है। हाल के वर्षों में, भारत में किसान आंदोलन (2020-21) की तस्वीरों ने दुनिया का ध्यान खींचा, जिससे सरकार और समाज को उनकी माँगों पर विचार करने के लिए मजबूर होना पड़ा। इसी तरह, जलवायु परिवर्तन, लैंगिक समानता और मानवाधिकार जैसे मुद्दों पर तस्वीरें जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। विश्व फोटोग्राफी दिवस हमें यह सिखाता है कि कैमरा केवल सौंदर्य को कैद करने का साधन नहीं, बल्कि समाज को आलोड़ित करने और बेहतर बनाने का औजार भी है।

विश्व फोटोग्राफी दिवस हमें उस शक्ति की याद दिलाता है जो एक साधारण क्लिक में छिपी है। यह हमें सिखाता है कि फोटोग्राफी केवल तकनीक या कला नहीं, बल्कि मानवता का दर्पण है। यह हमें अपने आसपास की दुनिया को नए सिरे से देखने, उसकी सुंदरता को सहेजने और उसके दर्द को समझने की प्रेरणा देता है। हर तस्वीर एक कहानी है, और हर कहानी के पीछे एक फोटोग्राफर की नजर है जो दुनिया को बदल सकती है। इस 19 अगस्त को, जब हम कैमरे के लेंस से दुनिया को देखें, तो यह संकल्प लें कि हमारी तस्वीरें न केवल सुंदर होंगी, बल्कि सत्य, संवेदनशीलता और बदलाव का प्रतीक भी बनेंगी।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी

"कार्यस्थल पर मर्यादा ही असली शिक्षा" सुरक्षित कैंपस, सम्मानजनक कार्यस्थल

-डॉ. प्रियंका सौरभ

शिक्षण संस्थान केवल पढ़ाई-लिखाई की जगह नहीं होते, बल्कि समाज का आईना और भविष्य का निर्माण स्थल होते हैं। यहां का वातावरण सीधे तौर पर बच्चों की सोच, शिक्षकों की प्रेरणा और पूरे संस्थान की प्रतिष्ठा को प्रभावित करता है। एक स्वस्थ और सम्मानजनक कार्यस्थल कोई विलासिता नहीं, बल्कि बुनियादी आवश्यकता है। विशेष रूप से महिला शिक्षिकाओं और महिला कर्मचारियों के लिए यह सुनिश्चित करना कि वे अपने कार्यस्थल पर सुरक्षित और सम्मानित महसूस करें, किसी भी संस्थान की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।

हाल के वर्षों में कई घटनाएं सामने आई हैं, जहां महिला शिक्षिकाओं ने अपने ही सहयोगियों या वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा किए गए अनुचित व्यवहार, अशोभनीय संदेश और निजी तौर पर अनुचित हरकतों की शिकायत की है। देशभर से समय-समय पर ऐसी खबरें आती रही हैं—कभी खाली पीरियड में एकांत में लंबी बातचीत, कभी व्यक्तिगत नंबर पर अनावश्यक और निजी संदेश, कभी नज़र और शब्दों से अपमानजनक संकेत, तो कभी काम में मदद या पदोन्नति के बदले अनुचित मांग। ये सब केवल व्यक्तिगत आचरण की गड़बड़ी नहीं हैं, बल्कि कार्यस्थल की गरिमा और सुरक्षा को तोड़ने वाली गंभीर प्रवृत्तियां हैं।

ऐसी घटनाएं केवल एक महिला के मानसिक स्वास्थ्य को चोट नहीं पहुंचातीं, बल्कि पूरे वातावरण को विषैला बना देती हैं। असुरक्षा का भाव महिला शिक्षिकाओं के आत्मविश्वास को कमजोर करता है। वे हमेशा सतर्क और तनावग्रस्त रहती हैं, जिससे उनका ध्यान पढ़ाई से भटकता है। बार-बार अपमानजनक स्थिति का सामना करने से उनका आत्मसम्मान टूटने लगता है। कई महिलाएं ऐसे माहौल से बचने के लिए नौकरी छोड़ देती हैं या स्थानांतरण की मांग करती हैं। इसका असर छात्रों पर भी पड़ता है, क्योंकि असुरक्षित और असंतुष्ट शिक्षक पूरी ऊर्जा और सकारात्मकता के साथ पढ़ाने में सक्षम नहीं रहते।

महिलाओं की कार्यस्थल पर सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए भारत में यौन उत्पीड़न (कार्यस्थल पर) अधिनियम, 2013 यानी ₹पॉश अधिनियम₹ लागू है। इसके तहत प्रत्येक संस्थान में आंतरिक शिकायत समिति का गठन अनिवार्य है, जिसकी अध्यक्ष महिला हो और आधे से अधिक सदस्य महिलाएं हों। शिकायत दर्ज होने पर सात कार्य दिवस में प्रारंभिक सुनवाई और नब्बे दिनों में जांच पूरी करनी होती है। दोषी पाए जाने पर प्रशासनिक और अनुशासनात्मक कार्रवाई की जा सकती है। शिकायतकर्ता के साथ किसी भी प्रकार के प्रतिशोध को रोकना भी संस्थान की जिम्मेदारी है। दुर्भाग्य से, अनेक स्थानों पर यह समिति केवल कागजों में ही सीमित रहती है और शिकायतें या तो दबा दी जाती हैं या पीड़ित को चुप करा दिया जाता है।

समाधान केवल सज़ा देने में नहीं, बल्कि रोकथाम में है। इसके लिए कुछ बुनियादी कदम हर शैक्षणिक संस्थान में तुरंत लागू किए जाने चाहिए। महिला शिक्षिकाओं के लिए अलग और सुरक्षित स्टाफ रूम होना चाहिए, ताकि वे अपने कार्य से जुड़ी चर्चाएं और आवश्यक बातचीत आराम से कर सकें। महिला कर्मचारियों और छात्राओं के लिए अलग, स्वच्छ और सुरक्षित शौचालय की व्यवस्था हो। परिसर के प्रमुख स्थानों, गलियारों, प्रवेश-द्वारों, खेल के मैदान और कॉमन एरिया में उच्च गुणवत्ता वाले कैमरे लगाए जाएं और वे हमेशा सक्रिय रहें। फुटेज को कम से कम नब्बे दिनों तक सुरक्षित रखा जाए और केवल अधिकृत व्यक्तियों को ही उसकी पहुंच हो।

खाली पीरियड में महिला और पुरुष शिक्षक अपने-अपने स्टाफ रूम में ही रहें। बिना किसी औपचारिक कार्य के, एकांत में लंबे समय तक बैठना या बातचीत करना प्रतिबंधित हो। शिक्षकों और सहकर्मियों के बीच निजी संदेश केवल कार्य संबंधी हों और वह भी कार्य समय में ही भेजे जाएं। देर रात या गैर-जरूरी चैटिंग पूरी तरह वर्जित हो, विशेषकर जब वह विपरीत लिंग के बीच हो। प्रत्येक सत्र की शुरुआत में कार्यस्थल पर आचरण और कानून के बारे में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। इसमें सभी शिक्षक, गैर-शिक्षण कर्मचारी और वरिष्ठ छात्रों को शामिल किया जाए, ताकि सभी को यह समझ में आए कि कार्यस्थल पर सम्मान और मर्यादा कैसे बनाए रखी जाती है।

संस्थान में ऐसा गोपनीय तंत्र हो जहां पीड़ित बिना डर और शर्म के शिकायत दर्ज करा सके। यह ऑनलाइन पोर्टल, सीलबंद शिकायत बॉक्स या हेल्पलाइन नंबर के रूप में हो सकता है। शिकायत आने पर तुरंत जांच हो, आरोपी और पीड़ित को अलग किया जाए और दोषी पाए जाने पर बिना देरी कड़ी कार्रवाई की जाए। शिकायतकर्ता की गोपनीयता की रक्षा संस्थान की सर्वोच्च जिम्मेदारी होनी चाहिए।

महिला सुरक्षा केवल कानूनी या प्रशासनिक मामला नहीं है, यह सामाजिक सोच का भी मुद्दा है। हमें अपने बच्चों को यह सिखाना होगा कि कार्यस्थल पर सम्मान, मर्यादा और सीमाएं क्या होती हैं। स्कूलों में लैंगिक संवेदनशीलता और आत्मसम्मान पर आधारित विशेष कक्षाएं शुरू की जानी चाहिएं। समाज को यह समझना होगा कि महिला सुरक्षा किसी एक वर्ग का मुद्दा नहीं, बल्कि पूरे समाज और देश की गरिमा का प्रश्न है।

सुरक्षित कैंपस और सम्मानजनक कार्यस्थल कोई आदर्शवादी कल्पना नहीं, बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता और संस्थान की विश्वसनीयता का आधार है। जिस स्थान पर महिलाएं खुद को सुरक्षित न महसूस करें, वहां शिक्षा का वातावरण कभी भी स्वस्थ नहीं हो सकता। यह केवल महिला का मुद्दा नहीं, बल्कि हर उस व्यक्ति का मुद्दा है जो अपने कार्यस्थल को गरिमा और मर्यादा से भरपूर देखना चाहता है।

अगर हम अब भी चुप रहे तो अगली घटना का इंतज़ार करना पड़ेगा और तब तक किसी का आत्मविश्वास, किसी का करियर और किसी की ज़िंदगी बर्बाद हो चुकी होगी। अब समय है चुप्पी तोड़ने का—नियम बनाने का, उन्हें कड़ाई से लागू करने का, और हर शैक्षणिक संस्थान को सचमुच सुरक्षित और सम्मानजनक कार्यस्थल बनाने का। यह केवल प्रशासन की नहीं, बल्कि हर शिक्षक, हर कर्मचारी, हर छात्र और पूरे समाज की जिम्मेदारी है। तभी हम आने वाली पीढ़ी को न केवल किताबों का ज्ञान, बल्कि जीवन की सबसे बड़ी सीख—सम्मान और सुरक्षा—भी दे पाएंगे।

अज्ञात नायक होते हैं मानवीय कार्यकर्ता (19 अगस्त विश्व मानवतावादी दिवस पर विशेष आलेख)

प्रत्येक वर्ष 19 अगस्त को विश्व मानवतावादी दिवस (World Humanitarian Day) मनाया जाता है।पाठकों को बताता चलूं कि यह दिन मानवीय सहायता कर्मियों और आपदा, युद्ध व संकट की घड़ी में जान बचाने वालों की याद में मनाया जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह दिन हमें उन लोगों की स्मृति दिलाता है, जिन्होंने विभिन्न मानवीय संकटों के दौरान अपनी जान गंवाई या मानवीय उद्देश्यों के लिए दूसरों की मदद करते हुए अपनी जान जोखिम में डाली। आंकड़े बताते हैं कि 2024 में, 816 मानवीय कार्यकर्ता हमलों का शिकार हुए तथा जिनमें 383 कार्यकर्ता मारे गए। यह 2018 में दर्ज हमलों (410) की संख्या से लगभग दोगुना और उस वर्ष हुई मौतों से तीन गुना अधिक है। वास्तव में, यह दिवस लोगों में 'मानवता' की भावनाओं को जाग्रत करता है। हमें यह याद रखना चाहिए कि किसी विपदा, आपदा या जोखिम में एक मानव ही दूसरे मानव के काम आता है। मानवता एक व्यापक शब्द है,जिसे परिभाषित करना आसान नहीं है।याद रखिए कि किसी विपत्ति, आपदा, जोखिम की स्थिति में मदद के लिए आंखें मानव समाज को ही ढूंढती हैं।गौरतलब है कि भारत में मानवता के ऐसे कई प्रतिबिंब है, जो आज भले ही भौतिक रूप से हमारे बीच नहीं हो, लेकिन आज भी वे गर्व के साथ याद किए जाते हैं। उनमें प्रमुखता से मदर टेरेसा और महात्मा गांधी का नाम आता हैं। आज एशिया और अफ्रीका में बहुत से क्षेत्र ऐसे हैं, जहां भुखमरी एक बहुत बड़ी समस्या है, लोग कुपोषण और बीमारियों के शिकार हैं, ऐसे हिस्सों में मानव समाज की बहुत जरूरत है,जो मानवता को भुखमरी जैसी समस्या से मदद के जरिए उबार सकते हैं।पाठक जानते हैं कि कोविड-19 महामारी के दौरान पूरा विश्व एक दूसरे के साथ खड़ा नजर आ रहा था। इस दौरान न जानें कितने डॉक्टर्स, पुलिसकर्मी और मीडियाकर्मी और फ्रंटलाइन वर्कर्स ने खुद की जान को जोखिम में डालकर अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए दुनिया से अलविदा कह दिया था और दुनियाभर को इंसानियत से परिचय कराया। यही वास्तव में सच्ची मानवता थी।भूखे को रोटी देना,प्यासे को पानी देना, वस्त्रहीन लोगों को वस्त्र उपलब्ध कराना, बेघर को आसरा प्रदान करना, गरीबों को शिक्षित करना, अंधे, विकलांग, बीमार व्यक्ति की सहायता करना,बेरोजगारों को रोजगार देना,पशु-पक्षी, मूक प्राणियों को अभयदान,गरीब, कमजोर लोगों की मदद तथा दुःखी और निराश लोगों को हिम्मत देना सच्चा धर्म,सच्ची ईश्वर भक्ति व सच्ची मानवता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि विश्व मानवतावादी दिवस इन पेशेवरों के साहस, प्रतिबद्धता और योगदान को, विशेष रूप से उन लोगों को जिन्होंने सर्वोच्च बलिदान दिया है, सम्मानित करता है। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि इस दिन से जुड़ी कुछ विशेष और कम ज्ञात बातें भी हैं, जिनके बारे में ज़्यादातर लोग नहीं जानते हैं। गौरतलब है कि इस दिवस का इतिहास संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय पर हमले से जुड़ा है।दरअसल, 19 अगस्त 2003 को बगदाद (इराक़) में यूएन मुख्यालय पर एक बम हमला हुआ था, और इसमें 22 लोग मारे गए थे, जिनमें यूएन के शीर्ष मानवीय राजनयिक सर्जियो विएरा डी मेलो भी शामिल थे और इसी घटना की स्मृति में साल 2008 से यह दिन मनाया जाने लगा। यहां पाठकों को बताता चलूं कि इस दिन का कोई स्थायी नारा नहीं है।हर साल एक नई वैश्विक थीम इस दिन के लिए तय की जाती है। आज दुनिया भर में अनेक मानवीय चुनौतियां विद्यमान हैं। मसलन, जलवायु संकट, शरणार्थी, युद्ध, भुखमरी आदि। इन सभी चुनौतियों पर ध्यान खींचने के लिए नया कैम्पेन और थीम तय की जाती है। उल्लेखनीय है कि विश्व मानवतावादी दिवस 2024 की थीम 'मानवता के लिए कार्य करें' रखी गई थी और इस साल यानी कि वर्ष 2025 में यह थीम 'वैश्विक एकजुटता को मजबूत करना और स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाना' रखी गई है। वास्तव में, यह थीम मानवीय सहायता के पीछे एक सरल विचार को दर्शाती है कि 'अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को मानवीय संकटों से प्रभावित लोगों की सहायता के लिए एक साथ आना चाहिए , लेकिन ऐसा इस तरह से किया जाना चाहिए कि स्थानीय समुदायों के साथ न केवल लाभार्थियों के रूप में काम किया जाए, बल्कि सक्रिय प्रतिभागियों और नेताओं के रूप में काम किया जाए जो अपने भविष्य को स्वयं आकार दे सकें।' बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि मानवीय कार्यकर्ता अक्सर अज्ञात नायक होते हैं।बड़ी आपदाओं में डॉक्टर, नर्स, स्वयंसेवक, राहतकर्मी और स्थानीय लोग अपनी जान जोखिम में डालते हैं, परंतु यह विडंबना ही कही जा सकती है कि दुनिया के अधिकांश लोग उनके नाम तक नहीं जानते। वास्तव में, यह दिन उन्हीं की गुमनाम बहादुरी को याद करता है।हाल के वर्षों में यह दिन सिर्फ युद्ध-पीड़ित क्षेत्रों पर ही नहीं, बल्कि क्लाइमेट चेंज और प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़, भूस्खलन, भूकंप, अनावृष्टि, भू-धंसाव, मौसमी आपात स्थितियों के साथ ही साथ भुखमरी, सुरक्षा आदि पर भी फोकस करने लगा है। यूएन और विश्वभर में अनेक गैर सरकारी संगठन इस दिन पर दुनियाभर में सोशल मीडिया कैम्पेन चलाते हैं। उल्लेखनीय है कि 2014 से यह इंटरनेट पर मानवीय मुद्दों के लिए सबसे बड़ा वैश्विक ऑनलाइन अभियान माना जाता है। केवल बड़े एनजीओ या यूएन कर्मचारी ही नहीं, बल्कि वे स्थानीय लोग भी इस दिन सम्मानित होते हैं, जो बिना किसी नाम-शोहरत के ज़िंदगियाँ बचाते हैं। बहरहाल, यहां पाठकों को बताता चलूं कि भारत ने विश्व भर में हमेशा-हमेशा से मानवीय सहायता में बड़ी भूमिका निभाई है—फिर चाहे नेपाल वह भूकंप हो, श्रीलंका सुनामी, या अफ्रीका में दवा और अनाज की मदद। गौरतलब है कि भारत ने कोरोना महामारी के दौरान अनेक देशों को दवाएं भेजी। इस दौरान भारत ने दवाओं की गुणवात्ता से किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया और कीमतों में भी वृद्धि नहीं की। भारत ने वैक्सीन मैत्री अभियान के अंतर्गत 96 देशों को 162.9 मिलियन (16.29 करोड़) कोविड-19 वैक्सीन की खुराकें उपलब्ध कराई। इनमें से 14.3 मिलियन (1.43 करोड़) वैक्सीन गिफ्ट की गईं, जबकि बाकी वाणिज्यिक और कोवैक्स माध्यम से भेजी गईं। वर्ष 2025 के दौरान भारत द्वारा(आपरेशन ब्रह्मा) म्यांमार के भूकंप में 118 सदस्यीय फील्ड अस्पताल यूनिट और 60 टन राहत सामग्री भेजी गई। वर्ष 2023 में आपरेशन दोस्त के तहत तुर्की और सीरिया में भूकंप पीड़ितों को एनडीआरएफ, फील्ड अस्पताल, मेडिकल सप्लाई, ड्रोन आदि भेजे। वर्ष 2022 में आपरेशन गंगा के तहत यूक्रेन युद्ध के दौरान भारतीयों का विस्थापन एवं चिकित्सा आपूर्ति की गई। इतना ही नहीं, पाकिस्तान-इज़राइल संघर्ष के दौरान 2023 में पैलेस्टीन को दो ट्रांच में सहायता भेजी गई, जिनमें क्रमशः 22 अक्टूबर को 6.5 टन चिकित्सा सामग्री प्लस 32 टन राहत सामग्री, 19 नवंबर को 10 टन चिकित्सा सामग्री प्लस 22 टन राहत सामग्री तथा दवाइयां, मेडिकल उपकरण, तंबू, पलंग, जल शुद्धिकरण आदि शामिल थे। इतना ही नहीं, वर्ष 2024 के दौरान अफ्रीकी देश जाम्बिया को हैजा के प्रकोप के जवाब में करीब 3.5 टन दवाइयां, क्लोरीन टेबलेट्स, जल शुद्धिकरण सामग्री और ओआरएस भेजी गईं, यह अपने आप में मानवता की बहुत बड़ी मिसाल थी। पाठकों को बताता चलूं कि भारतीय सेना की 'ऑपरेशन राहत' जैसी मानवीय पहलकदमियां विश्व स्तर पर सराही गई हैं। अंत में यही कहूंगा कि इस दिन का असली संदेश यही है कि 'वसुधैव कुटुम्बकम्', यानी कि 'यह पृथ्वी एक परिवार है।' सच तो यह है कि मानवता सबसे ऊपर है — धर्म, राजनीति, सीमा या भाषा से भी बड़ी। हमारे यहां तो संस्कृत में बड़े ही खूबसूरत शब्दों में कहा भी गया है कि-'परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः, परोपकाराय वहन्ति नद्यः, परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकारार्थमिदं शरीरम्।' तात्पर्य यह है कि वृक्ष दूसरों के लिए फल देते हैं, नदियाँ दूसरों के लिए बहती हैं, गायें दूसरों के लिए दूध देती हैं, और यह शरीर भी दूसरों की भलाई के लिए ही है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट

कमिश्नरेट पुलिस, अमृतसर द्वारा जीरो टॉलरेंस नीति के तहत नशा तस्करों और अपराधियों के खिलाफ चलाया गया विशेष अभियान

अमृतसर / 18 अगस्त (साहिल बेरी)

कमिश्नरेट पुलिस, अमृतसर की ओर से Zero Tolerance Policy के अंतर्गत नशा तस्करों, असामाजिक तत्वों पर शिकंजा कसने और कानून व्यवस्था व अमन-शांति बनाए रखने के लिए Cordon & Search Operation (CASO) चलाया गया।

यह ऑपरेशन पुलिस आयुक्त श्री गुरप्रीत सिंह भुल्लर (IPS) के निर्देशों और डीसीपी लॉ एंड ऑर्डर श्री आलम विजय सिंह (PPS) की देखरेख में अमृतसर के तीनों जोनों के विभिन्न संवेदनशील इलाकों में 18 अगस्त 2025 को संचालित किया गया।

इस दौरान एडीसीपी, एसीपी, थाना प्रभारी, चौकी इंचार्ज, स्पेशल SWAT टीमें और भारी पुलिस बल ने संयुक्त रूप से तलाशी अभियान चलाया।

तलाशी अभियान के मुख्य क्षेत्र:

गेट हकीमां, अन्नगढ़, फतेह सिंह कॉलोनी, गांव सुल्तानविंड, 88 फुट रोड, यासीन रोड (नज़दीक NM सिनेमा), हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, गुमटाला, गुरु की वडाली, बांसा वाला बाज़ार, एकता नगर, गुरु तेग बहादुर नगर आदि इलाकों में नशा तस्करों, अपराधियों व जमानत पर बाहर आए अपराधियों के घरों की तलाशी लेकर उनकी गतिविधियों की गहन जांच की गई।

इस दौरान कमिश्नरेट पुलिस द्वारा इलाकाई लोगों से संवाद किया गया और अपील की गई कि यदि कोई व्यक्ति नशा तस्करी या अन्य गैर-कानूनी गतिविधि में शामिल हो, तो उसकी सूचना तुरंत नज़दीकी पुलिस थाने या 112 नंबर पर दी जाए। सूचना देने वाले का नाम-पता पूरी तरह गोपनीय रखा जाएगा।

तलाशी अभियान की उपलब्धियां (18 अगस्त 2025):

NDPS एक्ट के तहत: 12 मुकदमे दर्ज, 14 आरोपी काबू, 234 ग्राम हेरोइन, 6720 ड्रग मनी, 03 लाइटर व सिल्वर पेपर बरामद।

Excise Act: 03 मुकदमे दर्ज, 03 आरोपी काबू, 110 बोतल अवैध शराब बरामद।

BNS Act: चोरी की 01 एक्टिवा स्कूटी बरामद।

BNSSS Act: 12 अपराधियों पर रोकथाम कार्रवाई।

वर्ष 2025 (01 जनवरी से 17 अगस्त 2025) की उपलब्धियां:

1. NDPS Act के तहत:

863 मुकदमे दर्ज, 1655 नशा तस्कर गिरफ्तार।

बरामद: 190 किलो 965 ग्राम हेरोइन, 13 किलो 582 ग्राम अफीम, 372 ग्राम आईस ड्रग, 9 किलो गांजा, 15 किलो 305 ग्राम चरस, 112

ग्राम कोकीन, 325 किलो 577 ग्राम नशीला पाउडर, 25 किलो भूकी, 1550 नशीले इंजेक्शन, 3,77,798 नशीली गोलियां/कैप्सूल, 2,68,61,665 ड्रग/हवाला मनी और 81 वाहन।

2. आर्म्स एक्ट:

48 मुकदमे दर्ज, 99 आरोपी गिरफ्तार।

बरामद: 113 अवैध हथियार (पिस्टल, रिवॉल्वर, गन), 105 मैगज़ीन, 243 कारतूस और 10,50,000 हवाला मनी।

3. हवाला ऑपरेटर:

22 हवाला ऑपरेटर गिरफ्तार, जिनमें 02 हथियार तस्कर शामिल।

बरामद: 1,73,59,000 हवाला मनी।

4. CASO अभियान:

अब तक 77 तलाशी अभियान चलाए गए।

5. ड्रग मनी से अर्जित प्रॉपर्टी फ्रीज़ (68-F NDPS Act):

3,41,74,941 मूल्य की 08 प्रॉपर्टी का प्रस्ताव भेजा गया।

इनमें से 05 प्रस्ताव कंफर्म, 1,27,78,093 की संपत्ति फ्रीज़।

6. De-Addiction व Rehabilitation Centre:

2178 व्यक्ति भर्ती, OOAT सेंटर में 1559, सेक्शन 64-A NDPS के तहत 144 व्यक्ति प्रोसीड।

7. अवैध संपत्ति का ध्वस्तीकरण:

11 प्रॉपर्टी ध्वस्त।

8. NDPS एक्ट के तहत PO गिरफ्तार:

32।

9. एंटी-ड्रग जागरूकता अभियान:

87 संप्रक मीटिंग, 222 जागरूकता शिविर/सेमिनार।

10. गैर-कानूनी दवाइयों पर कार्रवाई:

04 मुकदमे दर्ज, 04 आरोपी गिरफ्तार।

बरामद: 1,48,974 नशीले कैप्सूल, 1,52,020 गोलियां, 28 इंजेक्शन और 820 ट्रामाडोल गोलियां।

संबंधित फार्मा कंपनी का संचालक देहरादून से गिरफ्तार।

कमिश्नरेट पुलिस, अमृतसर जनता की सुरक्षा और शहर में अमन-शांति बनाए रखने के लिए 24 घंटे तत्पर है।

योग्य लाभुक खाद्य आपूर्ति योजना से वंचित न हों : अलका तिवारी, मुख्य सचिव

भादों महिने में झारखंड के सभी उपायुक्तों साफ निर्देश

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, पथरीली जमीन पर बसा झारखंड में भादों मास गरीबों के लाए कष्टदायक होता है । आजादी के लगभग 79 वर्ष के बाद भी विशेषकर उन दुर दराज जंगली व पहाड़ी ग्रामीण, अविकसित इलाकों मे बसे लोगों के लिए ।सोमवार को मुख्य सचिव अलका तिवारी ने राज्य के तमाम उपायुक्तों को निर्देश दिया है कि खाद्य आपूर्ति और सार्वजनिक वितरण व्यवस्था में यह सुनिश्चित करें कि कोई योग्य लाभुक उससे वंचित नहीं रहे। वहीं मृत लाभुकों को चिह्नित कर उन्हें प्राथमिकता के स्तर पर हटाये, ताकि नये लाभुक जोड़े जा सके। मुख्य सचिव ने कहा कि इस प्रक्रिया में इस पर फोकस करें कि डाटा में कोई त्रुटि नहीं रहे। लाभुकों के केवाईसी पूर्ण हों। इसमें कोई समस्या हो, तो उसका परीक्षण करें कि कहां दिक्कत है और उसका समयबद्ध तरीके से निपटारा करें। हर माह इसका भौतिक निरीक्षण करें और रिकार्ड व बुक कीपिंग अपटूडेट रखें। वह सोमवार को खाद्य आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन में आवश्यक सुधार को लेकर अपनी अध्यक्षता में समीक्षा कर रही थीं।

मुख्य सचिव ने राज्य के निर्धन लोगों के बीच साल में दो बार धोती-साड़ी वितरण को लेकर निर्देश दिया कि इसमें तेजी लायें। उड़नदस्ता टीम बना कर वितरण की जांच करें और यह सुनिश्चित करें कि कहीं कोई अनियमितता नहीं हो। उन्होंने सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के लाभुकों के जागरूकता पर बल देते हुए निर्देश दिया कि यह सुनिश्चित होना चाहिये कि लाभुकों को योजना की मूलभूत जानकारी रहे। इसके लिए होर्डिंग, फ्लैक्स, नुक्कड़ नाटक जैसे हर सक्षम माध्यम का उपयोग करें। उसमें स्थानीय भाषा का प्रयोग करें। लाभुकों को यह हर हाल में पता होना चाहिये कि उन्हें क्या मिलना है, कितना मिलना है, कहां मिलना है और कब मिलना है।

मुख्य सचिव ने राज्य के तमाम गोदामों को समयबद्ध तरीके से कार्यशील करने पर बल देते हुए कहा कि थोड़े प्रयास से सभी गोदामों को कार्यशील बनाया जा सकता है। समीक्षा में पाया गया कि मामूली कमियों के कारण अनेक गोदाम उपयोग में नहीं हैं। इसे देखते हुए निर्देश दिया गया कि उपायुक्त अपने स्तर से इसमें रुचि लेकर गोदामों को उपयोगी बनाना सुनिश्चित करायें। इसके लिए 20 सितंबर तक की टाइम लाइन तय की गई। उन्होंने कहा कि दिसंबर से धान खरीद की प्रक्रिया शुरू होगी। धान खरीद और उसके संरक्षण को सुगम बनाना है और भुगतान भी त्वरित तरीके से करना है, इसलिए समय रहते कमियों को दूर कर लें। गोदामों के रख-रखाव के साथ वहां मूलभूत जरूरतों को भी पूरा कर लें।इसे लेकर मुख्य सचिव ने निर्देश दिया कि सहकारिता विभाग के गोदामों का आकलन कर उसका भी उपयोग करें। स्वीकृत नये गोदामों के निर्माण में तेजी लाने पर भी बल दिया गया। मुख्य सचिव ने निर्देशों के अनुपालन में फंड की जरूरत होने पर उसका प्रस्ताव विभाग को देने को कहा। उन्होंने कहा कि ससमय खाद्यान्न वितरण उसके ससमय उठाव पर निर्भर करता है, इसलिए उठाव पर पैनी नजर रखें। बताया गया कि इसपर नजर रखने के लिए सेंट्रल कंट्रोल एंड कमांड सेंटर बनाया गया है।

मुख्य सचिव की अध्यक्षता में संपन्न समीक्षा के दौरान खाद्य सचिव उमाशंकर सिंह और विभाग के अन्य अधिकारी मौजूद थे। वहीं राज्य के सभी उपायुक्त ऑनलाइन माध्यम से जुड़े थे।

संबलपुर में केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना होगा

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भुवनेश्वर-: उपमुख्यमंत्री एवं कृषि एवं किसान सशक्तिकरण, ऊर्जा मंत्री श्री कनक वर्धन सिंह देव की अध्यक्षता में आज लोक सेवा भवन में केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के प्रस्ताव पर एक बैठक आयोजित की गई।

बैठक में केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय अधिनियम, 1992 के अनुसार संबलपुर में एक केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय खोलने के प्रस्ताव पर चर्चा की गई। इससे कृषि और संबद्ध विज्ञानों में वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए स्नातक और स्नातकोत्तर तैयार करने में मदद मिलेगी और इस क्षेत्र में उत्पादकता बढ़ाने और लाभदायक कृषि प्रणालियों को विकसित करने में मदद मिलेगी।

उपमुख्यमंत्री श्री सिंह देव ने कहा कि प्रस्तावित केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय ओडिशा के लिए एक क्रांतिकारी बदलाव साबित होगा - यह कृषि अनुसंधान को आगे बढ़ाएगा, किसानों को सशक्त बनाएगा और टिकाऊ कृषि पद्धतियों में नवाचार को बढ़ावा देगा। यह निर्णय कृषि और संबद्ध व्यवसायों को लाभदायक उद्यमों में बदलकर लोगों के लिए खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने में लाभकारी साबित होगा।

बैठक में कृषि एवं किसान सशक्तिकरण विभाग के प्रधान सचिव डॉ. अरविंद कुमार पाढ़ी, वित्त विभाग के प्रधान सचिव श्री संजीव कुमार मिश्रा, मत्स्य पालन एवं पशुधन विकास विभाग के प्रधान सचिव श्री सुरेश कुमार बसिठा और ओडिशा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय की कुलपति डॉ. पार्वती कुमार रावल उपस्थित थे, जिन्होंने केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के प्रस्ताव पर कई महत्वपूर्ण राय प्रस्तुत की।

पीसीसी अध्यक्ष भक्तचरण दास और वरिष्ठ बीजद विधायक रणेन्द्र प्रताप स्वैन (राजा) के साथ भी अस्पताल परिसर में दुर्व्यवहार किया

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भुबनेश्वर : विपक्षी दल के नेता और पूर्व मुख्यमंत्री नवीन पटनायक के गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती होने की खबर मिलने के बाद, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष भक्तचरण दास अपने विधायक पुत्र सागर दास के साथ मानवीय दृष्टिकोण से उनका हालचाल जानने पहुँचे। उन्होंने मेडिकल टीम से अनुरोध किया कि वे कुछ देर के लिए नवीन को शीशे से देखें, लेकिन उन्होंने असमर्थता जताई।वहां मौजूद पांडियन, भक्त की डॉक्टरों से हुई बातचीत को पचा नहीं पाए।

उन्होंने सीधे भक्त पर निशाना साधते हुए पूछा, 'आप डॉक्टरों को परेशान और दबाव क्यों बना रहे हैं?' इस पर भक्त दास ने कहा, 'नवीन पटनायक राज्य की संपत्ति हैं, उन्हें अपना स्वास्थ्य जानने का अधिकार है' और पांडियन से कहा, 'मैं आपको तब से जानता हूँ जब आप मेरे ज़िले में सब-कलेक्टर थे।' यह बात पांडियन को नागवार गुज़री। जवाब में पांडियन ने उन पर तंज कसते हुए कहा कि आप तो तब भी चुनाव हार गए थे। पांडियन ने प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष श्री दास की बेहद अभद्र और अपमानजनक तरीके से आलोचना की थी। एक राष्ट्रीय राजनीतिक दल के प्रदेश अध्यक्ष के साथ पांडियन इस तरह का दुर्व्यवहार कैसे कर सकते हैं और उनकी पार्टी ने यह सब कैसे पचा लिया, यह अब सार्वजनिक चर्चा का विषय बन गया है।

'मैं गिरा हूँ, पार्टी से बाहर नहीं। अगर यहाँ राजनीति करोगे तो एक फ़ोन पर पार्टी से निकाल दूँगा।' कुछ इसी अंदाज़ में बीजेडी के अघोषित सर्वेसर्वा वीके पांडियन ने पार्टी के 70-80 से ज़्यादा अग्रिम पंक्ति के नेताओं को धमकाया। और वो नेता भी जो राजधानी भुवनेश्वर के सैम अल्टीमेट मेडिकेयर अस्पताल में अपने प्रिय नेता नवीन पटनायक का हालचाल जानने गए थे।इतना ही नहीं, विश्वसनीय सूत्रों ने बताया है कि पांडियन ने अस्पताल परिसर में पीसीसी अध्यक्ष भक्तचरण दास और वरिष्ठ बीजद विधायक रणेंद्र प्रताप स्वैन (राजा) को भी गालियाँ देने में संकोच नहीं किया। यह भी पता चला है कि राज्य के स्वास्थ्य मंत्री मुकेश महालिंग और कानून मंत्री पृथ्वीराज हरिचंदन, जो मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी के निर्देश पर नवीन से मिलने अस्पताल गए थे, को भी पांडियन के कहने पर उनसे मिलने का मौका नहीं दिया गया।

पांडियन ने वरिष्ठ बीजद नेता और पूर्व मंत्री राजा स्वैन पर भी तीखी टिप्पणियाँ कीं। राजा की भूमिका इतनी गंभीर थी कि वे अस्पताल पहुँच गए और अस्पताल से नवीन के स्वास्थ्य के बारे में तुरंत बुलेटिन जारी करने की माँग की। उन्होंने पांडियन की पत्नी सुजाता से भी पूछा, 'आपने हमारे नेता, जो दो दिनों से बीमार हैं, को अस्पताल में भर्ती क्यों नहीं कराया?' पांडियन ने अपनी पत्नी से इस तरह सवाल करना हल्के में नहीं लिया और नीचे आकर पार्टी नेताओं को खुलेआम धमकी दी।

गोड्डा पुलिस द्वारा 69 ग्राम ब्राउन शुगर जप्त , एक अभियुक्त को भेजा गया जेल

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

गोड्डा, जमशेदपुर /आदित्यपुर (सरायकेला), रांची के बाद अब गोड्डा जिला भी मादक पदार्थ की चपेट में आ रहा है । गोड्डा जिला के पुलिस ने मादक द्रव्य के अवैध कारोबार के खिलाफ सतर्कता पूर्वक कार्रवाई करते हुए एक व्यक्ति को ब्राउन शुगर की तस्करी और खरीद-बिक्री के आरोप में गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार व्यक्ति की पहचान मिलन कुमार पंडित उर्फ अभिषेक पंडित के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपी के पास से प्लास्टिक में लपेटा हुआ कुल 69 ग्राम ब्राउन शुगर, विभिन्न कंपनियों के 10 मोबाइल फोन, और डेल ,एच पी ब्रांड के 2 लैपटॉप बरामद किए हैं यह कार्रवाई पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत की गई। 17 अगस्त को गुप्त सूचना मिली थी कि गंगटा खुर्द स्थित देवी भवन में एक व्यक्ति द्वारा ब्राउन शुगर की अवैध रूप से खरीद-बिक्री और सेवन किया जा रहा है। इस सूचना को वरीय पुलिस पदाधिकारियों के संज्ञान में लाया गया, जिसके बाद एसपी के आदेश पर अंचलाधिकारी हलधर कुमार सेठी के नेतृत्व में छापामारी दल का गठन किया गया। छापामारी टीम ने उक्त स्थल पर दबिश दी और मौके पर मिलन कुमार पंडित को गिरफ्तार किया और उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया।

विधायक अंवा प्रसाद के भाई के तीन करोड़ की संपत्ति ईडी ने किया ऐटैंच

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची। झारखंड में प्रवर्तन निदेशालय मार्च में की गयी छापेमारी के बाद अब बड़ी कार्रवाई की है। इडी ने कांग्रेस की पूर्व विधायक अंवा प्रसाद के भाई अंकित राज की लगभग तीन करोड़ की संपत्ति जब्त की है। अंकित राज, पूर्व मंत्री योगेंद्र साव के बेटे हैं। इडी का मानना है कि यह संपत्ति बालू के अवैध धंधे से कमाई गई ।इडी को जानकारी मिली थी कि अंकित राज अवैध तरीके से पैसे कमा रहे हैं। इसके बाद इडी ने पिछले साल मार्च और जुलाई में अंबा प्रसाद के हजारीबाग स्थित घर और अन्य ठिकानों पर छापेमारी की थी। इडी ने अंबा प्रसाद और उनके परिवार के सदस्यों के खिलाफ दर्ज लगभग 16 प्राथमिकियों को इसीआईआर के रूप में दर्ज किया और जांच शुरू की।

जांच में पता चला कि सोनपुर घाट का माइनिंग लाइसेंस 2019 में खत्म हो गया था। इसके बावजूद अंकित राज प्लांडू, दामोदर नदी से अवैध तरीके से बालू निकाल रहे थे। बालू के इस अवैध कारोबार से अंकित राज ने तीन करोड़ से ज्यादा की संपत्ति बनाई। अंबा प्रसाद के परिवार पर रंगदारी, जमीन पर अवैध कब्जा और कोयला कंपनियों को हड़पने जैसे आरोप भी हैं। सूत्रों के अनुसार, जब इडी की छापेमारी चल रही थी, तब अंबा के घर पर एक विदेशी लॉकर मिला था। लॉकर की चाबी मांगने पर परिवार के सदस्य इडी के अधिकारियों को नहीं दे रहे थे। तब इडी के अधिकारियों ने हजारीबाग से ताला की चाबी बनाने वाले को बुलाया। जब चाबी बनाने वाला आया तो इडी के अधिकारियों को चाबी दी गई। आलमीरा खुलने पर इडी के अधिकारी हैरान रह गए। उसमें कई जानकारियां मिली।

झारखंड डीजीपी अनुराग गुप्ता सेवा विस्तार मामले में बाबूलाल मरांडी की याचिका खारीज

केंद्र ने भी राज्य सरकार की रिटायरमेंट उम्र सीमा एवं सेवा विस्तार को कहा था गलत

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, झारखंड के पुलिस महानिदेशक अनुराग गुप्ता की नियुक्ति को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर आज सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाया ।चीफ जस्टिस बीआर गवई, जस्टिस के. विनोद चंद्रन और जस्टिस एनवी अंजरिया की पीठ ने मामले की सुनवाई की। शीर्ष अदालत ने भाजपा प्रदेश अध्यक्ष और नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी द्वारा दायर अवमानना याचिका को खारिज कर दिया । जहां अनुराग गुप्ता की तरफ से वकील कपिल सिब्बल ने आज उनका पक्ष को रखा था ।सुप्रीम कोर्ट ने फैसले में कहा कि जनहित याचिका में इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता। नियमावली को चुनौती दी गई है, उसपर पर अलग सुनवाई हो सकती है इस पर अनुराग गुप्ता को जो राहत मिली है उसपर आगे ऊंट किस कदर बैठेगा देखने वाली बात है ।

बता दें कि बाबूलाल मरांडी ने अनुराग गुप्ता को डीजीपी बनाए जाने को लेकर सुप्रीम कोर्ट में अवमानना याचिका दाखिल की थी, जबकि हाई कोर्ट में सरकार की डीजीपी नियुक्ति को लेकर बनाई गई नियमावली को चुनौती दी है।

इस सुनवाई के दौरान वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने झारखंड सरकार की ओर से पक्ष रखते हुए कहा कि डीजीपी की नियुक्ति पूरी तरह से राज्य सरकार के अधिकार क्षेत्र में आती है। अपने लोजिक में सिब्बल ने कहा कि अनुराग गुप्ता को सभी नियमों का पालन करते हुए डीजीपी बनाया गया है। तब अदालत ने सरकार की इस दलील को स्वीकार करते हुए अवमानना याचिका को खारिज कर दिया।

गौरतलब है कि बाबूलाल मरांडी ने सुप्रीम कोर्ट में अवमानना याचिका दायर कर डीजीपी अनुराग गुप्ता की नियुक्ति को चुनौती दी थी ।उस याचिका में मुख्य सचिव सहित अन्य अधिकारियों को प्रतिवादी बनाया गया था ।मरांडी का कहना था कि नियुक्ति प्रक्रिया प्रकाश सिंह बनाम केंद्र सरकार मामले में सुप्रीम कोर्ट के दिशा-निर्देशों के खिलाफ हुई है। उन्होंने आरोप लगाया कि यूपीएससी पैनल से चुने गए डीजीपी को हटाकर अनुराग गुप्ता को गलत तरीके से नियुक्त किया गया।

डीजीपी अनुराग गुप्ता की नियुक्ति को लेकर केंद्र और राज्य सरकार के बीच टकराव लगातार जारी है। अनुराग गुप्ता 30 अप्रैल को 60 वर्ष की आयु में सेवानिवृत्त होने वाले थे। राज्य सरकार ने उनके कार्यकाल के विस्तार के लिए केंद्र को पत्र भेजा, लेकिन केंद्र ने प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया। केंद्र का स्पष्ट कहना है कि गुप्ता की सेवा 30 अप्रैल को ही समाप्त हो गई। इसके बावजूद राज्य सरकार ने उन्हें डीजीपी पद पर बनाए रखा है। केंद्र सरकार ने राज्य सरकार की नियुक्ति नियमावली को नियम विरुद्ध करार देते हुए सेवा विस्तार को असंवैधानिक बताया है। लेकिन झारखंड सरकार अपने रुख पर कायम है और गुप्ता की नियुक्ति को वैध ठहरा रही है।

राजस्थान नागरिक संघ-बोइनपल्ली, हैदराबाद-सिकंदराबाद की सावन की सैर संपन्न

राजस्थान नागरिक संघ द्वारा इस बार सावन की सैर के तहत "छोटी अयोध्या" (भद्राचलम) भृमण का आयोजन रखा गया ।

कमेठी के मदन सिंह शेखावत ने मरुवेदना भेट में बताया कि इस बार सावन की सैर कार्यक्रम के तहत कमेठी परिवार के 40 सदस्यों के साथ 14 अगस्त को बोइनपल्ली स्थित वैष्णोदेवी मंदिर में पूजा अर्चना करने के उपरांत माता रानी एवं हर हर महादेव के जयकारों के साथ बस से रवाना हो के 15 अगस्त को सुबह भद्राचलम गोदावरी नदी के तट पे पहुचे तथा स्नान किया तत्पश्चात ₹श्री सीतारामचंद्र स्वामी₹ मंदिर में सभी ने दर्शन किये तथा भोजन के उपरांत वहाँ से सभी ₹पर्णसाला₹ पहुचे जो की गोदावरी तट पे स्थित बहुत ही रमणीक स्थल है कहा जाता है कि श्रीराम-लक्ष्मण जी ने बनवास का कुछ समय वहाँ व्यतीत किया था । चारो तरफ हरियाली बिखेरती पहाड़ियों एवं कल कल बहती गंगा - गोदावरी की प्राकृतिक छटा का सभी ने खूब आनंद लिया तत्पश्चात बस से रवाना हो के गाते, बजाते, नाचते झूमते वारंगल पहुँच के सभी ने डिनर का आनंद लिया तथा 16 अगस्त को सुबह वापस हैदराबाद पहुँचे । कार्यक्रम कमेठी सदस्य सुरेश शर्मा, जगदीश जांगिड़, तेजाराम जाखड़ एवं मदन सिंह शेखावत के संयोजन से हुआ जिसमे रमेश जांगिड़, कैलाश वैष्णव, लोकेश शर्मा एवं महिला सदस्यो में टीना शर्मा, सुमित्रा जांगिड़, नेहा जाखड़, सीमा जांगिड़, राजबाला वैष्णव, सरिता शर्मा एवं संजना शेखावत का विशेष सहयोग रहा ।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com

(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023